जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

epaper.rashtradoot.com

जालोर

Rashtradoot

फोनः- 226422, 226423 फैक्सः- 02973-226424 वर्षः 20 संख्याः 75 प्रभात जालोर, रविवार 22 जून, 2025 पो. रजि. /RJ/SRO/9640/2022-24 पृष्ठ 6 मूल्य 2.50 रु.

अमेरिका में जनभावना इज़रायल-ईरान युद्ध में अमेरिका के सीधे हस्तक्षेप के सख्त खिलाफ

इकॉनमिस्ट/यू गव के सर्वेक्षण के अनुसार, 60 प्रतिशत जनता अमेरिकी सेना के सीधे हस्तक्षेप के खिलाफ है, केवल 16 प्रतिशत जनता अमेरिका के हस्तक्षेप के पक्ष में है

-सुकुमार साह-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 21 जून। इज़रायल और ईरान के बीच तनाव खतरनाक स्तर तक बढ़ता जा रहा है। इधर अमेरिका में इकोनॉमिस्ट/यूगव के एक नए सर्वेक्षण में अमेरिकी जनता की स्पष्ट राय नज़र आई है, 60 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने इज़रायल-ईरान संघर्ष में अमेरिकी सैन्य हस्तक्षेप का विरोध किया है। इसके विपरीत, केवल 16 प्रतिशत लोग अमेरिकी हस्तक्षेप के पक्ष में हैं। यह परिणाम अमेरिकी जनता में युद्ध को लेकर बढ़ती उदासीनता को दर्शाता है, जो पिछले दो दशकों में मध्य पूर्व में खर्चीले सैन्य अभियानों और इस समय घरेलू राजनीति में चल रही उथल-पुथल से उपजी है।

- इराक व अफगानिस्तान में अमेरिका के हस्तक्षेप के बाद वर्षों युद्ध चला, इन युद्धों से परेशान अमेरिकावासी, अब किसी दूसरे देश में जाकर अमेरिका लड़े, इस बात से तंग आ गए हैं।
- विशेषकर ''मिडिल ईस्ट'' में वे अमेरिकी सेना का सीधा हस्तक्षेप नहीं चाहते, क्योंकि यह भावना घर कर गई है कि जब भी अमेरिका हस्तक्षेप करता है, युद्ध और लम्बा हो जाता है तथा नतीजा पूर्णतया अमेरिका के पक्ष में हो, ऐसा नहीं होता।
- अमेरिका की जनता, विशेषकर, ईरान के विरूद्ध युद्ध में उतरने के खिलाफ है। क्योंकि ईरान की ओर से ''प्रॉक्सी वॉर'' लड़ने के लिए कई जगह के लोग तैयार हैं, जैसे हिज़बुल्लाह लेबनान में, इराक के शिया समर्थक तथा यमन के हाउथी। अतः संभावना यह बनती है कि युद्ध शीघ्र व्यापक रूप धारण कर लेगा, जैसा वियतनाम में हुआ था, जहाँ अमेरिका लम्बे व अनिर्णित युद्ध में फंस गया था।
- अमेरिका की युवा पीढ़ी में यह भावना जोरों से उभरी है कि कूटनीति व युद्ध को रोकना और भड़कने न देना, बेहतर नीति है।

यह भावना कोई क्षणिक मनोदशा नहीं, बल्कि अमेरिकी जनमत में लंबे समय से चल रहे बदलाव का हिस्सा है। इराक और अफगानिस्तान में वर्षों तक चले युद्ध के बाद, सभी अमेरिकन चाहे वे किसी भी राजनैतिक रूझान के हों, दूसरे देशों में सैन्य हस्तक्षेप को लेकर

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

चुनाव आयोग ने मतदान की वैबकास्टिंग सार्वजनिक करने से इन्कार किया

नयी दिल्ली, 21 जून। चुनाव आयोग के अधिकारियों ने मतदान के दिन मतदान केंद्रों की वेब-कास्टिंग के रिकार्ड को किसी व्यक्ति या राजनीतिक दलों को उपलब्ध कराये जाने की मांग को मतदाताओं की निजता की दृष्टि से एक जोखिम भरा मुद्दा बताया है और कहा है कि इसका उपयोग असामाजिक तत्वों द्वारा मतदाताओं पर दबाव डालने के लिए किया जा सकता है।

आयोग के सूत्रों ने कहा कि भारतीय चुनाव आयोग (ईसीआई) ने मतदान की वेबकास्टिंग की नयी

- चुनाव आयोग ने कहा, इससे मतदाताओं की निजता को खतरा हो सकता है।

व्यवस्था आंतरिक उपयोग के लिए की है। इसका उद्देश्य मतदान केंद्र की गतिविधियों के प्रबंध को सुचारु रखना है। वेबकास्टिंग के रिकार्ड को किसी चुनाव आयोग के संदर्भ में उच्च न्यायालय के निर्देश पर तो न्यायालय के विचाराधीन प्रस्तुत किया जा सकता है, लेकिन उसे किसी व्यक्ति या राजनीतिक दल को देना स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव की भावना के विरुद्ध होगा।

आयोग के एक सूत्र ने कहा,

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'ईरान, भारत का पुराना आजमाया हुआ मित्र है'

सोनिया गांधी का मानना है कि कई बार यू.एन. में भारत के खिलाफ मानवाधिकार हनन के बारे में आलोचनात्मक प्रस्ताव लाने का प्रयास हुआ है, ईरान ने ये प्रस्ताव ''ड्रॉप'' करवाये हैं

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 21 जून। कांग्रेस की पूर्व अध्यक्ष सोनिया गांधी ने शनिवार को कहा कि भारत की आवाज़ अब भी सुनी जा सकती है और इसके लिए देर नहीं हुई है।

- सोनिया गांधी की सोच है कि अब गाज़ा में भारी बमबारी व जान-माल का भारी नुकसान हुआ है तथा ईरान पर भी मिसाइल व प्लेन्स व ड्रोन्स का हमला कूटनीति के स्थापित तौर तरीकों के पूर्णतया खिलाफ है।
- अतः भारत को इस मौके पर चुप नहीं रहना चाहिए, बल्कि मुखरित होकर अपनी बात कहनी चाहिए।

उन्होंने कहा कि गाज़ा में हो रही तबाही और ईरान के खिलाफ शत्रुता पर नई दिल्ली की चुप्पी भारत की नैतिक और कूटनीतिक परंपराओं से एक चिंताजनक विचलन है।

सोनिया गांधी ने कहा कि 13 जून 2025 को, जब इज़रायल ने ईरान की संप्रभुता पर गंभीर रूप से आपत्तिजनक और अवैध हमला किया, तो दुनिया ने एक बार फिर एकतरफा सैन्यवाद के खतरनाक परिणाम देखे।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने इस बमबारी और टारगैट कर ईरानी ज़मीन पर की गई हत्याओं की निंदा की है, जिसमें खतरनाक वृद्धि हुई है और जिनके क्षेत्रीय और वैश्विक परिणाम गंभीर हो सकते हैं। इज़रायल की हाल की कई कार्रवाइयों की तरह, जिनमें गाज़ा में उसका क्रूर और गैरअनुपातिक अभियान शामिल है, यह ऑपरेशन भी आम नागरिकों के जीवन और क्षेत्रीय स्थिरता की पूरी तरह अनदेखी करते हुए किया गया। ऐसी कार्रवाइयाँ केवल अस्थिरता बढ़ाएंगी और आगे के संघर्ष की ज़मीन तैयार करेंगी।

उन्होंने कहा कि यह हमला उस समय हुआ जब ईरान और अमेरिका के बीच के कूटनीतिक प्रयास सकारात्मक संकेत दे रहे थे, जो इसे और भी अधिक पीड़ादायक बनाता है। इस वर्ष अब तक पाँच दौर की वार्ताएँ हो चुकी थीं, और जून में छठा दौर प्रस्तावित था। मार्च 2025 में, अमेरिका की राष्ट्रीय खुफिया निदेशक तुलसी गैबार्ड ने कांग्रेस में स्पष्ट रूप से कहा था कि ईरान परमाणु हथियार कार्यक्रम नहीं चला रहा है, और उसके सर्वोच्च नेता अली खामनेई ने 2003 में परमाणु कार्यक्रम का निलंबन कर दिया था उसके बाद से इसे फिर शुरू करने की अनुमति नहीं दी है।

सोनिया गांधी ने कहा कि यह याद रखना जरूरी है कि वर्तमान इज़रायली नेतृत्व, प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू का, शांति को कमजोर करने और कट्टरवाद को बढ़ावा देने का एक लंबा और दुर्भाग्यपूर्ण इतिहास है। उनकी सरकार का लगातार अवैध बस्तियों का विस्तार, अतिराष्ट्रवादी गुटों के साथ गठबंधन करना और दो-राष्ट्र समाधान में बाधा डालना न केवल फिलिस्तीनी जनता की पीड़ा को बढ़ाता है, बल्कि पूरे क्षेत्र को लगातार संघर्ष की ओर धकेलता है।

इतिहास हमें याद दिलाता है कि नेतन्याहू ने 1995 में नफरत की आग इतनी बढ़ाई की उसकी वजह से इज़रायली प्रधानमंत्री यित्ज़ाक राबिन की हत्या कर दी गई, जिससे

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

पुलिस बदले की भावना से पकड़ेगी तो हम पुरजोर विरोध करेंगे : सचिन पायलट

शनिवार सुबह राजस्थान युनिवर्सिटी में परीक्षा दे रहे छात्रनेता निर्मल चौधरी और विधायक अभिमन्यु पूनिया को पुलिस ने हिरासत में लिया

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । पूर्व उपमुख्यमंत्री और पूर्व प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष सचिन पायलट ने शनिवार को पत्रकारों से रूबरू होकर राजस्थान यूनिवर्सिटी छात्र संघ के पूर्व अध्यक्ष निर्मल चौधरी और संगरिया (हनुमानगढ़) के विधायक अभिमन्यु पूनिया को पुलिस द्वारा हिरासत में लिये जाने की निंदा की। पायलट ने कहा कि ''पुलिस, प्रशासन और सरकार अगर बदले की भावना से किसी को पकड़ती है तो हम लोग इसका पुरजोर विरोध करेंगे। अगर सरकार यह बात रखना चाहती है कि, जो लोग हमारे खिलाफ आवाज उठाएंगे, उनके खिलाफ हम कार्रवाई करेंगे। सरकार का इस्तेमाल करके अगर किसी की बात को दबाना चाहते हैं, तो इसको मैं गलत मानता हूं।''

- पुलिस का कहना है कि ''निर्मल चौधरी के साथ विधायक अभिमन्यु पूनिया जबरदस्ती गाड़ी में घुसे थे, उन्हें हिरासत में नहीं लिया गया था।''
- शनिवार सुबह दोनों नेताओं को पकड़ने के लिए युनिवर्सिटी कैम्पस में पुलिस सादा वर्दी में पहुंची थी। पुलिस ने उन्हें परीक्षा कक्ष से निकालकर पुलिस वैन में बैठाया था।

पायलट ने कहा कि, हर जनप्रतिनिधि कोई आंदोलन करता है, धरना देता है, तो उसको अधिकार है। लोकतांत्रिक व्यवस्था में हर व्यक्ति को संविधान यह छूट देता है कि अपनी बात को रखे। मुझे लगता नहीं कि, किसी ने जान-बूझकर कानून की कोई अवहेलना की होगी।

गौरतलब है कि शनिवार सुबह राजस्थान यूनिवर्सिटी से छात्र संघ के पूर्व अध्यक्ष निर्मल चौधरी और संगरिया (हनुमानगढ़) के विधायक अभिमन्यु पूनिया को पुलिस ने हिरासत में लिया था। दोनों शनिवार सुबह यूनिवर्सिटी में दर्शन शास्त्र की परीक्षा देने आए थे, तभी पुलिस ने पकड़ लिया। कैंपस में सुबह से ही सिविल ड्रेस में पुलिस ने डेरा डाल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

छत्तीसगढ़ के नक्सली इलाकों में पहली बार योग हुआ

जगदलपुर, 21 जून। छत्तीसगढ़ के दक्षिण बस्तर के अतिसंवेदशील इलाके के पहाड़ी में जवान और ग्रामीण मिलकर अंतरराष्ट्रीय योग दिवस में दहशत को पीछे छोड़ते हुए खुले मन से शनिवार को पहली बार भाग लिए।

एक सौ पचासवीं बटालियन के कमांडेंट राकेश शुक्ला ने बताया कि सुकमा जिले के नक्सल प्रभावित क्षेत्रों

- आदिवासियों व सुरक्षाबलों के जवानों ने साथ मिलकर योग किया।

पूवर्ति, सिलगेर और टेकलगुड़ेम स्थित सीआरपीएफ कैंपों में जवानों ने सामूहिक रूप से योगाभ्यास किया। ग्रामीणों ने पहली बार जिंदगी में जाना कि योग क्या हैं और जवानों के संग मिलकर योग किया। जवानों ने ग्रामीणों को बताया कि योग स्वास्थ्य और मानसिक संतुलन के लिए वरदान है। योग के बाद ग्रामीणों में खशी का माहौल था।

क्या वाकई में स्वतंत्रता प्राप्त करने के बाद पहली बार भारत की विदेश नीति लड़खड़ा रही है?

कांग्रेस के शासन में पले-बढ़े भारत के पुराने कूटनीतिज्ञ, इसी सोच में रंगे हुए हैं

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 21 जून। स्वतंत्रता के बाद पहली बार भारत की विदेश नीति एक नाज़ुक एवं संकटपूर्ण मोड़ पर खड़ी नज़र आ रही है, जिससे वरिष्ठ राजनयिकों और वैश्विक मामलों के विशेषज्ञों में चिंता की लहर दौड़ गई है। ईरान-इज़रायल संकट के तेजी से बिगड़ते हालात को संभालने में रणनीतिक समझ और स्पष्टता की कमी को लेकर प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार की आलोचना बढ़ती जा रही है।

एक वरिष्ठ सेवानिवृत्त राजनयिक ने नाम गुप्त रखने की शर्त पर सरकार की विदेश नीति की कड़ी आलोचना करते हुए, एक प्रमुख भू-राजनीतिक चुनौती के सामने, दिशाहीन होने का आरोप लगाया।

- इन लोगों का मानना है कि भारत ने अपनी पुरानी विदेश नीति, जो सामरिक दृष्टि से स्वतंत्र सोच पर आधारित थी, त्याग दी है।
- भारत की यह विदेश नीति, रिएक्टिव, ''शॉर्ट साइटेड'' दृष्टिकोण पर आधारित है तथा अमेरिका से प्रभावित है। इस परिवर्तन से भारत को खास लाभ नहीं हुआ, बल्कि अंतर्राष्ट्रीय मंच पर, इसने भारत की विश्वसनीयता को ठेस पहुँचायी है।
- इन पुराने कूटनीतिज्ञों का यह भी कहना है कि वॉशिंगटन व तेल अवीव के नज़दीक जाकर, उनका पक्ष लेकर भारत ने ''मिडिल ईस्ट'' में अपने पुराने साथियों, मित्रों का विश्वास खोया है।
- विदेश नीति के इन जानकारों का इस लय में यह भी मानना है कि भारत पहले अपने सिद्धांतों पर आधारित दृष्टिकोण के लिए जाना जाता था तथा शांति और कूटनीति के पक्ष में बोलता था, बिना किसी के दबाव में आकर।
- ये विशेषज्ञ पुरानी विदेश नीति का गुणगान तो करते हैं, पर, यह भूल जाते है कि भारत एक ''मेजर प्लेयर'' है अंतर्राष्ट्रीय मंच पर, अपनी आर्थिक सफलता व सफल कूटनीति के कारण।

उन्होंने कहा, ''नई दिल्ली ने अपनी दीर्घकालिक रणनीतिक स्वायत्तता की परंपरा को त्याग दिया है और अमेरिका केन्द्रित तात्कालिक सोच वाली नीति को अपनाया है।'' उनके अनुसार, इस बदलाव से भारत को कोई ठोस लाभ नहीं मिला है, बल्कि इससे उसकी

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

नीरज चोपड़ा ने पेरिस डायमंड लीग खिताब जीता

पेरिस, 21 जून। दो बार के ओलंपिक पदक विजेता नीरज चोपड़ा ने पेरिस डायमंड लीग 2025 में शानदार प्रदर्शन करते हुए 88.16 मीटर का थ्रो किया और जर्मनी के जूलियन वेबर को पछाड़ते हुए खिताब अपने नाम किया।

नीरज ने बताया कि वह डायमंड लीग में 90 मीटर के पार फेंकने की कोशिश में थे, लेकिन रन-अप तेज हो

- दो बार के ओलम्पिक विजेता नीरज ने जर्मनी के जूलियन वैबर को हराकर यह जीत हासिल की है।

जाने के कारण वह अपनी गति पर नियंत्रण नहीं रख पाए। उन्होने ओलंपिक्स डॉट काम से कहा मैं आज 90 मीटर से ज्यादा की उम्मीद कर रहा था, लेकिन रन-अप बहुत तेज था और मैं कंट्रोल नहीं कर सका। फिर भी डायमंड लीग जीतकर बहुत अच्छा लग रहा है क्योंकि काफी समय बाद खिताब हासिल हुआ है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

मुख्यमंत्री भजनलाल ने खुहड़ी के धोरों में योग किया

उन्होंने तनोट माता मंदिर में पूजा अर्चना की व बीएसएफ जवानों से मुलाकात की

जैसलमेर, 21 जून (नि.सं.)। अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का राज्य स्तरीय समारोह पर्यटन मानचित्र में लोकप्रिय, खुहड़ी के रेतीले धोरों पर आयोजित हुआ। शहर से करीब 45 किमी दूर खुहड़ी के धोरों पर मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के साथ सैकड़ों लोगों ने योगाभ्यास किया। मुख्यमंत्री ने उपस्थितजनों को योग कर निरोग रहने का सन्देश दिया और फिट रहने का संकल्प दिलाया। जैसलमेर विधायक छोटूसिंह भाटी, पोकरण विधायक महंत प्रतापपुरी, जिला प्रमुख प्रतापसिंह, कलेक्टर प्रतापसिंह सहित आर्मी, एयरफोर्स, व सैकड़ों की संख्या में महिलाएं, पुरुष व बच्चे खुहड़ी के रेतीले टीलों पर समारोह में शामिल हुए।

इससे पहले शुक्रवार रात को राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अपनी जैसलमेर की 2 दिवसीय यात्रा पर प्राचीन गड़ीसर तालाब पर विधि विधान से पूजा अर्चना व मंगल गंगा आरती की।

- जैसलमेर के लोकप्रिय पर्यटन स्थल खुहड़ी में योग के कार्यक्रम में मुख्यमंत्री के साथ आर्मी, एयर फोर्स के जवानों तथा सैकड़ों की संख्या में महिलाओं व बच्चों ने भाग लिया।
- मुख्यमंत्री भजनलाल ग्यारह सौ वर्ष पुराने किशनगढ़ फोर्ट भी गए। सीमा सुरक्षा बल के महानिरीक्षक ने उन्हें कोर्ट के स्थापत्य व सामरिक महत्व की जानकारी दी।

खुहड़ी सैण्ड ड्यून्स पर मुख्यमंत्री सुबह 7 बजे से 8 बजे तक योग कार्यक्रम में सम्मिलित हुए तथा सैकड़ों की संख्या में उपस्थित लोगों के साथ योगाभ्यास किया। जयपुर से आए योग प्रशिक्षकों ने योगाभ्यास और योग की विभिन्न क्रियाएं करवाईं।

मुख्यमंत्री ने शनिवार को ही भारत-पाकिस्तान सीमा के निकट स्थित तनोट माता मंदिर में दर्शन किए तथा पूजा अर्चना की। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि शौर्य की धरा पर मां तनोट राय का भव्य और सुंदर मंदिर बनेगा और 200 कमरों का विश्राम गृह भी बनेगा। तनोट यात्रा के दौरान मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा किशनगढ़ फोर्ट भी गए और 1100 वर्षों से अधिक प्राचीन किशनगढ़ फोर्ट के स्थापत्य और सामरिक महत्व की जानकारी ली। सीमा सुरक्षा बल के महानिरीक्षक ने इस फोर्ट के इतिहास एवं सामरिक महत्व के बारे में मुख्यमंत्री को विस्तार से जानकारी दी।

मुख्यमंत्री ने तनोट माता मंदिर में शहीद स्मारक पर श्रद्धांजलि अर्पित की।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस का राज्य स्तरीय समारोह खुहड़ी के रेतीले धोरों पर आयोजित हुआ। यहां मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के साथ सैकड़ों लोगों ने योगाभ्यास किया। इस अवसर पर उन्होंने योग कर निरोग रहने का सन्देश दिया और फिट रहने का संकल्प दिलाया।

ग्राम विकास अधिकारी से रिकवरी पर रोक लगाई

जयपुर, 21 जून। राजस्थान सिविल सेवा अपीलीय अधिकरण ने करौली की मंडरायल पंचायत समिति के ग्राम विकास अधिकारी के खिलाफ निकाली गई 3.70 लाख रुपए की रिकवरी पर रोक लगा दी है। इसके साथ ही अदालत ने मामले में प्रमुख पंचायती राज सचिव और स्थानीय जिला परिषद के मुख्य

- सिविल सेवा अपीलीय अधिकरण ने पंचायतीराज के प्रमुख सचिव, जिला परिषद के मुख्य कार्यकारी अधिकारी से जवाब मांगा।

कार्यकारी अधिकारी सहित अन्य से जवाब तलब किया है। अधिकरण के अध्यक्ष विकास सीताराम भाले और सदस्य लेखराज तोषावडा ने यह आदेश बनवारी लाल की अपील पर दिए।

अपील में अधिवक्ता विजय पाठक ने बताया कि विकास कार्यों में

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

CMYK

विचार बिन्दु

स्वयं को बदल दो, भाग्य बदल जायेगा –कहावत

यजुर्विद संहिता के आलोक में वनानुभव से स्वास्थ्य व सुख

तेज़ी से बढ़ते शहरीकरण और तनावपूर्ण जीवनशैली में वनानुभव का महत्त्व बढ़ा है। यजुर्विद संहिता में वनानुभव को परिभाषित करते हुए स्पष्ट किया गया है: एकाग्रचित्त ज्ञानेन्द्रिय कर्मेन्द्रिय प्रयोगेनदृष्टि श्रवणघ्राणस्पर्श नरससंयुक्त: वनानुभव:। उक्त सूत्र के साथ ही वनानुभूति शब्द का प्रयोग भी यजुर्विद संहिता में हुआ है। दोनों समानार्थी हैं: एकाग्रचित्तंमनस: प्रयोगंज्ञानेन्द्रियै: कर्मगुणैश्चयुक्तम्। दृष्टिंश्रवणंघ्राणस्पर्शनं च रसानुबन्धेनवनानुभूति:।। जब कोई व्यक्ति एकाग्रचित्त होकर अपने मन, ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों का समुचित प्रयोग करता है–जैसे दृष्टि, श्रवण, घ्राण, स्पर्श, और रस के माध्यम से– तो उसे वनों का समग्र अनुभव होता है, जिसे वनानुभव कहा जाता है। यह अनुभव मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अत्यधिक लाभकारी है।

इसके साथ ही यदि हरियाली में व्यायाम को समाहित कर लिया जाए तो सोने में सुहागा मिल जाता है। जैसा कि यजुर्विद संहिता में कहा गया है: प्रकृत्याऽनुभूतिर्व्ययमेनयुक्तासन्तोषमायु: प्रबलंवितन्ति। शरीरबुद्धीमनसश्चयुक्त्यारोगान्निरुध्यन्ति सदैव नित्यम्।। तात्पर्य यह है कि प्रकृति के अनुभव के साथ व्यायाम को संयोजित करने से संतोषपूर्ण लंबी आयु प्राप्त होती है। वनानुभव, शरीर, बुद्धि, और मन के संयोजन से रोगों का प्रतिकार करते हुए निरंतर स्वास्थ्य बनाए रखता है। रोचक बात यह है कि नदी के किनारे वनानुभव और भी अधिक लाभकारी होता है: वनस्यसौन्दर्यसुखस्यहेतु: स्वास्थ्यं च दीर्घंसुखमस्तितत्र। नद्यास्तटेयत्रवनानुभूतिंनृजालभन्तेमनस: प्रसादम्।। वन का सौंदर्य और सुख स्वास्थ्य और दीर्घकालिक सुख का कारण है। जहाँ नदी के किनारे लोग वनानुभव प्राप्त करते हैं, वहाँ वे मन की शांति और प्रसन्नता पाते हैं।

शहरी जीवन में हरित क्षेत्र, वनों, बगीचों का समावेश अत्यंत आवश्यक है: नगरेषुवृक्षाशमदा सदा या: मार्गेषुनित्यंविविधानितिष्ठा:। शान्तिंप्रसादं च ददन्तिलोकंआरोग्यमायु: सुभगाप्रदद्यात्।। हरितंसमालिङ्ग्यहिशुद्धधर्मंसंरक्षणंपर्यवरेप्रतिष्ठम्। आरोपितावृक्षलता: सदा यानित्यंसुखंशाश्वतधर्ममाहु:।। तात्पर्य यह है कि शहरों में वृक्षों और लताओं से भरे हुए वन, मार्गों के किनारे स्थित शांतिदायक वृक्ष, सदैव शांति और प्रसन्नता प्रदान करते हैं। ये वृक्ष निरंतर आरोग्य और लंबी आयु का वरदान देते हैं। हरे-भरे वृक्षों और लताओं को गले लगाकर हमेशा प्रतिष्ठा और सम्मान मिलता है। पर्यावरण संरक्षण के साथ ये वृक्ष सदैव सुख और समृद्धि लाते हैं, जो शाश्वत धर्म के रूप में जाना जाता है। आइये, यजुर्विद संहिता के इन सूत्रों की विस्तार से व्याख्या देखते हैं।

याज्यात्विषा त्रिवेणी व्याख्या (संस्कृत):

नगरीय वनेषुस्थिता: वृक्षलता: केवलंसौन्दर्यं न ददति, अपितु शरीरस्यस्वास्थ्यंवर्धयन्ति। यथा प्रतिपादितं आधुनिकविज्ञानज्ञानेन, वृक्षा: वायुमलिनतांनाशयन्ति, कार्बणडाइऑक्साइडं शोषयन्ति, तथा नाइट्रोजनडाइऑक्साइडं, सल्फरडाइऑक्साइडं च विशोधयन्ति। एतादृशेषुनगरेषुवृक्षलतावनानिप्राविष्ट्वाशुद्धवायु: लभ्यते। वैज्ञानिका: प्रतिपादयन्तियत्एवमुपनतंवनानुभवंकृत्वामानव: मनस: शान्तिंहृदयस्वास्थ्यं च लभते। वृक्षा: शरीरंदीर्घायुष्यमपिकुर्वन्ति, हृदयगमनस्यसुधारं, रुधिरचापस्यस्थिरीकरणं च कुर्वन्ति।

'हरितव्यायाम:' यत्रवनेषुव्यायाम: वापथदर्शनंक्रियते, तेन न केवलंतनु: अपि तुमन: अपि स्वस्थंभवति। शास्त्रेषु उक्तंयत्वृक्षाणां निकटेसमयंयापयित्वातनुविकास:, सन्तुलनं च साध्यते। इदंशास्त्रीयाधारितंयत् नगरीय वृक्षलता वनानिमानवजीवन स्यस्वास्थ्यवर्धनार्थं अत्यन्तमहत्वपूर्णानिभवन्ति।

एवं वृक्षलता:नगरेषुस्थिता: न केवलं शारीरिक स्वास्थ्यंवर्धयन्ति, अपितु सामाजिकसन्तुलनं, सांस्कृतिकसंरक्षणं च ददति। वृक्षा:संवादं, विश्रान्तिं च सहजनयन्ति। तेचिरस्थायिप्रियत्वंवर्धयन्ति, यत्रव्यक्ति: आत्मानंप्रकृतिसंयुक्तंपश्यति, मनस: प्रसन्नतांलभते। वृक्षलता: पर्यावरणसंरक्षणे अपि प्रमुखंकर्तुंशक्नुवन्ति, यत्ता:कार्बणनाशिन:, वायुनिर्मलकर्त्र्य: च सन्ति। तेनवृक्षलतावनानिकेवलंसौन्दर्यं न ददति, अपितु आरोग्यमायु: च प्रददाति।

अधुना वैज्ञानिका: प्रतिपादयन्तियत्वृक्षा: न केवलंस्वावलम्बनंवर्धयन्ति, अपि तु सामाजिक-पर्यावरणीय संतुलनं च स्थापयन्ति। वृक्षलताया: समृद्धि: मानवजीवनस्यशाश्वतधर्मस्यसूचिकाभवति। वृक्षलता: आरोग्यायमनस: सुखाय च प्रतिष्ठिताभवन्ति। वृक्षरक्षणं पर्यावरणसंरक्षणाय अत्यावश्यकं आस्ति, यतोवायुमलिनतायानिवारणं च भवति। हरितंप्रतिष्ठं यदा नगरेषुक्रियते, तदा सर्वहिताय सुदीर्घकालिकपरिणाम: सिद्धयति।

याज्यात्विषा त्रिवेणी व्याख्या (हिंदी):

नगरीय वनों में स्थित वृक्ष और लताएँ केवल सौंदर्य प्रदान नहीं करतीं, बल्कि शरीर के स्वास्थ्य को भी बढ़ाती हैं। जैसा कि आधुनिक विज्ञान में प्रतिपादित किया गया है, वृक्ष वायु की अशुद्धियों को नष्ट करते हैं, कार्बन डाइऑक्साइड को अवशोषित करते हैं, और नाइट्रोजन डाइऑक्साइड तथा सल्फर डाइऑक्साइड को शुद्ध करते हैं। इस प्रकार के नगरों में वृक्ष-लताओं वाले वन शुद्ध वायु प्रदान करते हैं। वैज्ञानिक बताते हैं कि इस प्रकार के वन अनुभव से मनुष्य को मानसिक शांति और हृदय स्वास्थ्य की प्राप्ति होती है। वृक्ष शरीर को दीर्घायु बनाते हैं, हृदय की कार्यक्षमता में सुधार करते हैं और रक्तचाप को स्थिर रखते हैं।

'हरित व्यायाम' अर्थात् वनों में व्यायाम या पदयात्रा से न केवल शरीर स्वस्थ होता है, बल्कि मन भी शांत और सुदृढ़ होता है। शास्त्रों में कहा गया है कि वृक्षों के निकट समय व्यतीत करने से शारीरिक विकास और संतुलन प्राप्त होता है। यह शास्त्र सम्मत है कि नगरीय वृक्ष और लताएँ मानव जीवन के स्वास्थ्यवर्धन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण हैं।

वनानुभव से मन की शांति, हर्ष, सुख, संतोष, आनंद, प्रसन्नता और आत्मसंतोष की प्राप्ति होती है। हृदय की शक्ति बढ़ती है, रोग प्रतिरोधक क्षमता और श्वसन शक्ति में वृद्धि होती है, और रक्तचाप का शमन होता है। गहरी नींद की प्राप्ति होती है, संधिवात का शमन होता है, मानसिक शक्ति बढ़ती है और अवसाद का शमन होता है। ऊर्जा, उत्साह और स्मृति में वृद्धि होती है।

इसी प्रकार, नगरों में स्थित वृक्ष और लताएँ न केवल शारीरिक स्वास्थ्य में सुधार करती हैं, बल्कि सामाजिक संतुलन और सांस्कृतिक संरक्षण भी प्रदान करती हैं। वृक्ष संवाद और विश्रांति को सहज रूप से उत्पन्न करते हैं। वे चिरस्थायी प्रेम को बढ़ाते हैं, जहाँ व्यक्ति स्वयं को प्रकृति से जुड़ा हुआ महसूस करता है और मानसिक प्रसन्नता प्राप्त करता है। वृक्ष-लताएँ पर्यावरण संरक्षण में भी मुख्य भूमिका निभाती हैं क्योंकि वे कार्बन का नाश करती हैं और वायु को शुद्ध करती हैं। इस प्रकार, वृक्ष-लताओं के वन केवल सौंदर्य नहीं, बल्कि स्वास्थ्य और दीर्घायु भी प्रदान करते हैं।

आधुनिक वैज्ञानिक यह भी बताते हैं कि वृक्ष न केवल आत्मनिर्भरता को बढ़ाते हैं, बल्कि सामाजिक-पर्यावरणीय संतुलन को भी स्थापित करते हैं। वृक्ष-लताओं की समृद्धि मानव जीवन के शाश्वत धर्म का प्रतीक है। वृक्षों को स्वास्थ्य और मानसिक शांति के लिए प्रतिष्ठित किया गया है। वृक्षों का संरक्षण पर्यावरण संरक्षण के लिए अत्यावश्यक है, क्योंकि वे वायु की अशुद्धियों का निवारण करते हैं। जब नगरों में हरियाली और वृक्षारोपण किया जाता है, तो इसका दीर्घकालिक परिणाम सभी के हित में सिद्ध होता है।

याज्यात्विषा त्रिवेणी व्याख्या (English): Trees and plants in urban forests not only provide beauty but also enhance physical health. As modern science has indicated, trees remove air pollution, absorb carbon dioxide, and purify nitrogen dioxide and sulfur dioxide. In cities with such tree-plant-filled forests, clean air becomes accessible. Scientists have also shown that through such forest experiences, humans attain mental peace and heart health. Trees contribute to longevity, improve heart function, and stabilize blood pressure.

"Green exercise," where one engages in physical activity or walks in the forest, not only benefits the body but also keeps the mind healthy and calm. Scriptures mention that spending time near trees leads to physical development and balance. Scientifically, it is evident that urban tree-filled forests are crucial for enhancing human health.

Similarly, trees and plants in cities not only improve physical health but also provide social balance and cultural preservation. Trees naturally foster communication and relaxation. They enhance a lasting sense of connection, where individuals feel united with nature, finding mental happiness and long-term well-being. Trees and plants also play a key role in environmental conservation, as they absorb carbon and purify the air. Thus, tree-filled forests in cities not only offer beauty but also contribute to health and longevity.

Modern scientists also emphasize that trees not only promote self-reliance but also help establish social-environmental balance. The flourishing of trees symbolizes the eternal principle of human life. Trees are established for health and mental well-being. Protecting trees is crucial for environmental preservation, as they remove air pollutants. When greenery and tree planting are undertaken in cities, it leads to long-term benefits that serve the welfare of all.

यजुर्विद संहिता का यह सूत्रवनानुभव की फलश्रुतिको स्पष्ट कर देता है: वनानुभवेनचित्तशान्ति: हर्षसुखसन्तोषानन्दप्रसन्नताआत्मसन्तोष: च। हृदयबलवृद्धि: व्याधिक्षमत्वंश्वसनसामर्थ्यवृद्धि:रक्तदाबशमनम्। निद्रासिद्धि: संधिवातशान्ति:मानसिकशक्तिवृद्धि:अवसादशमनम् च। जठराग्निवृद्धि: त्वक्स्वास्थ्यवृद्धि: चर्मरोगशान्ति: स्नायुव्याधिशमनम् च। ऊर्जा संवर्धनम्उत्साहवर्धनम्स्मृतिवर्धनम् च।

याज्यात्विषा त्रिवेणी व्याख्या (हिंदी): वनानुभव से मन की शांति, हर्ष, सुख, संतोष, आनंद, प्रसन्नता और आत्मसंतोष की प्राप्ति होती है। हृदय की शक्ति बढ़ती है, रोग प्रतिरोधक क्षमता और श्वसन शक्ति में वृद्धि होती है, और रक्तचाप का शमन होता है। गहरी नींद की प्राप्ति होती है, संधिवात का शमन होता है, मानसिक शक्ति बढ़ती है और अवसाद का शमन होता है। पाचन शक्ति में वृद्धि होती है, त्वचा का स्वास्थ्य सुधरता है, चर्मरोग और स्नायु संबंधी विकारों का शमन होता है। ऊर्जा, उत्साह और स्मृति में वृद्धि होती है।

याज्यात्विषा त्रिवेणी व्याख्या (English): The Forest Experience leads to mental peace, joy, happiness, contentment, bliss, cheerfulness, and self-contentment. It increases heart strength, enhances disease resistance and immunity, respiratory capacity, and alleviates blood pressure. One attains restful sleep, relief from arthritis, improved mental strength, and relief from depression. Digestive fire improves, skin health is enhanced, and skin diseases and nerve disorders are alleviated. Energy, enthusiasm, and memory are all enhanced.

अंत में, यजुर्विद संहिताका यह सूत्र बहुत महत्वपूर्ण है: सुखमूलंस्वात्मसमाजप्रकृतिसंयोग: ततोत्रयस्यरक्षणंसंवर्धनं च। अर्थात् स्वयं अपने साथ, समाज, और प्रकृति के साथ सार्थक संबंध ही सुख का मूल है। ये तीनों आनंद के मूल इसलिए हैं क्योंकि: प्रकृतिसंयोग: सार: समाज: पुष्टिकारक:। आत्मैक्यंपरमंतत्त्वंनित्यानन्दप्रदं सदा।। प्रकृति के साथ जुड़ाव सार्थक और महत्वपूर्ण है, समाज के साथ जुड़ाव पोषण और विकासकारी होता है, और आत्मा के साथ एकत्व ही परम सत्य है, जो सदा नित्य आनंद प्रदान करने वाला है।

–अतिथि सम्पादक,
डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(भारतीय वन सेवा से सेवानिवृत्त; वर्तमान में राष्ट्रीयआयुर्वेद संस्थान सहित अनेक विश्वविद्यालयों में विजिटिंग प्रोफेसर)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान बना प्रकृति, जनजाति और जनचेतना की त्रिवेणी

सुश्री नवधा परदेशी

राजस्थान के दक्षिणी छोर पर बसा प्रतापगढ़ जिला अपने नैसर्गिक सौंदर्य और समृद्ध जैव विविधता के लिए विशेष पहचान रखता है। यहां की घाटियां, सीतामाता वन्यजीव अभ्यारण्य की वनसंपदा, भंवर सेमला बाँध, जाखम बाँध, दीपेश्वर तालाब, माही बेकवाटर्स और बावड़ी जैसे जलस्त्रोत और जनजातीय संस्कृति मिलकर एक ऐसा अद्भुत संगम रचती हैं, जिसे यदि संवारा जाए तो यह क्षेत्र देश के प्रमुख पर्यटन स्थलों में अपना विशिष्ट स्थान बना सकता है।

इस संभावना को धरातल पर उतारने के लिए राज्य सरकार निरंतर प्रयत्नशील है। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की दूरदर्शी सोच के तहत आदिवासी पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2025-26 के बजट में 100 करोड़ रुपये से 'ट्राइबल टूरिस्ट सर्किट' की घोषणा की गई। यह घोषणा जनजातीय मूल्यों, संस्कृति और परंपरा को सम्मान देने का एक सशक्त प्रयास है। क्षेत्र में पर्यटन के विकास के लिए प्रकृति को सहजना अत्यंत जरुरी है इसी सोच के साथ 'वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान' न केवल एक अभियान रहा, बल्कि यह एक जनक्रांति बन गया। जैसे ही 5 जून को यह अभियान प्रारंभ हुआ, कांठल की धरा ने एक नई ऊर्जा के साथ करवट ली। पहले ही दिन से आमजन, जनप्रतिनिधि और सरकारी कर्मचारी एक साथ मिलकर नालियों की सफाई करते, पौधारोपण करते, पुरानी बावड़ियों को संवारते हुए दिखे। यह दृश्य साक्षात् उस प्राचीन रिश्ते की पुनर्परिभाषित करने जैसा था जो मानव और प्रकृति के बीच जन्मों से रहा है। पर्यटन की संभावनाओं को वास्तव में साकार करने के लिए आवश्यक है कि संबंधित क्षेत्र स्वच्छता की दृष्टि से दुरुस्त हो और पर्यावरणीय संतुलन बनाए रखा जाए। स्वच्छ वातावरण न केवल पर्यटकों को आकर्षित करता है, बल्कि स्थानीय लोगों की जिम्मेदारी और जागरूकता का परिचायक भी होता है।

इस अभियान के दौरान जब विभिन्न विभागों और ग्रामवासियों ने मिलकर वर्षों से उपेक्षित जल स्त्रोतों, नालियों और सार्वजनिक स्थलों की सफाई की, तो उसका प्रभाव केवल भौतिक नहीं था। 'पूर्व एवं पश्चात' छवियां केवल फ़ोटो नहीं हैं, वे उस मानसिकता की झलक हैं जिसने हम क्यों करें की सोच से यह हमारा कर्तव्य है तक का परिवर्तन कर दिखाया। जब वंदे गंगा और हरियालो राजस्थान के तहत बिखरे पत्तों की जगह हरीतिमा लेगी तब असल में विकास की परिभाषा गढ़ी जाएगी। यह जन आंदोलन केवल सफाई और पौधारोपण का कार्य नहीं है – यह एक चेतना है, एक प्रेरणा है, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए सतत विकास और प्रकृति-संरक्षण का मार्ग प्रशस्त करेगा।

प्रतापगढ़ जैसे जनजातीय जिले के लिए यह विशेष महत्व रखता है, जहां सदियों से मानव और प्रकृति का प्रेम अटूट रहा है। इस अभियान ने न केवल पर्यावरणीय चेतना को पुनर्जीवित किया बल्कि यह भी सिद्ध किया कि विकास केवल कंक्रीट और शहरीकरण से नहीं होता – वह तब होता है जब जनजातीय अस्मिता, लोकसंस्कृति और प्राकृतिक संसाधनों को केंद्र में रखकर योजनाएं बनाई जाएं। आज जब राजस्थान सरकार राज्य की पहचान को नए दृष्टिकोण से परिभाषित करना चाहती हैं, तो हमें इसे केवल सूखे प्रदेश या रेगिस्तानी भूभाग के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसे राज्य के रूप में देखना होगा, जिसने पर्यावरणीय संतुलन, जनजाति अस्मिता और सरकार की सहभागिता को एक नई परिभाषा दी है। राज्य सरकार का यह प्रयास केवल अभियान नहीं बल्कि जनचेतना को जगाने वाला एक ऐतिहासिक कदम है। यही वह दृष्टिकोण है, जो 'वंदे गंगा' जैसे अभियानों को सिर्फ सरकारी कदम नहीं, बल्कि जन-आंदोलन, जन-संवाद और जन-संवेदन का प्रतीक बनाता है।

स्थानीय भागीदारी से वैश्विक लक्ष्यों तक–

'वंदे गंगा जल संरक्षण जन अभियान' केवल जल संरक्षण तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका प्रभाव बहुआयामी है और यह संयुक्त राष्ट्र संघ के सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) से गहराई से जुड़ा हुआ है। यह पहल SDG-6 (सभी के लिए स्वच्छ जल और स्वच्छता सुनिश्चित करना, SDG-13 (क्लाइमेट एक्शन) के तहत यह जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को कम करने, SDG-15 (स्थल आधारित पारिस्थितिक तंत्र का संरक्षण) के प्रति राज्य की प्रतिबद्धता दर्शाता है। इसके अलावा जब स्थानीय समुदाय स्वयं श्रमदान और पौधारोपण जैसे कार्यों में भाग लेते हैं, तो यह SDG-11 (स्थायी शहर और समुदाय) तथा SDG-17 (लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु साझेदारी) को भी मजबूती प्रदान करता है। इस प्रकार, यह स्पष्ट है कि वंदे गंगा अभियान एक दूरदर्शी प्रयास है, जो न केवल वर्तमान समस्याओं का समाधान करता है, बल्कि भविष्य की सतत और समावेशी प्रगति का मार्ग भी प्रशस्त करता है।

–सुश्री नवधा परदेशी,
सहायक जनसम्पर्क अधिकारी,
प्रतापगढ़
सूचना एवं जनसंपर्क विभाग,
राजस्थान

कैंसर से बचाव और उपचार में योग की भूमिका

अशोक कुमार

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की बहुत-बहुत बधाई! योग के माध्यम से स्वास्थ्य और शांति का प्रसार हो !योग कैंसर का सीधा इलाज नहीं है, लेकिन यह कैंसर से बचाव और उपचार के दौरान होने वाली समस्याओं को कम करने में बहुत सहायक हो सकता है। यह शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य दोनों पर सकारात्मक प्रभाव डालता है।

कैंसर से बचाव में योग की भूमिका:–

तनाव कम करना: योग तनाव और अवसाद को कम करने में मदद करता है। तनाव कोर्टिसोल हार्मोन के स्तर को बढ़ाता है, जो प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर कर सकता है और नींद में गड़बड़ी पैदा कर सकता है। योग से तनाव कम होने पर प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत होती है।

बेहतर नींद: योग नींद की गुणवत्ता में सुधार करता है, जो समग्र स्वास्थ्य के लिए महत्वपूर्ण है। अच्छी नींद शरीर को खुद को ठीक करने और मजबूत बनाने में मदद करती है।

स्वस्थ जीवनशैली: योग एक अनुशासित जीवनशैली को बढ़ावा देता है, जिसमें स्वस्थ आहार और नियमित शारीरिक गतिविधि शामिल है। ये सभी कारक कैंसर के जोखिम को कम करने में मदद करते हैं।

प्रतिरक्षा प्रणाली को मजबूत करना: योग के अभ्यास से शरीर की प्रतिरक्षा प्रणाली मजबूत होती है, जिससे शरीर बीमारियों से लड़ने में बेहतर ढंग से सक्षम होता है।

शरीर का डिटॉक्सिफिकेशन: कुछ योग अभ्यास और प्राणायाम शरीर से विषाक्त पदार्थों को निकालने में मदद करते हैं, जो कैंसर के जोखिम को कम कर सकते हैं।

कैंसर उपचार में योग की भूमिका:

कैंसर के उपचार के दौरान, योग रोगियों को कई तरह से लाभ पहुंचा सकता है:–

साइड इफेक्ट्स का प्रबंधन: कीमोथेरेपी और रेडियोथेरेपी जैसे उपचारों के कारण थकान, दर्द, मतली, चिंता, अवसाद, नींद की समस्या और मूड स्विंग्स जैसे दुष्प्रभाव हो सकते हैं। योग इन लक्षणों को कम करने में मदद कर सकता है।

शारीरिक शक्ति और लचीलापन: कैंसर और उसके उपचार से शरीर कमजोर हो सकता है। योग शरीर में लचीलापन, शक्ति और संतुलन में सुधार करने में मदद करता है।

मानसिक शांति और भावनात्मक संतुलन: कैंसर का निदान और उपचार मानसिक रूप से बहुत चुनौतीपूर्ण होता है। योग ध्यान और श्वास अभ्यास के माध्यम से रोगियों को मानसिक शांति और भावनात्मक संतुलन प्राप्त करने में मदद करता है।

दर्द प्रबंधन: योग दर्द सहने की क्षमता को बढ़ा सकता है और दर्द निवारक दवाओं पर निर्भरता को कम करने में मदद कर सकता है।

लसीका परिसंचरण में सुधार: कोमल योग मुद्राएँ लसीका परिसंचरण को बढ़ावा दे सकती हैं, सूजन को कम कर सकती हैं और समग्र उपचार को बढ़ावा दे सकती हैं।

कैंसर के मरीजों के लिए कुछ लाभकारी योगासन और प्राणायाम:

विशेषज्ञों की सलाह के अनुसार, कैंसर के मरीजों को अपनी शारीरिक क्षमता और स्थिति के अनुसार योग का अभ्यास करना चाहिए। कुछ सामान्य रूप से सुझाए गए आसन और प्राणायाम हैं:

कपालभाति: यह प्राणायाम विभिन्न प्रकार के कैंसर से निजात दिलाने में सहायक माना जाता है, और यह लिवर के स्वास्थ्य और तनाव कम करने में भी मदद करता है।

अनुलोम-विलोम: यह भी कैंसर के रोगियों के लिए बहुत फायदेमंद माना जाता है, और मानसिक शांति प्रदान करता है।

शीतली और शीतकारी प्राणायाम: कीमोथेरेपी और रेडियोथेरेपी के कारण शरीर में उत्पन्न अधिक गर्मी को शांत करने के लिए ये प्राणायाम फायदेमंद हैं।

भुजंगासन: यह लंग कैंसर के लिए सहायक है।

उत्तान पादासन: पेट के कैंसर और आंतों के कैंसर के लिए फायदेमंद।

योग को कभी भी आधुनिक चिकित्सा उपचार के विकल्प के रूप में नहीं देखना चाहिए, बल्कि इसे पूरक चिकित्सा के रूप में प्रयोग किया जाना चाहिए। कैंसर के मरीजों को कोई भी योगाभ्यास शुरू करने से पहले अपने चिकित्सक और एक योग्य योग प्रशिक्षक से सलाह लेनी चाहिए। उनकी शारीरिक स्थिति के अनुसार ही योगासन का चुनाव करना चाहिए। शुरूआत में हल्के और धीमी गति वाले योग से करें और धीरे-धीरे अपनी क्षमता बढ़ाएं। अपने शरीर की ज़रूरतों को समझें और उस गति से आगे बढ़ें जो आपके लिए आरामदायक हो।

संक्षेप में, योग कैंसर के रोगियों के लिए शारीरिक, मानसिक और भावनात्मक कल्याण को बढ़ावा देने का एक शक्तिशाली उपकरण हो सकता है, जिससे वे उपचार के दुष्प्रभावों का सामना करने और बेहतर जीवन गुणवत्ता बनाए रखने में सक्षम होते हैं।

–अशोक कुमार,
विभागाध्यक्ष राजस्थान
विश्वविद्यालय जयपुर

काम का अनुभव नहीं होने पर व्यावसायिक प्रशिक्षकों की नियुक्ति रद्द

राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद की आयुक्त अनुपमा जोरवाल ने निर्देश जारी किए

बीकानेर, (निसं)। योग्यता के निर्धारित मानकों की अनदेखी कर जिले के 169 स्कूलों सहित प्रदेश के लगभग 2900 स्कूलों में संविदा पर लगाए गए व्यावसायिक प्रशिक्षकों की नियुक्ति को रद्द कर दिया है। राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद की आयुक्त अनुपमा जोरवाल ने इस संबंध में निर्देश जारी किए हैं।

जानकारी के अनुसार स्कूल शिक्षा परिषद ने करीब 10 फर्मों के जरिए संविदा पर वोकेशनल टीचर्स की नियुक्ति की थी। इनमें योग्यता के बजाय मिलीभगत कर अयोग्य को संविदा पर नियुक्ति देने की शिकायत थी। कई शिक्षकों को तो कंप्यूटर का काम नहीं आता था। मगर शिफारिशें हाईलेवल की थी।

- **स्कूल शिक्षा परिषद ने करीब 10 फर्मों के जरिए संविदा पर वोकेशनल टीचर्स की नियुक्ति की थी, इनमें योग्यता के बजाय मिलीभगत कर अयोग्य को संविदा पर नियुक्ति देने की शिकायत थी**
- **कई शिक्षकों को तो कंप्यूटर का काम नहीं आता था, मगर शिफारिशें हाईलेवल की थी**

कई स्कूलों के प्रशासन ने शिक्षा विभाग को लिखकर देने की तैयारी कर ली थी कि लगाए गए वोकेशनल ट्रेनर काम के नहीं है। विभाग को भी शिकायत मिली कि स्कूलों में व्यवसायिक प्रशिक्षकों को नियुक्ति दिलाने के लिए दलाल अभ्यर्थियों को ठेके पर नौकरी लगाने की गारंटी देकर डेढ़ से दो लाख रुपए तक वसूल रहे हैं। बताया जा रहा है कि इस प्रकरण में एक ऑडियो भी वायरल हुआ है, जिसने इस योजना और स्कूल शिक्षा परिषद की व्यवस्थाओं पर सवाल खड़े कर दिए हैं।

राशिफल रविवार 22 जून, 2025

पंडित अनिल शर्मा

आषाढ़ मास, कृष्ण पक्ष, द्वादशी तिथि, रविवार, विक्रम संवत 2082, भरणी नक्षत्र सायं 5:39 तक, सुकर्मा योग सायं 4:57 तक, कौलव करण दिन 2:55 तक, चन्द्रमा आज रात्रि 11:04 से वृष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मिथुन, चन्द्रमा-मेष, मंगल-सिंह, बुध-मिथुन, गुरू-मिथुन, शुक्र-मेष, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज राजयोग सूर्योदय से सायं 5:39 तक है। त्रिपुष्कर योग सायं 5:39 से रात्रि 1:22 तक है। आज योगिनी एकादशी व्रत (वैष्णवों) है। बुध कर्क राशि में रात्रि 9:33 पर प्रवेश करेगा। आज से राष्ट्रीय आषाढ़ मास आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर 7:20 से 9:03 तक, लाभ-अमृत 9:03 से 12:28 तक, शुभ 2:11 से 3:54 तक।

राहूकाल: 4:30 से 6:00 तक। सूर्योदय 5:38, सूर्यास्त 7:19

मेष
व्यक्तिगत प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्य योजनानुसार बनने लगेंगे। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी।

वृष
आज अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। व्यक्तिगत खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य खराब हो सकता है।

मिथुन
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाओं पर धन खर्च हो सकता है।

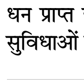
कर्क
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

सिंह
धार्मिक-मांगलिक कार्यों में भाग ले सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

कन्या
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। आर्थिक मामलों में परेशानी हो सकती है। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

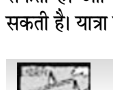
तुला
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा।

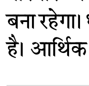
वृश्चिक
अपने अति आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। कार्य शीघ्रता/सुगमता से सम्पन्न हो सकते हैं। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

धनु
परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा।

मकर
घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी।

कुंभ
महत्वपूर्ण कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। प्रतिष्ठित व्यक्तियों से संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे।

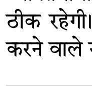
मीन
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। घर-परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं।

जोधपुर में रिमझिम बरसात के साथ लोगों ने उत्साह से योग किया

- न्यायालय परिसर, जोधपुर रेल मंडल, गौशाला मैदान स्वीमिंग पूल, राजस्थान प्रदूषण नियंत्रण मंडल, निगम, आयुर्वेद विश्वविद्यालय, आयुष मंत्रालय, क्रीड़ा भारती का गौशाला में कार्यक्रम हुए
- केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने मेहरानगढ़ दुर्ग में योग किया

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर में आज अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस बरसात की रिमझिम के साथ हर्षोल्लास से मनाया गया। लाखों की संख्या में लोग शामिल हुए तथा योग किया। सबसे अच्छी बात रही कि सुबह से ही मौसम खुशनुमा बना रहा। सुबह योग कार्यक्रमों की शुरुआत छह बज से हुई। उससे पहले ही मानसूनी बारिश की रिमझिम शुरू हो गई। योग कार्यक्रमों में हिस्सा लेने वाले काफी उत्साहित नजर आए। केन्द्रिय मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने मेहरानगढ़ दुर्ग पर योग किया।

अंर्तष्ट्रीय योगा दिवस पर आज सुबह हुई बारिश के बावजूद शहर में अधिकांश तय स्थानों सुबह 6 बजे से 8 बजे तक पाकर्, सरकारी संस्थाओं और निजि स्थानों पर शहरवासियों ने योग दिवस को हर्षोल्लास के साथ मनाया। केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री गजेंद्र सिंह शेखावत ने 11वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर विख्यात मेहरानगढ़ दुर्ग में योग किया।

मेहरानगढ़ किले पर बड़ी संख्या में योग साधना कर लोगों ने स्वस्थ जीवन जीने का संदेश दिया। सभी ने प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी का उद्बोधन सुना और उनके योग को लेकर दिए गए संदेश मार्गदर्शन को जीवन में संकल्पित होकर आत्मसात करने का संकल्प किया। जिला प्रशासन, पुलिस, बीएसएफ के जवानों एवं लोगों के साथ बड़ी संख्या में उपस्थित युवाओं ने उत्साह के साथ योग किया

इसी कड़ी में सीमा सुरक्षा बल के हजारों जवानों ने योगासन किया। बीएसएफ आईजी एम एल गर्ग के निर्देशन में सामूहिक रूप से योग किया। बीएसएफ एसटीसी ट्रेनिंग सेंटर, जोधपुर सहित भारत और पाकिस्तान की 1000 किलोमीटर की सीमा पर जवानो ने योग किया। इस अवसर पर बीएसएफ आईजी एमएल गर्ग, बीएसएफ के एसटीसी ट्रेनिंग सेंटर में सुधीर हुड्डा और विदुर भारद्वाज आदि मौजूद रहे।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण, जोधपुर जिला द्वारा को जिला एवं सेशन न्यायालय परिसर में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस हर्षोल्लास से मनाया गया। इस अवसर पर आयोजित योग शिविर में विशिष्ट न्यायाधीश, पोक्सो न्यायालय जोधपुर जिला अनिल आर्य, अपर जिला एवं सेशन न्यायाधीश नेहा शर्मा, सिविल न्यायाधीश एवं न्यायिक मजिस्ट्रेट आदित्य सहित प्राधिकरण, न्यायालय व लीगल एड डिफेंस काउंसिल से जुड़े अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

जोधपुर रेल मंडल द्वारा शनिवार को रेलवे स्टेडियम में "एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग" थीम पर भव्य योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस आयोजन में मंडल के अधिकारियों, रेलकर्मियों व उनके परिजनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। प्रातः 06:00 से 07:30 बजे तक आयोजित योगाभ्यास सत्र का संचालन योग गुरु भूपेंद्र सिंह जोधा, राष्ट्रीय योगासन खिलाड़ी ख्याति पालीवाल एवं नक्षत्रा जोधा द्वारा किया गया। मंडल रेल प्रबंधक अनुराग त्रिपाठी ने कार्यक्रम की शुरुआत में सभी को नियमित योग अभ्यास की प्रतिज्ञा दिलाई तथा योग को जीवनशैली का अभिन्न अंग बनाने का आ ग्रह किया। वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक विकास खेड़ा ने बताया कि मंडल के विभिन्न कार्यालयों, रेलवे स्टेशनों, अस्पतालों एवं कार्यस्थलों पर भी योग दिवस के उपलक्ष्य में कार्यक्रम आयोजित किए गए।

योग दिवस के अवसर पर कार्यक्रम की सफलता और उत्कृष्ट आयोजन के लिए मंडल रेल प्रबंधक अनुराग त्रिपाठी ने जोधपुर मंडल की आयोजन टीम को 20 हजार नगद पुरस्कार प्रदान करने की घोषणा की।

योग दिवस की थीम एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग' को केंद्र में रखते हुए, आयुष मंत्रालय द्वारा निर्धारित सामान्य योग प्रोटोकॉल' के अंतर्गत योगाभ्यास सत्र का संचालन किया गया। योग प्रशिक्षिका श्रीमती दीपिका द्वारा योग एवं प्राणायाम तथा श्रीमती वन्दना द्वारा ध्यान (मेडिटेशन) का अभ्यास कराया गया।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर क्रीड़ा भारती जोधपुर महानगर व अल्ट्राटेक सीमेंट के संयुक्त तत्वावधान में गौशाला मैदान में योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर क्रीड़ा भारती महानगर सचिव नीरज कौशिक, प्रांत अध्यक्ष पृथ्वी राज जोधा, प्रांत सचिव ओमप्रकाश पुरोहित, उप जिला शिक्षा अधिकारी (शारीरिक शिक्षा) सुमित्रा पंवार, अनिल मेहता, प्रवीण मेड़ु, बृजपाल सिंह भाटी, शेर सिंह राठौड़, रमेश जैन, सुरेंद्र सोनी सहित कई जने उपस्थित रहे।

जोधपुर के गौशाला मैदान स्थित स्वीमिंग पूल में एक अनोखे अंदाज़ में योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस विशेष आयोजन में बच्चों, युवाओं और नागरिकों ने उत्साह के साथ भाग लेते हुए जल में योगाभ्यास कर एक नया उदाहरण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का नेतृत्व कोच नरेन्द्र जोशी और सुरेन्द्र सोनी ने किया।

राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मंडल, क्षेत्रीय कार्यालय जोधपुर (अर्बन) एवं लघु उद्योग भारती के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को लघु उद्योग भारती परिसर, जोधपुर में एक भव्य योग शिविर का आयोजन किया गया। इस सत्र में राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मंडल के अधिकारियों, लघु उद्योग भारती के प्रतिनिधियों, विभिन्न व्यावसायिक संगठनों, महिलाओं, बच्चों और नागरिकों ने भाग लिया।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर नगर निगम दक्षिण मुख्यालय पर प्रातः 6:00 बजे से 8:00 बजे तक विशेष योग सत्र का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों ने पूर्ण उत्साह और अनुशासन के साथ विभिन्न योगासन किए और ध्यान अभ्यास किया।

आयुर्वेद विश्वविद्यालय द्वारा 11 वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर विभिन्न स्थानों पर भव्य योग कार्यक्रमों की श्रृंखला आयोजित की गई। कुलगुरु प्रोफेसर (वैद्य) प्रदीप कुमार प्रजापति के नेतृत्व एवं निर्देशन में इन आयोजनों को सफलतापूर्वक संपन्न किया गया।

भारतीय सेना की कोणार्क कॉर्प्स के साथ विश्वविद्यालय द्वारा सामूहिक योग अभ्यास का आयोजन किया गया, जिसमें चीफ ऑफ स्टाफ मेजर जनरल प्रिंस दुग्गल समेत कुल 1720 सैनिकों एवं अधिकारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। संचालन डॉ. सौरभ अग्रवाल व डॉ. हेमन्त राजपुरोहित ने किया।

इसके साथ ही इंडियो पब्लिक सीनियर सेकेंडरी स्कूल, फुटवियर डिजाइन एंड डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट (एफ डी डी आई), जोधपुर, राजकीय पॉलिटेक्निक महाविद्यालय, जोधपुर में भी योगसत्र का आयोजन किया गया।

पोकरण सिंचाई योजना के विस्तार व जिला की मांग

पोकरण, (कासं)। भारतीय जनता पार्टी के पूर्व जिला अध्यक्ष जुगल किशोर व्यास ने जैसलमेर प्रवास के दौरान राजस्थान के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से मुलाकात कर दो महत्वपूर्ण मुद्दों को लेकर ज्ञापन सौंपा कृ पहला, पोकरण सिंचाई जयनारायण व्यास लिफ्ट परियोजना का विस्तार तथा दूसरा, पोकरण को नया जिला बनाने की मांग की।

व्यास ने मुख्यमंत्री को अवगत कराया कि वर्ष 2023-24 के राज्य बजट में इस परियोजना के लिए ₹75 करोड़ की स्वीकृति दी गई थी, जिससे 12,000 हेक्टेयर कृषि भूमि को फव्वारा पद्धति से सिंचित करने की योजना बनाई गई है। उन्होंने आग्रह किया कि शेष 14,000 हेक्टेयर क्षेत्र हेतु भी शीघ्र स्वीकृति प्रदान की जाए और स्वीकृत योजनाएं जमीन पर क्रियान्वित किया जाए। उन्होंने मुख्यमंत्री से अनुरोध किया कि इस योजना का विस्तार पोकरण से फलसूंड तक किया जाए, ताकि अधिक क्षेत्र को सिंचाई का लाभ मिल सके। इसके साथ ही उन्होंने जयनारायण व्यास लिफ्ट योजना के 28वें डिवीजन का कार्यालय फलोदी से स्थानांतरित कर नाचना में स्थापित करने की भी मांग रखी।

नाकोड़ा के प्राकृतिक सौंदर्य में योगासन छाया

बालोतरा, (निसं)। बालोतरा जिले में 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस शनिवार को नाकोड़ा तीर्थ के मनोरम और शांत प्राकृतिक वातावरण की छांव में बड़े उत्साह और भव्यता के साथ मनाया गया। आस्था और योग का यह अनूठा संगम समाज के हर वर्ग के लोगों को एक साथ लाया, जिन्होंने सामूहिक रूप से योग संकल्प लिया और स्वस्थ जीवनशैली अपनाने का प्रण किया।

इस अवसर पर मतदान शपथ का आयोजन भी किया गया, जिसमें नागरिकों ने लोकतंत्र में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करने का संकल्प लिया। इस अवसर पर पत्रकार साथियों ने भी योगाभ्यास कर अपनी सहभागिता सुनिश्चित की।

नाकोड़ा का पवित्र और शांत वातावरण योग दिवस के लिए एक आदर्श पृष्ठभूमि साबित हुआ। सुबह-सुबह ही बड़ी संख्या में स्थानीय निवासियों, विभिन्न सरकारी विभागों के अधिकारियों, पुलिस कर्मियों, छात्रों और योग प्रेमियों ने नाकोड़ा मंदिर परिसर के पास इकट्ठा होना शुरू कर दिया था। प्रकृति की गोद में, वर्षा की पहली बूंद के साथ योग प्रशिक्षकों के मार्गदर्शन में विभिन्न योगासनों और प्राणायाम का अभ्यास किया गया। इस दौरान वातावरण में एक सकारात्मक ऊर्जा और शांति का अनुभव हुआ।

इस जिला स्तरीय कार्यक्रम में बच्चों से लेकर बुजुर्गों तक, समाज के हर वर्ग की भागीदारी देखने को मिली। महिलाओं, पुरुषों और युवाओं ने उत्साहपूर्वक योगाभ्यास किया और योग को अपने दैनिक जीवन का हिस्सा बनाने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम का उद्देश्य न केवल शारीरिक स्वास्थ्य को बढ़ावा देना था, बल्कि मानसिक शांति और आध्यात्मिक उत्थान के महत्व को भी रेखांकित करना था। उपस्थित सभी लोगों ने योग से निरोग रहने का संदेश दिया।

योग संकल्प के साथ-साथ, इस महत्वपूर्ण अवसर पर एक मतदान शपथ का भी आयोजन किया। जिला प्रशासन द्वारा योग की वोट भी कार्य म आयोजित कर समारोह में उपस्थित सभी नागरिकों ने अपने मताधिकार का प्रयोग करने और लोकतंत्र को मजबूत बनाने का संकल्प लिया। यह पहल नागरिकों को अपने संवैधानिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक करने और आगामी चुनावों में उनकी सक्रिय भागीदारी सुनिश्चित करने के उद्देश्य से की गई।

कार्यक्रम के सफल आयोजन में जिला प्रशासन, नाकोडा ट्रस्ट और विभिन्न सरकारी विभागों ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। पुलिस और स्वास्थ्य विभाग ने सुरक्षा और प्राथमिक चिकित्सा सुविधाओं का प्रबंध किया, वहीं अन्य विभागों ने कार्यक्रम स्थल पर उचित व्यवस्थाएं सुनिश्चित कीं। परिवहन विभाग ने भी प्रतिभागियों को कार्य म स्थल तक लाने व ले जाने को बसों की माकूल व्यवस्था की। नाकोडा ट्रस्ट द्वारा प्रतिभागियों को पौष्टिक अल्पाहार के साथ योग मेट भी दी गई।

जिला प्रभारी सचिव टी. सी. बोहरा ने योग और स्वस्थ जीवनशैली के महत्व पर प्रकाश डाला और जिला कलक्टर सुशील कुमार यादव ने नागरिकों को मतदान के लिए प्रेरित किया।

नाकोड़ा में आयोजित यह 11वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस एक यादगार कार्यक्रम रहा, जिसने न केवल योग के महत्व को उजागर किया बल्कि सामाजिक सद्भाव और नागरिक जागरूकता का भी संदेश दिया।

बाड़मेर के आदर्श स्टेडियम में सामूहिक योगाभ्यास

बाड़मेर, (नि.सं.)। 11 वें अंतरराष्ट्रीय योग दिवस पर शनिवार को बाड़मेर के आदर्श स्टेडियम में जिला स्तरीय योगाभ्यास कार्यक्रम में "एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग" की थीम पर निर्धारित प्रोटोकॉल के अनुसार सुबह 7 बजे सामूहिक योगाभ्यास किया गया।

इस दौरान प्रभारी मंत्री जिला स्तरीय कार्यक्रम के दौरान जोराराम कुमावत एवं अन्य अतिथियों की ओर से दीप जलाकर पूजा अर्चना की गई। इसके बाद प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के अंतराष्ट्रीय योग दिवस के संबोधन का सीधा प्रसारण हुआ। इसके बाद सुबह 7 बजे योगाभ्यास शुरू किया। करीब एक घंटे तक चले योगाभ्यास में ट्रेनर की ओर से अलग-अलग आसन करवाए गए।

जिला स्तरीय प्रोग्राम में प्रभारी मंत्री जोराराम कुमावत, विधायक डॉ. प्रियंका चौधरी, प्रभारी सचिव विश्राम मीना, जिला कलक्टर टीना डाबी, एसपी नरेंद्रसिंह मीना, पूर्व केन्द्रीय मंत्री कैलाश चौधरी, जिलाध्यक्ष अनंतराम विश्नोई, समाजसेवी दीपक कड़वासरा, रमेशसिंह इंदा, रणवीर सिंह भादू, देवीलाल कुमावत सहित बड़ी संख्या में आमजन ने योगाभ्यास किया। इस दौरान सेना, बीएसएफ, पुलिस के अधिकारियों एवं जवानों के साथ जन प्रतिनिधि, नागरिक उपस्थित रहे।

बाड़मेर जिला मुख्यालय के अलावा उपखंड एवं ग्राम पंचायत स्तर तक योग ट्रेनरों की ओर से लोगों को योग का अभ्यास करवाया गया। बाड़मेर शहर में आदर्श स्टेडियम के अलावा शिव मुंडी, सोन तालाब, जसदेर तालाब, किराडू में भी योग अभ्यास किया गया। वहीं बॉर्डर पर बीएसएफ के जवानों और अधिकारियों ने भी योगाभ्यास किया।

प्रभारी मंत्री जोराराम कुमावत ने कहा कि योग हमारे जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण है। योग हमारी पुरानी पद्धति है। यह ऋषि मुनियों के समय से चल रहा है। हमारे योग को पूरा विश्व अपना रहा है। पीएम नरेंद्र मोदी ने 24 सितंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र संघ के सामने प्रस्ताव रखा था। 11 साल से लगातार विश्व के 175 देश योग दिवस को मना रहे है।

उन्होंने कहा कि योग से निश्चित रूप से शारीरिक, आध्यात्मिक और मानसिक विकास होता है। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति को योग अपनाना चाहिए। योग का जो भौतिक, मशीनरी, डिजिटल युग है। पूरी दुनिया मानसिक तनाव में रहती है। मानसिक तनाव में शारीरिक श्रम और व्यायाम करने का समय कम मिलता है। हर व्यक्ति एक घंटा योग के लिए समय निकालें। खुद को स्वस्थ्य बनाने के लिए करना है। इससे किसी दूसरे को फायदा नहीं होने वाला है। देश स्वस्थ्य रहेगा तो देश विकसित बनेगा।

फैशन डिजाइनर विनिता हनुमान शनिधाम पहुंची

जोधपुर, (कासं)। प्रताप नगर स्थित हनुमान शनी धाम में हिंदुस्तान के प्रसिद्ध फैशन डिजाइनर विनिता भंसाली और उनके पति सुरेंद्र भंसाली दर्शनार्थ पहुंचे। उन्होंने यहां पूजा अर्चना कर विश्व शांति की प्रार्थना की।

मंदिर के पुजारी गोपाल महाराज ने उनका स्वागत किया। पंडित दामोदर भारद्वाज ने मंत्रोच्चार से पूजा संपन्न कराई। विनीता भंसाली ने बताया कि इस मन्दिर के बारे में बहुत सुना था। आज पहली बार यहां आना हुआ है। शनि भगवान के दर्शन से ही आत्मिक सुख की प्राप्ति हुई है। हमने यहां भगवान शनिदेव की पूजा अर्चना कर विश्व कल्याण की कामना की इस मंदिर में शनि भगवान की मूर्ति है अद्भुत है। तेलीन सवारी वाली इस प्रतिमा के दर्शन मात्र से आनन्द की प्राप्ति होती है।

उम्मेद सिंह पंवार, राजेश गुप्ता, भगवान राम राठौड़, थाना राम, संतोष, पूनमचंद डाबी, श्रीमती उमा डाबी, गणपत डाबी आदि उपस्थित थे।

खर्रा ने योग प्रश्नोत्तरी के विजेताओं को पुरस्कृत किया

पाली, (नि.स.)। जिला प्रशासन, आयुर्वेद विभाग एवं नगर निगम पाली के संयुक्त तत्वावधान में शनिवार को मुख्यालय के लाखोटिया उद्यान में 11 वां अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के जिला स्तरीय कार्यक्रम में हजारों लोगों ने प्रभारी मंत्री झाबर सिंह की मौजूदगी में प्रातः योग किया। योग दिवस की थीम एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग की रही। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के संदेश का प्रसारण किया गया।

प्रभारी मंत्री झाबर सिंह खर्रा ने इस अवसर पर कहा कि योग करने से तन और मन स्वस्थ रहता है आमजन को नित्य प्रतिदिन योग करना चाहिये।

आयुर्वेद विभाग के उपनिदेशक डॉ बजरंगलाल शर्मा व उपनिदेशक शिवकुमार ने बताया कि योग दिवस पर योग प्रशिक्षक द्वारा योग की विभिन्न मुद्राओं व आसनों के माध्यम से योग करवाया जो योग के कामन प्रोटोकाल के अनुसार किया गया।

इस अवसर पर बड़े, बुजुर्ग, बच्चे, महिलाओं ने भी योग किया।

जिले में पर्यटन व धार्मिक स्थलों रणकपुर, मानपुरा भाखरी, सोनाणा खेतलाजी, ओम आश्रम जाडन, जवाई आदि पर भी योग दिवस का आयोजन किया गया। साथ ही ब्लॉक, ग्राम पंचायत स्तर, आयुष्मान आरोग्य मन्दिर, सरकारी व गैर सरकारी संस्थानों, विद्यालयों, महाविद्यालयों तथा चिन्हित धार्मिक व पर्यटन स्थलों पर प्रातः 6 से 8 बजे जिसमें 6:30 से 7 बजे तक तत्पश्चात 7 से 7:45 तक आयुष मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा निर्धारित कॉमन योग प्रोटोकॉल अनुसार योगाभ्यास कर योग दिवस का आयोजन किया गया।

योग दिवस पर नशा मुक्त भारत अभियान व योग भी वोट भी के लिये जागरूकता की मंत्री खर्रा ने शपथ दिलायी। इस अवसर पर जिला प्रभारी मंत्री खर्रा ने योग दिवस के उपलक्ष्य में आयोजित की योग प्रश्नोत्तरी के विजेताओं को पुरस्कृत किया गया। साथ ही सेल्फी पाईंट आकर्षण का केन्द्र रहा।

इस मौके पर पूर्व विधायक ज्ञानचंद पारख, पाली जिले के लिये योग दिवस पर नियुक्त अधिकारी प्रबन्धक निदेशक राजस्थान सहकारिता व डेयरी फेडरेशन श्रुति भारद्वाज, जिला कलेक्टर लक्ष्मीनारायण मंत्री, पुलिस अधीक्षक चूनाराम जाट, प्रशिक्षु आई ए एस बिरजु चौधरी, पूर्व सभापति महेन्द्र बोहरा अतिरिक्त जिला कलेक्टर डॉ. बजरंग सिंह, एडीएम सीलिंग अश्विनी क पंवार, मुख्य कार्यकारी अधिकारी जिला परिषद मुकेश चौधरी, यूआयटी सचिव डॉ. पूजा सक्सेना, एसडीएम विमलेन्द्र राणावत, महाप्रबंधक जिला उद्योग केन्द्र रज्जाक अली, प्रदूषण नियंत्रण अधिकारी अमित सोनी, आयुक्त नगर निगम नवीन भारद्वाज, सीएमएचओ डॉ. विकास मारवाल, जिला शिक्षा अधिकारी राहुल राजपुरोहित, उपनिदेशक महिला बाल विकास राजेश, , सहित शहर के गणमान्य नागरिक व सुनील भंडारी, तिलोक चौधरी, पुखराज पटेल, मौजूद रहे।

आयुर्वेद चिकित्साधिकारी डा. शिवकुमार शर्मा ने बताया कि शहर की सामाजिक शैक्षणिक संस्थाओं ने विभिन्न सामाजिक भामाशाहों, विभिन्न सामाजिक संस्थाओं, स्वयं सेवी संगठनों ने भी सहयोग किया।

'योगाभ्यास का संचालन कवयित्री तृप्ति पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर सरस डेयरी ने छाछ व अन्न ने भी पेय व अन्य की व्यवस्था की। अन्य संगठनों ने भी सहयोग किया।

मंदबुद्धि मासूम तालाब में डूबा

जोधपुर, (कासं)। शहर के उम्मेद भवन के पीछे बने एक तालाब में मंदबुद्धि बच्चा गिर गया। पानी में डूबने से उसकी मौत हो गई। परिजन उसे तलाश करते तालाब तक पहुंचे तब उसका शव पानी में नजर आया।

रातानाडा पुलिस ने बताया कि गजराज भंडारी की टाळ, राइकाबाग निवासी 8 साल का दक्षित पुत्र भगराज मानसिक रूप से कमजोर था। वह दिन के समय में उम्मेद भवन के पीछे तालाब पर चला गया। जहां बाद में तालाब में गिर गया, जिससे पानी में डूबने से उसकी मौत हो गई। उसके पिता की तरफ से मर्ग में रिपोर्ट दी गई।

पौधारोपण किया

रेवदर, (निसं)। रेवदर के निकट भटाना कस्बे के पुलिस चौकी परिसर में शनिवार को पौधे लगाए गए।

चौकी प्रभारी ने बताया कि चौकी में समस्त स्टॉफ को दो दो पौधे गोद लेने के लिए कहा गया। सुबह शाम अपने अपने पौधों का देखभाल स्वयं करेंगे तो पौधे जल्द ही तैयार हो जाएंगे। भटाना सहकारी समिति अध्यक्ष गुलाब सिंह देवड़ा, युवा मोर्चा मंडल अध्यक्ष वि म सिंह राव, प्रभारी गणेश राम, कास्टेबल रोहिताश, सोहन लाल, सोमा राम, गणेश पुरोहित आदि मौजूद रहे।

योग दिवस मनाया

जालोर, (कासं)। जिला स्तरीय अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस शनिवार को प्रातः 7 बजे से प्रातः 8 बजे के मध्य शाह पूंजाजी गेनाजी स्टेडियम जालोर के बहुउद्देशीय भवन व सिरे मंदिर तलहटी में "एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य के लिए योग" की थीम पर मनाया गया।

जिला आयुर्वेद चिकित्सालय की योग चिकित्सक एवं योग प्रशिक्षकों के निर्देशन में योगाभ्यास करवाया गया। समारोह में मुख्य सचेतक जोगेश्वर गर्ग एवं प्रभारी सचिव विश्वमोहन शर्मा, जिला कलक्टर प्रदीप के. गावंडे, पुलिस अधीक्षक ज्ञानचंद्र यादव सहित जिला अधिकारी-कार्मिक, जनप्रतिनिधि व आमजन ने भाग लिया। जालोर जिले में जिला मुख्यालय के अतिरिक्त भीनमाल में जाकोब तालाब, राजकीय सीनियर सैकण्डरी स्कूल, क्षेमकरी माता मंदिर व नेहरू गार्डन, जसवंतपुरा में सुन्धा माता मंदिर व जसवंतपुरा मुख्यालय, सांचौर मुख्यालय पर राउमावि सांचौर सहित समस्त ब्लॉक एवं ग्राम पंचायत स्तर पर भी समारोह का आयोजन किया।

न्यायालय में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया

जालोर, (कासं)। जिला एवं सेशन न्यायालय परिसर जालोर में स्थित एडीआर हॉल में शनिवार को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। जिसमें न्यायिक अधिकारी अभिभाषक संघ के पदाधिकारी अधिवक्तागण एवं कर्मचारियों ने भाग लिया।

सेशन कोर्ट के प्रबंधक भूपेश व्यास ने बताया कि उच्चतम न्यायालय और उच्च न्यायालय के निर्देशानुसार समस्त जिला न्यायालयों में योग दिवस मनाए जाने का निर्देश दिया था। इसको लेकर शनिवार को जालोर जिला मुख्यालय पर सेशन कोर्ट परिसर में आयोजित योग दिवस कार्यक्रम में शिक्षाविद एवं योग शिक्षक संदीप जोशी ने विभिन्न प्रकार के योग एवं प्राणायाम का अभ्यास करवाया तथा स्वस्थ रहने के गुर सिखाए। कार्यक्रम के अंत में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव अहसान अहमद ने सभी का आभार ज्ञापित किया।

इस अवसर पर अतिरिक्त मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट द्वितीय अंकित दवे, जेजेबी के न्यायाधीश गजेंद्र कुमार, अभिभाषक संघ के अध्यक्ष देवेंद्र सिंह राठौड़, उपाध्यक्ष अश्विन राजपुरोहित, कोर्ट मैनेजर भूपेश व्यास, मुंसरीम धनराज खत्री, लोक अभियोजक ओमप्रकाश व्यास, डिफेंस काउंसिल अजहरुद्दीन खोखर, खुशवंत सिंह राठौड़, आमना सैयद समेत बड़ी संख्या में कर्मचारी उपस्थित रहे। आयोजित योग कार्यक्रम में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव अहसान अहमद, अति. मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट संख्या 02 अंकित दवे व किशोर न्याय बोर्ड न्यायाधीश गजेन्द्र कुमार एवं बार एसोसिएशन अध्यक्ष देवेंद्र सिंह राठौड की मौजूदगी में योग दिवस मनाया गया। इस दौरान योग प्रशिक्षक संदीप जोशी की ओर से योग के महत्व एवं योग क्रियाओं का अभ्यास करवाया गया। सचिव अहसान अहमद ने बताया कि वर्तमान समय तथा विशेषतः न्यायिक कार्य के दौरान अधिकारियों, अधिवक्ताओं व स्टाफ को तनाव व शारीरिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है जिससे निपटने में योग से बेहतर कोई तरीका नहीं है। इसलिए योग को दैनिक जीवन का हिस्सा बनाना चाहिये। उन्होंने योग के महत्व एवं उनके फायदों के बारे में बताया। न्यायालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साह से योग किया।

पुलिस के खिलाफ सरपंच का प्रदर्शन

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर के ओसियां में शुक्रवार शाम को एक अनोखा विरोध प्रदर्शन देखने को मिला,

धोलिया नगर ग्राम पंचायत के सरपंच गणेश धतरवाल पुलिस के वायरलैस ट्रांसमिशन टावर पर चढ़ गए। सरपंच का आरोप है कि गुरुवार को उनके साथ मारपीट की गई, लेकिन पुलिस ने उनकी रिपोर्ट दर्ज नहीं की।

इसके उलट विपक्षी अर्जुनराम की शिकायत पर उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज कर ली गई। शुक्रवार शाम को ओसियां थाने पहुंचे सरपंच धतरवाल अचानक वायरलैस ट्रांसमिशन टावर पर चढ़ गए। बड़ी संख्या में लोग मौके पर जमा हो गए। टावर पर चढ़े सरपंच की मांग है कि जब तक उनके साथ मारपीट करने वालों को गिरफ्तार नहीं किया जाता और खुद पुलिस अधीक्षक यहां नहीं पहुंचेंगे, तब तक वो नीचे नहीं उतरेंगे। इसके बाद पुलिस अधिकारियों ने कई घंटे तक समझाइश की, तब कहीं जाकर रात 10:30 बजे सरपंच नीचे उतरे।

ओसियां थानाधिकारी राजेंद्र चौधरी का कहना है कि मारपीट की कोई रिपोर्ट नहीं मिली है। उन्होंने आश्वासन दिया कि शिकायत मिलने पर जांच कर दोषियों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। वहीं, मामले की जानकारी मिलने के बाद ग्रामीण पुलिस के एएसपी भी ओसियां पहुंचे। सरपंच के नीचे उतरने के बाद रिपोर्ट मिलने पर पुलिस ने एफआईआर दर्ज की।

मानसिक व आत्मिक शांति के लिए योगाभ्यास किया

जालोर, (कासं)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर माली समाज सेवा संस्थान जालोर की ओर से भव्य योग कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में समाज के लोग शामिल हुए और योग के माध्यम से शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य लाभ प्राप्त किया। वहीं पौधारोपण कर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया।

कार्यक्रम का संचालन योग शिक्षक मूलाराम गहलोत द्वारा किया गया, जिन्होंने प्रतिभागियों को विभिन्न योगासन करवाते हुए योग के लाभों की जानकारी दी। कार्यक्रम में समाज के वरिष्ठ नागरिकों से लेकर युवाओं ने हिस्सा लिया।

इस अवसर पर माली समाज पांच पट्टी ठाकुरद्वारा के अध्यक्ष भोमाराम सुन्देशा, पूर्व अध्यक्ष पन्नालाल सोलंकी, पूर्व अतिरिक्त जिला शिक्षा अधिकारी मुकेश सोलंकी, छात्रावास अधीक्षक मूलाराम गहलोत, जूठाराम सोलंकी, लक्ष्मण सांखला, रणछोडा राम, लालचंद माली, कुयाराम, छगनलाल सुन्देशा, राजकुमार चौहान, ललित सुन्देशा, ओमप्रकाश परिहार, महेन्द्र गहलोत, मंगलाराम गहलोत, विजय सोलंकी, सीए शंकर सुन्देशा, शंकर सोलंकी सहित अनेक समाजबंधु उपस्थित रहे। वहीं संस्थान के अध्यक्ष सीए नितिन सोलंकी ने इस अवसर पर शिक्षा व स्वास्थ्य के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सभी को योग को दैनिक जीवन में अपनाने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि "योग न केवल शरीर को स्वस्थ रखता है, बल्कि यह मानसिक संतुलन और आत्मिक शांति भी प्रदान करता है।" कार्यक्रम के पश्चात माली समाज छात्रावास परिसर में पौधारोपण कार्यक्रम भी आयोजित किया गया, जिसमें विभिन्न प्रकार के पौधे लगाकर पर्यावरण संरक्षण का संदेश दिया गया और प्रकृति के प्रति समाज की जागरूकता को दर्शाया गया। यह आयोजन समाज में स्वास्थ्य जागरूकता और पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रेरणादायक पहल साबित हुआ।

मुख्यमंत्री मंत्री भजनलाल शर्मा के धार्मिक स्थलों पर योग दिवस मनाने के निर्देशों की पालना में सिरे मंदिर तलहटी जालोर पर योग दिवस कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम प्रभारी डॉ. नरेन्द्र आचार्य ने बताया कि सिरे मंदिर तलहटी पर योग दिवस की सभी तैयारियां की गई परंतु कार्यक्रम के समय तेज बरसात होने के कारण कार्यक्रम को नजदीकी आदर्श विद्या मंदिर विद्यालय के हॉल में किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि आयुर्वेदाचार्य डॉ. श्री राम रहे एवं अध्यक्षता आदर्श शिक्षण संस्थान के अजय कुमार गुप्ता ने की। कार्यक्रम में निर्धारित प्रोटोकॉल के अनुसार आसान एवं प्राणायाम कराए गए। योग प्रशिक्षक गौरव माथुर एवं कैलाश कुमार ने योगाभ्यास करवाया। डॉ. नरेन्द्र आचार्य ने योग को जीवन का महत्वपूर्ण अंग बताते हुए सभी लाभार्थियों को वर्ष पर्यंत योग करने की शपथ दिलवाई। इस अवसर पर आदर्श विद्या मंदिर के शिक्षक गण एवं विद्या भारती विद्यालय के छात्र उपस्थित रहे।'

सुपार्श्वनाथ राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय रामसीन में किया गया। प्रधानाचार्य जबर सिंह देवड़ा ने बताया कि इस अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में योग शिक्षक मफा राम प्रजापत एवम संदीप कुमार द्वारा विभिन्न योगासन एवम प्राणायाम करवाये गए। इस अवसर पर देवड़ा ने भारत की प्राचीन योग प्रणाली पर प्रकाश डालते हुए कहा कि योग से जीवन मे सुख, शांति, प्रेम एवम पवित्रता की शक्ति आती है। शारीरिक, मानसिक एवम आध्यात्मिक स्वास्थ्य लाभ होते है। उप तहसीलदार रूपाराम, थानाधिकारी तेजु सिंह, छगन लाल घांची, पूर्व सरपंच विजय कुमार प्रजापत, शांति लाल सुथार, विजय प्रजापत, मधुर श्याम वैष्णव, सुरेश टेलर, भूपेंद्र कुमार, जोगा राम, कालू राम, डूंगर सिंह, लक्ष्मण कुमार, सुरेश कुमार, ,केवा राम, , सुरता राम, लीला राम आशा सहयोगी सविता देवी, अंजू देवी, रेखा देवी एवम सविता प्रजापत सहित ग्रामवासी एवं उप तहसील क्षेत्र के विभिन्न विभागों के स्टॉफ उपस्थित थे।

गुड़ामालानी में योग दिवस पर कार्यक्रम हुआ

गुड़ामालानी, (कासं)। राजकीय महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम विद्यालय परिसर गुड़ामालानी में 11 वा अंतरराष्ट्रीय योग दिवस हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। योगाभ्यास करने वाले बुद्धिजीवी वर्ग के लोगों ने प्रधानमंत्री के सम्बोधन को सुना।

योग दिवस कार्यक्रम उपखंड अधिकारी केशव कुमार मीणा, नगरपालिका ईओ सुरेश कुमार जीनगर, प्रधान बिजलाराम चौहान सीबीईओ ओमप्रकाश कड़वासरा, तहसीलदार, राजेश व्यास, पुलिस उपाधीक्षक सुखाराम विश्नोई, ब्लॉक नोडल योग प्रभारी आयुर्वेदिक डॉ करनाराम चौधरी के निर्देशन में हुआ। योगाभ्यास वरिष्ठ शारीरिक शिक्षक मोहनलाल गोयल, पदमाराम चौधरी, महिला योग प्रशिक्षक वर्षा विश्नोई द्वारा करवाया गया।

योग दिवस कार्यक्रम के दौरान उपखंड अधिकारी केशव कुमार मीणा ने योग करने की शपथ दिलाई एवं कहा कि इंसान को अपनी निजी दिनचर्या में सुबह समय निकालकर योग करना जरूरी है। प्रधान बिजलाराम चौहान ने कहा कि योग शरीर के लिए एक उपयोगी औषधि है।

कार्यक्रम में डॉ बाबूलाल मीणा, प्रशासन अधिकारी लक्ष्मीनारायण, सहायक विकास अधिकारी आईदानराम सिंधप, महिला एवं बाल विकास लक्ष्मी चौधरी, अध्यापक अचलाराम बोस, वेहनाराम सोनगरा, आंगनवाडी कार्यकर्ता कमलेश विश्नोई, पुर्णेश चौधरी, धनराज शर्मा, भरत जैन, केवलचन्द सखलेचा सहित प्रशासनिक अधिकारियों एवं स्वास्थ्य विभाग, शिक्षा विभाग, जलदाय विभाग, आंगनवाड़ी कार्यकर्ता महिलाएं पुलिस विभाग एवं गांव के लोग उपस्थित रहे।

पारंपरिक जल स्रोत हमारी परंपरा के द्योतक : गणपतसिंह मंडलावत

जालोर, (कासं)। पारंपरिक जल स्रोत हमारी सभ्यता और संस्कृति के प्रतीक है, पौराणिक जल स्रोतों का संरक्षण किया जाना भारतीय सभ्यता और हमारी ग्रामीण संस्कृति के लिए आपसी सामाजिक सरोकार की परंपरा को बल प्रदान करता है। भौतिकवाद और सुविधाओं के इस युग में इन जल स्रोतों को नजरअंदाज करना हमारी पौराणिक व्यवस्था पर कुठाराघात है। यह बात शारीरिक शिक्षक संघ सचिव एवं शिक्षक संघ राष्ट्रीय के जिला सह संगठन मंत्री गणपतसिंह मंडलावत ने पांणवा गांव में श्रमदान कार्यक्रम के दौरान कही।

ग्राम पंचायत ओडवाडच सरपंच लक्ष्मण पटेल की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में वंदे गंगा जल संरक्षण जन श्रमदान अभियान के तहत पांडवों द्वारा निर्मित पौराणिक मान्यता अनुसार पांडव सरोवर पांणवा में विद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं ग्रामीणों सहित महिलाओं ने जनप्रतिनिधियों की उपस्थिति में श्रमदान का श्री गणेश करते हुए इस ऐतिहासिक धरोहर के संरक्षण की अपील की।

प्राचीन मान्यता के अनुसार गांव के इस सार्वजनिक तालाब का पवित्र सरोवर के रूप में पांडवों ने अज्ञात वास के दौरान यहां निर्माण करवाया था। पटेल ने बताया कि आज भी इस तालाब के घाट का निर्माण बड़े-बड़े पत्थरों से मौजूद है जो आज मरम्मत मांग रहे है लेकिन केवल मानवीय श्रमदान से संभव नहीं है।

नजदीकी रायथल ग्राम में पांडेश्वर महादेव मंदिर की भी स्थापना भी इसी कालखंड में पांडवों द्वारा की गई थी। भाजपा के वरिष्ठ नेता महावीरसिंह पांणवा के अनुसार विगत लंबे समय से इस तालाब के संरक्षण और संवर्धन हेतु सार्थक प्रयास किये जा रहे हैं सरकार द्वारा और विशेष ध्यान देने से पौराणिक स्रोतों का संरक्षण होगा।

कार्यक्रम के दौरान सरपंच लक्ष्मण पटेल, ठाकुर लक्ष्मणसिंह, वार्ड पंच हरि लक्ष्मणसिंह, मूलाराम, तीजो देवी भंवरसिंह, देवीसिंह परिहार, देवाराम, हनुमान घांची, कपूराराम चौधरी सहित ग्रामीण जन एवं सैकड़ों महिलाएं कार्यक्रम में उपस्थित रही।

बस और दो कारों की भिड़ंत में एक ही परिवार के चार लोगों की मौत

हादसे में तीन वर्षीय बच्ची सहित एक महिला गंभीर रुप से घायल हो गई

डीडवाना-कुचामन/ जयपुर। डीडवाना-कुचामन जिले के परबतसर थाना इलाके के हनुमानगढ़-किशनगढ़ मेगा हाइवे पर बस और दो कारों की भिड़ंत में एक परिवार के चार लोगों की मौत हो गई। वहीं हादसे में तीन वर्षीय बच्ची सहित एक महिला गंभीर रुप से घायल हो गई। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती करवाया। पुलिस ने मौके पर क्रेन की मदद से वाहनों को हटाया और ट्रैफिक सुचारू कराया।

भीषण हादसे में कार पूरी तरह से चकनाचूर हो गई।

- हादसा परबतसर थाना इलाके के हनुमानगढ़-किशनगढ़ मेगा हाइवे पर हुआ
- स्विफ्ट कार में सवार लोग मूल रूप से रावतसर के रहने वाले हैं, जो किशनगढ़ (अजमेर) में रहते हैं

अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक जिनेन्द्र जैन ने बताया कि हादसा शनिवार दोपहर पौने दो बजे हाइवे पर परबतसर में आईटीआई कॉलेज के सामने हुआ था, जहां सतनाम साखी ट्रैवल्स की स्लीपर बस किशनगढ़ की तरफ जा रही थी। इस दौरान पीछे से आई किआ कार ने बस को ओवरटेक किया। किआ कार सामने से आ रही स्विफ्ट से टकरा गई। टक्कर के बाद स्विफ्ट बस से भिड़ गई। स्विफ्ट कार किशनगढ़ से डीडवाना की तरफ जा रही थी।

मौके पर जुटे लोगों ने परबतसर पुलिस और एम्बुलेंस को सूचना दी। घायलों को परबतसर राजकीय उप जिला अस्पताल ले गए जहां डॉक्टरों ने कोलिया (डीडवाना) निवासी प्रीति सांसी (24), भोमपुरिया (हनुमानगढ़) निवासी सुभाष सांसी (20) व शीशपाल सांसी (50) और रूलानिया (सीकर) निवासी राधेश्याम रायका (32) मृत घोषित कर दिया। वहीं गंभीर घायल तुलसी देवी और उनकी दोहिती परी (3) को अजमेर जिला अस्पताल रेफर किया गया। वहीं किआ कार में सवार किसी भी व्यक्ति को चोट नहीं आई। हालांकि कार कुछ डैमेज हो गई। स्विफ्ट कार में सवार सभी लोग मूल रूप से रावतसर (हनुमानगढ़) के रहने वाले हैं। वे फिलहाल किशनगढ़ (अजमेर) रहते हैं।

गेहूं के कट्टे चुराने के मामले में नकबजन गिरफ्तार

रेनवाल थाना पुलिस ने चोरी के आरोपी का गिरफ्तार किया।

- गेहूं के कट्टे बरामद कर वारदात में प्रयुक्त वाहन जब्त किया

सांभरझील, (निसं)। आटा चक्की के गोदाम में रखे गेहूं के कट्टे चोरी करने के मामले में पुलिस थाना रेनवाल ने एक नकबजन को गिरफ्तार किया तथा अपराध में संलिप्त विधि से संघर्षरत एक बालक को भी निरुद्ध किया है।

आनंद शर्मा सह पुलिस अधीक्षक जयपुर ग्रामीण ने बताया है कि 22 मई को परिवादी ओमप्रकाश पुत्र मेवाराम यादव निवासी समदड़ी थाना रेनवाल जिला जयपुर ने रिपोर्ट दर्ज करवाई कि रात्रि को रावण मैदान कस्बा रेनवाल के पास स्थित परिवादी की आटा चक्की से अज्ञात चोर गेहूं से भरे 20 कट्टे चुराकर ले गये हैं तथा परिवादी कार्तिक खटोड पुत्र शंकर लाल महाजन निवासी गिरीराज नगर पत्थर मण्डी वार्ड नं. 14 कस्बा रेनवाल थाना रेनवाल ने रिपोर्ट दर्ज करवाई कि रात्रि में अज्ञात चोरों द्वारा गोदाम के ताले तोड़कर एक पिकअप माल बिलोना खल एंव काकड़ा की करीब 75 से 85 नग चोरी कर ले गये हैं। प्रकरण की गंभीरता को दखते हुये नकबजनी की वारदातों का खुलासा करने के लिए गठित टीम द्वारा नकबजनी की वारदात करने वाले आरोपियों का पता लगाकर वारदात में संलिप्त नकबजन बाबूलाल कुमावत को गिरफ्तार किया व विधि से संघर्षरत एक बालक को निरुद्ध किया गया है। आरोपियों से पूछताछ की तो उक्त दोनों वारदात के अलावा इलाका रेनवाल से एक पिकअप चोरी की वारदात करना भी बताया है। आरोपियों की निशानदेही से चोरी किए गए 10 गेहूं के कट्टे बरामद कर वारदात में प्रयुक्त वाहन महिन्द्रा पिकअप जब्त की है। वारदात में प्रयुक्त वाहन पिकअप भी आरोपियों ने चोरी करना बताया है जिसके संबंध में पूछताछ की जा रही है। प्रकरण में शेष आरोपियों की तलाश व अनुसंधान जारी है।

थाना अधिकारी रेनवाल देवेंद्र चावला ने बताया कि आरोपियों द्वारा वारदात कारित करने के लिए पहले पिकअप वाहन चुराते हैं तथा उसके बाद एकत्रित होकर उसी चुराये गये पिकअप वाहन का प्रयोग कर घटना को अंजान देते हैं। इस मामले में पुलिस ने आरोपी बाबूलाल कुमावत निवासी लुणियावास थाना रेनवाल, जयपुर व एक विधि से संघर्षरत बालक को निरूद्ध किया है।

जोधपुर में तेज बरसात होने से निचले स्थानों पर पानी भरा

- जोधपुर सहित मारवाड़ में भी पिछले तीन-चार दिनों से बारिश का दौर बना हुआ है

जोधपुर, (कासं)। तीन महिनों की भीषण गर्मी और उमस की मार झेल रहे मारवाड़ में अब दक्षिण पश्चिमी मानसून छा गया है। मानसून की एंट्री प्रदेश में होने के साथ ही अधिकांश हिस्सों में अब मानसूनी बारिश होने लगी है। जोधपुर सहित मारवाड़ में भी पिछले तीन-चार दिनों से बारिश का दौर बना हुआ है। शनिवार की सुबह आसमान पर छाई काली घटाओं ने कभी तेज तो कभी रिमझिम बारिश की झड़ी लगा दी। शहर के कई स्थानों पर सड़कों पानी से लबालब हो गई तो कई निचले स्थानों पर पानी भी जमा हो गया। विशेषकर हर बार की भांति बनाड़ रोड भी काफी पानी जमा होने से आवागमन बाधित हो गया।

जानकारी के अनुसार शनिवार सुबह छह बजे से शुरू इुई मानसूनी बारिश का दौर दोपहर 12 बजे तक कभी तेज तो कभी रिमझिम के रूप में बना रहा। इधर बारिश होने के साथ ही मौसम भी खुशनुमा बन गया। आसमान में काली घटाएं छाई होने के साथ शहर के पर्यटन स्थलों पर भी रौनक देखने को मिली है। मौसम विभाग की मानें तो आगामी 24 घंटे में मारवाड़ में भारी से अतिभारी बारिश की संभावना बनी है। वहीं जोधपुर सहित ग्रामीण क्षेत्रों में भी अच्छी बारिश हुई है। किसानों के चेहरे भी खिल गए हैं।

अवैध चरस व गांजा जब्त, दो आरोपी गिरफ्तार

उदयपुर, (निसं)। गोवर्धन विलास एवं डीएसटी टीम ने संयुक्त कार्रवाई करते हुए अवैध चरस व गांजा जब्त कर दो आरोपियों को गिरफ्तार किया।

जिला पुलिस अधीखक योगेश गोयल के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक गोपाल स्वरूप मेवाड़ा, पुलिस उप अधीक्षक सूर्ववीरसिंह के सुपरविजन में डीएसटी टीम प्रभारी श्यामसिंह एवं टीडी थाना अधिकारी देवेन्द्रसिंह, गोवर्धन विलास थाना इंचार्ज अर्जुनलाल सालवी मय टीम ने गोवर्धन विलास ट्रांसपोर्ट नगर क्षैत्र में दो संदग्धि व्यक्तियों को रोक पूछताछ की तो एक ने अपना नाम न्याज मोहम्मद उर्फ न्याजू पुत्र बसीर मोहम्मद निवासी नेला गोवर्धन विलास व अनिल सिंह पुत्र सुरेन्द्रसिंह निवासी विजयसिंह पथिक नगर राडाजी मंदिर के पास सविना को बताया। इस पर पुलिस ने दोनों की तलाशी ली तो न्याज मोहम्मद के कब्जे से 300 ग्राम अवैध गांजा तथा अनिलसिंह के कब्जे से 30 ग्राम चरस मिली, जिसे जब्त कर दोनों आरोपियों को गिरफ्तार कर प्रकरण दर्ज किया। न्याज मोहम्मद के खिलाफ करीब 16 अपराधिक प्रकरण दर्ज हैं।

जानलेवा हमले के दो दोषियों को दस-दस साल की सजा सुनाई

- मामले में 22 गवाहों के बयान दर्ज किये

कोटा, (निसं)। जानलेवा हमले के करीब साढ़े नौ साल पुराने मामले में अपर सेशन न्यायाधीश क्रम-4 न्यायालय ने सुनवाई करते हुए दो आरोपियो को दोषी मानते हुए 10-10 साल की सजा सुनाई। एडीजे क्रम-4 न्यायालय के न्यायाधीश ने हत्या का प्रयास करने के मामले में पकड़े गये आरोपी किशोरपुरा निवासी जुबेर (39) व शिवपुरा दादाबाड़ी निवासी शाहिद खान उर्फ चिल्ली (39) को दोषी मानते हुए 10-10 साल की सजा सुनाई। साथ ही दोनों को 20-20 हजार के अर्थदंड से दंडित किया। मामले के अनुसार परिवादी अब्दुल हनीफ ने महावीर नगर थाने में रिपोर्ट दी थी।

फरियादी ने रिपोर्ट में कहा कि केशवपुरा सेक्टर-6 बालाकुण्ड चौराहे पर उसकी एक किराये का नौनवेज रेस्टोरेंट है। परिवादी ने रिपोर्ट में कहा कि 17 अगस्त 2015 की रात्रि करीब दस बजे शाहिद चिल्ली अपने तीन दोस्तों के साथ होटल पर आया और उसको खाना लगाने के लिये कहा साथ ही उसने शराफत भाई के बारे में पूछताछ की, जिस पर फोन लगाकर उसकी शराफत से बात कराई। रिपोर्ट में कहा कि करीब 15 मिनट बाद शराफत रेस्टोरेंट पर आया और दुकान पर खड़े शाहिद चिल्ली से बात करने चला गया। एक दो मिनट बाद शराफत के चिल्लाने की आवाज आई बचाओ, बचाओ मुझे गोली मार दी, शराफत की आवाज सुनकर नौकर के साथ मौके पर पहुंचा तो देखा कि शराफत के पेट से खून बह रहा था। उसे तुरंत अस्पताल पहुंचाया। पुलिस ने परिवादी की शिकायत पर मामला दर्ज कर मामले में अनुसंधान करते हुए शाहिद खान उर्फ चिल्ली, जुबेर एवं दो अन्य अनवर उर्फ गुड्डु व आरिफ हुसैन के खिलाफ मामला दर्ज किया। पुलिस ने मामले में अनुसंधान के बाद आरोपियों के खिलाफ कोर्ट में चालान पेश किया। मामले में सुनवाई के दौरान न्यायालय ने शाहिद खान उर्फ चिल्ली एवं जुबेर को दोषी मानते हुए 10-10 साल की सजा सुनाई। मामले में 22 गवाहों के बयान दर्ज किये गये।

जालोर में बारिश से तापमान में गिरावट आई

जालोर, (कासं)। जालोर जिले में शनिवार को मानूसन की सक्रियता के चलते रुक-रुककर लगातार बारिश होने से मौसम सुहावना बन गया। वहीं लोगों ने सुहावने मौसम का जमकर लुत्फ उठाया। जालोर में करीब 10 एमएम बारिश दर्ज की गई।

जालोर में शनिवार अलसुबह रिमझिम बारिश का दौर शुरु हुआ, जो दिनभर कभी तेज तो कभी रुक-रुककर जारी रहा। दिनभर आसमान में बादल छाये रहने के साथ मौसम खुशनुमा बना रहा। रिमझिम बारिश के चलते शहर के कई इलाकों में पानी तेज गति से बहता नजर आया। वहीं शहर के निचले इलाको में पानी भर जाने से लोगों को आवागमन में काफी दिक्कतों का सामना करना पड़ा। नगरपरिषद व पीडब्ल्यूडी विभाग की लापरवाही की चलते कई इलाकों व मुख्य मार्गों में निकासी नहीं करने से पानी सड़कों पर भरा नजर आया। जिससे सड़कों पर गंदगी पसरी होने से आम राहगीरों को परेशानी का सामना करना पड़ा। बारिश के बाद किसानों के चेहरों पर खुशी देखी गई। जालोर में लगातार दो दिन से मानसूनी बारिश के चलते तापमान में गिरावट देखी गई। कई जगह नदी नालों में भी पानी की आवक देखी गई। जिलेभर में बारिश होने से लोगों ने गर्मी व तापमान से राहत पाई।

धोखाधड़ी का फरार इनामी आरोपी गिरफ्तार

बौंली-बामनवास, (निसं)। भरतपुर रेंज पुलिस महानिरीक्षक राहुल प्रकाश के आदेशानुसार एवं सवाई माधोपुर जिला पुलिस अधीक्षक ममता गुप्ता के निर्देशन में चलाए जा रहे वांछित अपराधियों की धरपकड़ अभियान के तहत बौंली थाना पुलिस ने धोखाधड़ी के दर्ज मामले में 14 वर्ष से फरार 15 हजार के इनामी आरोपी रमेश चंद्र बैरवा निवासी चांदनहोली थाना बाटोदा को गिरफ्तार किया है।

थाना बौंली के हैड कांस्टेबल धर्मेंद्र चौधरी ने बताया कि 2 जून 2011 को हनुमान, छोटूलाल व दीपचंद बैरवा निवासी महेसरा थाना बौंली ने न्यायालय में आरोपी गंगासहाय व रमेशचंद्र बैरवा निवासी चांदनहोली के विरुद्ध विदेश भेजने के नाम पर प्रति व्यक्ति 15-15 लाख रुपए ठगी करने बाबत न्यायालय में ईस्तगासा पेश किया था, जिस पर थाना बौंली में आरोपियों के विरुद्ध अभियोग दर्ज किया जाकर आरोपी गंगा सहाय बैरवा को 12 जून 2011 को गिरफ्तार किया गया जिसे न्यायालय द्वारा दो वर्ष की सजा हो चुकी है। इस मामले में आरोपी रमेश बैरवा चारों प्रकरण में 14 वर्ष से घर से फरार चल रहा था, जिसको पिछले 14 वर्षों से विभिन्न पुलिस टीमों द्वारा जयपुर, दिल्ली, हरियाणा, नोएडा व अन्य राज्यों में भी काफी तलाश किया गया लेकिन अब तक भी कोई पता नहीं लगने पर पुलिस अधीक्षक सवाई माधोपुर द्वारा 15 हजार का इनाम घोषित किया गया था। इस मामले को लेकर सवाई माधोपुर साइबर सेल व थाना बाटोदा के कांस्टेबल सुरेश कुमार द्वारा तकनीकी स्त्रोतों से जानकारी एकत्रित कर टीम ने पता लगाया कि आरोपी वर्तमान में जयपुर में काम कर रहा है। इस पर बौंली थाने से सहायक उप निरीक्षक रूप सिंह, हैड कांस्टेबल योगेंद्र शर्मा, कांस्टेबल संदीप बुरडक, कांस्टेबल रिछपाल व जितेंद्र की टीम ने 20 जून को आरोपी को जेएनयू यूनिवर्सिटी से गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया। न्यायालय आरोपी को न्यायिक अभिरक्षा में भेज दिया।

हथियार के साथ हिस्ट्रीशीटर गिरफ्तार

बीकानेर, (निसं)। पुलिस ने व्यास कॉलोनी थाना क्षेत्र से दो बड़े हिस्ट्रीशीटरों और देशनोक से एक एचएस को देशी पिस्टल के साथ गिरफ्तार किया। हथियार के साथ पकड़ा गया पलाना निवासी रतनसिंह रोहित गोदारा का गुर्गा है। एडीशनल एसपी सौरभ तिवाड़ी ने बताया कि डीएसटी व जेएनवीसी पुलिस ने संयुक्त कार्यवाही करते हुए राज्यस्तरीय और देशनोक थाने के हिस्ट्रीशीटर हरि कड़वासरा उर्फ हरिया निवासी पलाना को व्यास कॉलोनी से गिरफ्तार किया। आरोपी हरियाणा के भिवानी थाने में 2019 में दर्ज हुए शराब के मामले में फरार चल रहा था, जिसे हरियाणा पुलिस के सुपुर्द किया गया है। आरोपी के खिलाफ मर्डर, लूट, डकैती, आर्म्स एक्ट समेत 30 मुकदमे सरदारशहर, लोहावट, बीदासर, हरियाणा (भिवानी) सहित जिले के अलग-अलग थाने में दर्ज है। इसी प्रकार नापासर थाने के एचएस विजय गोदारा को पुलिस ने व्यास कॉलोनी से देशी पिस्टल के साथ गिरफ्तार किया। आरोपी गोदारा के खिलाफ 15 मामले दर्ज हैं। तीसरी कार्रवाई पुलिस ने देशनोक में की। यहां से पलाना निवासी रतनसिंह को देशी पिस्टल के साथ गिरफ्तार किया।

घायल श्रमिक की मौत : उदयपुर के गोगुंदा थाना क्षैत्र में बस की टक्कर से घायल बाइक सवार श्रमिक की मौत हो गई। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार गत दिनों गोगुंदा थाना क्षैत्र बस की टक्कर से घायल डूगरियावास ओगणा निवासी बसंतीलाल पुत्र शंकरलाल गमेती की मौत हो गई। बसंतीलाल मजदूरी क ता था एवं 18 जून को बाइक से गोगुंदा से घर जा रहा था। जहां बीच रास्ते में हादसा हो गया। हेड कां. चरणसिंह ने मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया।

बाइक चोर गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। सुल्तानपुर पुलिस टीम ने मोटरसाइकिल चोरी की दर्ज रिपोर्ट पर चोरी की मोटरसाइकिल सहित आरोपी को गिरफ्तार किया है। ग्रामीण पुलिस अधीक्षक सुजीत शंकर ने बताया कि 9 जून को फरियादी पुरूषोतम ने थाने में रिपोर्ट दी। फरियादी ने रिपोर्ट में कहा कि गौशाला के पास भौंरा रोड़ सुल्तानपुर में खड़ी मोटरसाइकिल को अज्ञात चोर चोरी करके ले गया। ग्रामीण एसपी ने बताया कि फरियादी की रिपोर्ट पर मामला दर्ज किया गया। मोटरसाइकिल चोरी का खुलासा करने के लिये पुलिस उपअधीक्षक इटावा शिवम जोशी के निर्देशन में थानाधिकारी सत्यनारायण मालव के नेतृत्व में टीम का गठन किया गया। ग्रामीण एसपी ने बताया कि गठित टीम ने मामले में माली मोहल्ला सुल्तानपुर निवासी दीपक सैन (25) को गिरफ्तार किया। ग्रामीण एसपी ने बताया कि पकड़े गये आरोपी के पास से चोरी की गई मोटरसाइकिल को बरामद किया गया।

हथियार सहित एक गिरफ्तार

कोटा, (निसं)। गुमानपुरा पुलिस टीम ने इलाके में गश्त के दौरान मुखबीर की सूचना पर अवैध देशी कट्टा व जिंदा कारतूस सहित आरोपी को गिरफ्तार किया है। गुमानपुरा थानाधिकारी अनिल कुमार टेलर ने बताया कि गुमानपुरा इलाके में गश्त के दौरान मुखबीर की सूचना पर छत्रपुरा निवासी अल्फेज अहमद को अवैध देशी कट्टा व जिंदा कारतूस सहित आर्म्स एक्ट में गिरफ्तार किया। आरोपी से अनुसंधान जारी है।

बारिश से सड़कें जर्जर

भरतपुर, (निसं)। भरतपुर शहर में मानसून की बारिश ने करोड़ों रुपये की लागत से बनी सड़कों की पोल खोल दी है। खासतौर पर हीरादास-गोलपारा बायपास रोड पर कीचड़ और बारिश का पानी जमा होने से राहगीरों और वाहन चालकों की मुश्किलें बढ़ गई हैं। दो साल पहले 5.11 करोड़ रुपये की लागत से बनी यह सड़क एक महीने में ही उखड़ने लगी थी। अब हालात ऐसे हैं कि जगह-जगह गड्ढों में पानी भरने और कीचड़ के कारण लोग फिसलकर घायल हो रहे हैं। स्थानीय लोग कई बार शिकायत कर चुके हैं, लेकिन प्रशासन अब तक बेपरवाह बना हुआ है। स्थानीय लोगों ने बताया कि हीरादास-गोलपारा बायपास रोड का निर्माण दो साल पहले 5 करोड़ 11 लाख रुपए की लागत से हुआ था। सड़क एक माह निर्माण के बाद ही उखड़ने लगी थी। मानसून से पहले ठेकेदार ने सीवरेज लाइन डालने का काम शुरू किया तो सड़क को जगह जगह से खोद डाला। उसके बाद मानसून की पहली बारिश से कई जगह डामरीकरण की सड़क टूट गई।

युवक की संदिग्ध मौत

उदयपुर, (निसं)। गोगुन्दा कस्बे में कार चालक की संदग्धि मौत हो गई। पुलिस से प्राप्त जानकारी के अनुसार चांदपोल निवासी गौतम कुमावत (41) पुत्र ललित कुमार की शुक्रवार रात में संदग्धि हालत में मौत हो गई। गौतम प्रोपर्टी का काम करता था एवं शुक्रवार दोपहर में कार लेकर घर से निकला था। घर नहीं पहुंचने पर परिजनों ने मोबाइल पर फोन किया लेकिन जवाब नहीं मिला। इस पर तलाश के लिए गोगुंदा टोल नाके की तरफ परिजन पहुंचे, जहां कार में गौतम अचेत अवस्था में पड़ा था, जिसे परिजन उपचार के लिए एमबी चिकित्सालय ले गए, जहां चिकित्सकों ने उसे मृत घोषित कर दिया। सूचना मिलने पर गोगुन्दा पुलिस थाने के हे डकांस्टेबल चरणसिंह ने मृतक का पोस्टमार्टम करवा शव परिजनों को सौंप दिया। पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने पर ही मृत्यु के कारणों का पता चल पाएगा। पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर जांच शुरू की।

'जल स्त्रोतों की नियमित सफाई से जल संरक्षण को बढ़ावा मिलेगा'

जिला प्रभारी मंत्री जवाहर सिंह बेढम ने 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर गंभीर नदी के तट पर पहुंचकर श्रमदान किया।

- जिला प्रभारी मंत्री जवाहर सिंह बेढम ने गंभीर नदी पर श्रमदान किया

करौली, (निसं)। गृह, गोपालन, पशुपालन, डेयरी एवं मत्स्य विभाग के राज्यमंत्री एवं जिला प्रभारी मंत्री जवाहर सिंह बेढम ने 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर शनिवार को गंभीर नदी के तट पर पहुंचकर श्रमदान किया। श्रमदान कर आमजन से अपील की कि कि वे अपने आसपास स्थित नदी, नाले, पोखर, नहर, बावड़ी और तालाब जैसे पारंपरिक जल स्त्रोतों की स्वेच्छा से सफाई करते रहें, जिससे वर्षा जल का संचय सुचारु रूप से हो सके और स्थानीय भू-जल स्तर में वृद्धि संभव हो ताकि आने वाले समय में जिलेवासियों को किसी भी प्रकार के जलसंकट का सामना नहीं करना पड़े।

उन्होंने यह भी कहा कि स्थानीय जनप्रतिनिधि,अधिकारी एवं कर्मचारी गंभीर नदी सहित अन्य जल स्त्रोतों की सफाई कार्य में सक्रिय रूप से भाग लें, ताकि स्वच्छ जल की उपलब्धता सुनिश्चित की जा सके। जिला प्रभारी मंत्री ने कहा कि जल स्त्रोतों की नियमित सफाई से जल संरक्षण को बढ़ावा मिलेगा, जिससे भविष्य में जल संकट की स्थिति उत्पन्न नहीं होगी। इस अवसर पर खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग के प्रमुख शासन सचिव एवं जिला प्रभारी सचिव सुबीर कुमार ने भी श्रमदान किया। आयोजन में स्थानीय नागरिकों, सामाजिक संगठनों व युवाओं ने भी भाग लिया और जल स्त्रोतों की महत्ता को समझते हुए सफाई में योगदान दिया। कार्यक्रम में कलेक्टर नीलाभ सक्सेना, अतिरिक्त कलेक्टर हेमराज परिडवाल, अति. पुलिस अधीक्षक गुमना राम, मुख्य कार्यकारी अधिकारी शिवचरण मीणा, आयुर्वेद विभाग के उपनिदेशक अरविंद, पीएचईडी के अधीक्षण अभियंता पी.सी. मीणा, पशुपालन विभाग के संयुक्त निदेशक डॉ. गंगासहाय मीणा, सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के सहायक निदेशक धर्मेंद्र कुमार मीणा, पूर्व विधायक राजकुमारी जाटव व रमेशचंद मीणा, पंचायत समिति महावीरजी के प्रधान सहित विभिन्न वर्गों के प्रतिनिधि, सामाजिक एवं व्यापारिक संगठनों के सदस्य, कर्मचारी, अधिकारी, युवा संगठन और आमजन उपस्थित रहे।

डोडा-पोस्त तस्कर को दस साल कारावास की सजा सुनाई

11.62 क्विंटल अवैध डोडा-पोस्त के परिवहन करने के मामले में सुनाया फैसला

- जिला एवं सत्र न्यायाधीश ने आरोपी को एक लाख रूपये के अर्थदण्ड से भी दण्डित किया

जालोर, (कासं)। जिला एवं सत्र न्यायाधीश जालोर हारून ने शनिवार को 11 क्विंटल 62 किलो 500 ग्राम अवैध डोडा-पोस्त का परिवहन करने के आरोपी मेहबूब खान को दस साल के कारावास की सजा सुनाई। वहीं एक लाख रूपये के अर्थदण्ड से भी दण्डित किया।

लोक अभियोजक ओमप्रकाश व्यास ने बताया कि 8 फरवरी 2020 को पुलिस थाना कोतवाली जालोर के एसआई भैरूसिंह को मुखबीर से सूचना मिली कि आहोर से बाड़मेर की ओर एक ट्रक टैंकर अवैध डोडा-पोस्त भारी मात्रा में लेकर आ रहा है, जिसके बाद पुलिस ने आहोर से बाड़मेर जाने वाली सड़क पर सरहद माण्डवला पहुंचकर नाकाबंदी की। तभी सामने से एक ट्रक टैंकर के चालक को रोकने का इशारा किया तो पुलिस को देखकर भागने का प्रयास किया। पुलिस ने ट्रक टैंकर के आगे सरकारी जीप डालकर कर उसे रूकवाया। चालक को उसका नाम-पता पूछा तो उसने अपने नाम मेहबूब खान पुत्र न्याज मोहम्मद गायत्री नगर मावली जिला उदयपुर होना बताया। पुलिस द्वारा ट्रक टैंकर की जांच करने पर टैंकर के उपर तीन कम्पार्ट में अवैध डोडा-पोस्त भरा हुआ पाया।

पुलिस ने ट्रक टैंकर से 75 कट्टे अवैध डोडा-पोस्त के बरामद किये, जिसमें 11 क्विटंल 62 किलो 500 ग्राम डोडा-पोस्त बरामद हुआ। पुलिस ने अवैध डोडा-पोस्त का परिवहन करने के आरोपी मेहबूब खान को गिरफ्तार किया गया। बाद अनुसंधान पुलिस द्वारा आरोप पत्र न्यायालय में पेश किया गया। सैंशन न्यायाधीश जालोर हारून ने शनिवार को भारी मात्रा में अवैध डोडा-पोस्त परिवहन करने के आरोप में मेहबूब खान को दोषी मानते हुए दस साल के कारावास की सजा सुनाई। वहीं एक लाख रूपये के अर्थदण्ड से भी दण्डित किया। सरकार की ओर से पैरवी लोक अभियोजक ओमप्रकाश व्यास ने की।

लॉरेन्स और आनंदपाल गैंग से जुड़ा गैंगस्टर प्रवीण कमांडो गिरफ्तार

एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स ने 25 हजार रु. के इस इनामी बदमाश को चूरू बायपास पर दबोचा

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । एंटी गैंगस्टर टास्क फोर्स पुलिस मुख्यालय की टीम ने गैंगस्टरों और संगठित अपराधों के खिलाफ छेड़े गए अपने विशेष अभियान में एक और सफलता हासिल की है। अतिरिक्त महानिदेशक पुलिस अपराध एवं एजीटीएफ दिनेश एमएन के कड़े निर्देशों और सटीक रणनीति के तहत एजीटीएफ ने गैंगस्टर प्रवीण सिंह जोड़ी उर्फ प्रवीण कमांडो (43) को चूरू बायपास पर धर दबोचा।

आरोपी प्रवीण सिंह

- **2001 में पुलिस कांस्टेबल था प्रवीण सिंह, बाद में लॉरेन्स गैंग के शूटर अंकित भादू को शरण देने और कुख्यात आनंदपाल गैंग से सक्रिय रूप से जुड़े होने के कारण उसे पुलिस सेवा से बर्खास्त कर दिया गया था।**
- **होटल में फायरिंग मामले में पुलिस आरोपी को तलाश रही थी**

एडीजी एमएन ने बताया कि पुलिस के लिए सिरदर्द बना यह अपराधी 25 हजार रुपये का इनामी और कई संगीन मामलों में वांछित था। जिसमें हाल ही में चूरू के एक होटल में जान से मारने की नीयत से की गई फायरिंग का मामला भी शामिल है। बदमाश को चुरू जिले की कोतवाली थाना पुलिस को सौंप दिया गया है। जिससे पुलिस की टीम गहनता से पूछताछ कर रही है।

दिनेश एम.एन. ने बताया कि गैंगस्टर प्रवीण सिंह पुत्र भगवान सिंह गांव जोड़ी थाना भालेरी जिला चूरू का रहने वाला है। यह कभी पुलिस विभाग का ही हिस्सा था। वर्ष 2001 में यह जिला झालावाड़ में कांस्टेबल के पद पर भर्ती हुआ था। हालांकि, उसका पुलिस करियर छोटा रहा। लॉरेंस गैंग के मुख्य शूटर अंकित भादू को शरण देने और कुख्यात आनंदपाल गैंग से सक्रिय रूप से जुड़े होने के कारण उसे पुलिस सेवा से बर्खास्त कर दिया गया था।

बर्खास्त होने के बाद प्रवीण जोड़ी ने अपराध की दुनिया में अपनी जड़ें गहरी कर लीं। वह आनंदपाल सिंह गैंग और लॉरेंस बिश्नोई गैंग के लिए काम करने लगा। उसके मुख्य कामों में व्यापारियों के मोबाइल नंबर रोहित गोदारा और वीरेंद्र जैसे गैंगस्टरों को उपलब्ध कराना शामिल था, जिसके बाद ये गैंगस्टर्स व्यापारियों को धमकी देकर फिरौती वसूलते थे। इसके खिलाफ श्रीगंगानगर जिले के थाना जवाहर नगर एवं लालगढ़ में अपराधियों को शरण देने के तीन आपराधिक मामले दर्ज हैं। एजीटीएफ की टीम ने इसके साथी जितेंद्र सिंह उर्फ जीतू जोड़ी को पहले ही गिरफ्तार कर लिया था। जितेन्द्र सिंह भी जोडी गांव का ही रहने वाला है। एजीटीएफ की टीम ने जिससे पूर्व में अत्याधुनिक हथियार दो एके-47 राइफल मैगजीन सहित और भारी मात्रा में कारतूस बरामद किए थे।

प्रवीण जोड़ी की गिरफ्तारी 10 महीने पहले की आपराधिक घटना के संबंध में भी महत्वपूर्ण है। 18 अगस्त, 2024 को चूरू कस्बे में स्थित होटल सनसिटी के कर्मचारी मन्जत अली (35) ने थाना कोतवाली चूरू में अज्ञात बदमाशों के खिलाफ जान से मारने की नीयत से फायरिंग का मुकदमा दर्ज कराया था।

मन्जत अली के अनुसार 17 अगस्त, 2024 की रात लगभग 10:00 बजे जब वह होटल में काम कर रहा था। तभी दो अज्ञात लड़के बाइक पर आए और होटल पर ताबड़तोड़ फायरिंग कर दी। जिसमे वह और उसके साथी बाल-बाल बच गये। उसके व होटल स्टाफ के शोर मचाने पर हमलावर फरार हो गए। इस संगीन मामले में प्रवीण जोड़ी पर चूरू एसपी द्वारा 25 हजार रुपये का इनाम घोषित था।इस सफल कार्रवाई में हेड कांस्टेबल नरेंद्र सिंह और महावीर सिंह की विशेष भूमिका रही जिन्होंने अपनी जान जोखिम में डालकर महत्वपूर्ण खुफिया जानकारी जुटाई। टीम में इंस्पेक्टर सुभाष सिंह, एएसआई शंकर दयाल शर्मा, हेड कांस्टेबल सुरेश, कमल डागर, कांस्टेबल नरेश, रतिराम और चालक का भी सराहनीय योगदान रहा। एजीटीएफ की यह कार्रवाई राजस्थान में संगठित अपराध के खिलाफ पुलिस के दृढ़ संकल्प और प्रभावी कार्यप्रणाली का स्पष्ट प्रमाण है।

मुख्यमंत्री भजनलाल ने जैसलमेर सर्किट हाउस में की जनसुनवाई

जैसलमेर/जयपुर । मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने जैसलमेर के अपने दो दिवसीय दौरे के दौरान शनिवार को जैसलमेर सर्किट हाउस में जनसुनवाई की। उन्होंने आमजन की परिवेदनाओं को सुनते हुए मौके पर ही अधिकारियों को संवेदनशीलता से उनके त्वरित निस्तारण के निर्देश दिए।

इस दौरान विद्युत, जलदाय, चिकित्सा, समाज कल्याण, शिक्षा, उद्योग, राजस्व, गृह, खनन, कृषि, सहित विभिन्न विभागों से संबंधित प्रकरण प्राप्त हुए। मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को जिला मुख्यालय पर नियमित रूप से जनसुनवाई कर आमजन को राहत प्रदान करने के निर्देश दिए।

कोविड संक्रमितों की संख्या 625 पहुंची

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। प्रदेश में कोविड संक्रमितों के संख्या में दिन-प्रतिदिन बढ़ोतरी होती जा रही है। शनिवार को भी प्रदेशभर में 21 नए संक्रमित मरीज सामने आए, जिनमें सबसे अधिक केस जयपुर, बीकानेर और उदयपुर जिलों से हैं। चिंताजनक बात यह है कि मामले सिर्फ शहरी नहीं, अब ग्रामीण इलाकों से भी आ रहे हैं।

चिकित्सा विभाग से मिली जानकारी के अनुसार जयपुर में 7, बीकानेर में 5 और उदयपुर में 5 नए मरीजों की पुष्टि हुई है। इनमें 81 वर्षीय वृद्ध से लेकर 18 साल की युवती तक संक्रमण की चपेट में आ चुके हैं। वहीं अब तक के इस वर्ष (2025 में) कुल 625 कोविड पॉजिटिव मिल चुके है जबकि तीन लोगों की मौत हो चुकी है। दूसरी ओर अभी 379 मरीज ठीक हो चुके है, लेकिन अभी भी 243 मरीज सक्रिय है।

चिकित्सा विभाग ने जनता से अपील की है कि मास्क, सैनिटाइज़र और सोशल डिस्टेंसिंग जैसे पुराने उपायों को फिर से अपनाएं। विशेष रूप से बुजुर्गों और पहले से बीमार लोगों को भीड़भाड़ से बचने की सलाह दी गई है।

प्रधानमंत्री मोदी ने नीति, तकनीक और नीयत से देश को दिलाई नई पहचान : कर्नल राज्यवर्धन सिंह

'प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के 11 साल का कार्यकाल गरीब, युवा, महिला और किसान के कल्याण को समर्पित'

जयपुर । भारतीय जनता पार्टी जयपुर शहर जिले की ओर से "संकल्प से सिद्धि तक" अभियान के तहत शनिवार को भाजपा प्रदेश कार्यालय में प्रोफेशनल मीट का आयोजन किया गया। प्रोफेशनल मीट के मुख्य वक्ता कैबिनेट मंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़ ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 11 साल के कार्यकाल में भारत हर क्षेत्र में मजबूत हुआ है। फिर चाहे वो सैन्य क्षेत्र हो या फिर इन्फ्रास्ट्रेक्चर का क्षेत्र। मोदी के नेतृत्व में भारतीय सेना गोली का जवाब गोले से दे रही है।

राज्यमंत्री राज्यवर्धन सिंह राठौड़

राठौड़ ने बताया कि मोदी के कार्यकाल में ही भारत की अर्थव्यवस्था 11वें नंबर से चौथी अर्थव्यवस्था बनकर उभरी है। इतना ही नहीं, प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गरीब, युवा, महिला और किसान सभी के कल्याण के लिए योजनाएं बनाई। आज सरकारी योजनाओं का पैसा गरीब के खाते में सीधा पहुंच रहा है। भारत का यूपीआई सिस्टम मजबूत हुआ है। आज गांव, गली-मोहल्ले में छोटे से छोटा व्यापारी भी यूपीआई से डिजिटल पेमेंट ले रहा है।

मंत्री राठौड़ ने कहा कि भाजपा राष्ट्र प्रथम की भावना से कार्य करती है। भाजपा की विचारधारा राष्ट्र प्रथम की विचारधारा है। यहां हर व्यक्ति के सम्मान के लिए कार्य किया जाता है। मोदी जी ने नीति, तकनीक और नीयत के माध्यम से देश को नई पहचान दिलाई है। आज विश्व में सर्वोधिक इन्फ्रा स्टेक्चर के क्षेत्र में कोई देश खर्च कर रहा है तो वो भारत है। भारत का इन्फ्रास्ट्रेक्चर 2014 की तुलना में बेहद मजबूत और सुदृढ़ हुआ है। इससे देश में रोजगार के अवसर बढ़े है, तो देश की सुरक्षा भी मजबूत हुई। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गरीब महिलाओं के लिए 4 करोड़ आवास देने, उज्जवला योजना में 11 करोड़ से अधिक गैस कनेक्शन देने, हर घर जल मिशन के तहत 15 करोड़ से अधिक नल से जल उपलब्ध कराने जैसे कई योजनाएं शुरू की।

राठौड़ ने कहा कि 2014 से पहले देश की पहचान धुमिल हो रही थी, 2014 से पहले जहां वैश्विक मंच पर भारत की कोई सुनता नहीं था, वहीं आज मोदी को सुनने के लिए विश्व इंतजार करता है। भारत भी वही है, हमारी संस्कृति भी वहीं है लेकिन हमारी लीडरशीप बदली है।

जिला अध्यक्ष अमित गोयल ने कहा कि 2014 से पूर्व की सरकार जुगाड़ से चलती थी, 2014 के बाद सरकार संकल्प से चल रही है। कार्यक्रम में जयपुर सांसद मंजू शर्मा ने धन्यवाद ज्ञापित किया। संकल्प से सिद्धि तक अभियान के जिला संयोजक राघव शर्मा ने कार्यक्रम की प्रस्तावना रखी। इस दौरान मंच पर सह संयोजक एवं उप महापौर पुनित कर्नावट, तेज सिंह, कार्यक्रम संयोजक सुरेश गर्ग, विधि प्रकोष्ठ के प्रदेश संयोजक सौरभ सारस्वत उपस्थित रहे। प्रोफेशनल मीट में शहर के प्रबुद्धजन, चिकित्सक, सीए, अधिवक्तागण, पूर्व सैनिक सहित व्यापार जगत के प्रमुख जन उपस्थित रहे।

एसीएस संदीप वर्मा को कृषि विभाग की अतिरिक्त जिम्मेदारी

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर । प्रदेश में मानसून के पहले आने समय से एक सप्ताह पहले आ जाने की अप्रत्याशित स्थिति को देखते हुए अतिरिक्त मुख्य सचिव, संदीप वर्मा, को कृषि विभाग का अतिरिक्त भार भी सौंपा गया। उल्लेखनीय है कि कृषि विभाग के शासन सचिव अवकाश पर है और मानसून की अप्रत्याशित स्थिति को देखते हुए इस महत्वपूर्ण समय में किसानों को यूरिया व अन्य खाद सामग्री तुरंत मुहैया करवाने के उद्देश्य से स्थायी रूप से राजस्थान भंडारण निगम की अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक को विभाग को अतिरिक्त भार रविवार सुबह मुख्य सचिव द्वारा दिये गये आदेश के अनुसार सौंपा गया है।

- **मानसून में किसानों को खाद-बीज और संसाधन समय पर मुहैया कराने के उद्देश्य से की गई है नियुक्ति**

मुख्य सचिव, सुधांश पंत, द्वारा आदेश जारी करे गये हैं कि मानसून के दौरान किसानों की सहायता के लिए कृषि विभाग सभी जिलों में खाद सामग्री सहित बीजो के 'मिनि किट' मुहैया कराये और जो अधिकारी अपेक्षा अनुसार कार्रवाही नहीं कर रहे है, उनके खिलाफ कृषि विभाग दण्डात्मक कार्रवाई भी करे।

कृषि विभाग को यह भी आदेश जारी किए गए है कि वह जमीनी स्तर पर सर्वे करे और 1500 से अधिक केंद्र स्थापित करें जिसके माध्यम से किसानों को ट्रेक्टर व अन्य मशीन उपलब्ध करवायी जा सके।

देवनानी ने फ्रांस में राजस्थान के प्रवासियों को आव्हान किया "अपनी जड़ों से हमेशा जुड़े रहे"

जर्मनी पहुंचने पर राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी का प्रवासी राजस्थानियों ने स्वागत किया।

जयपुर। विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने शनिवार को अपनी फ्रांस यात्रा के दौरान पेरिस के भारतीय दूतावास में प्रवासी राजस्थानी समुदाय को एक गरिमामय कार्यक्रम में प्रेरणादायक संबोधन दिया।

उन्होंने कहा अपनी कर्म भूमि फ्रांस में निष्ठा से कार्य करते रहे लेकिन अपनी जड़ों से हमेशा जुड़े रहे, इससे घरों में भारतीय संस्कार जीवित रहेंगे। श्री देवनानी ने कहा कि अपनी जड़ों को सूखने ना दे। देवनानी ने कहा कि राजस्थान नवाचार, तकनीक, उद्यिमता और शिक्षा के क्षेत्र में नए कीर्तिमान स्थापित कर रहा है। स्टार्टअप और इनोवेशन हब के रूप में उभरता राजस्थान, हरित ऊर्जा और सौर ऊर्जा उत्पादन में अग्रणी स्थिति, बेहतर पेयजल योजनाएं, इन्फ्रास्ट्रक्चर, और डिजिटल ग्राम योजना का विस्तार हो रहा है।

भारतीयों और राजस्थानी प्रवासियों के लिए एक गौरवपूर्ण अवसर रहा, जहां उन्होंने अपनी मातृभूमि से आए वरिष्ठ राजनीतिज्ञ विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी के विचारों को आत्मीयता से सुना और सराहा। देवनानी ने कहा मेरे युवा प्रवासी मित्रों, आप वह सेतु हैं जो राजस्थान की परंपरा को वैश्विक मंच से जोड़ते हैं। आपके अनुभव, आपके कौशल और आपकी सोच हमारे लिए अमूल्य हैं।

- **देवनानी जर्मनी पहुंचे, ओवरसीज भारतीय संगठन ने किया गर्मजोशी से स्वागत**

देवनानी ने कहा कि मीराबाई की भक्ति, महाराणा प्रताप की वीरता राजस्थान की पहचान है। उन्होंने कहा कि अपने कार्यों के साथ-साथ अपनी जन्मभूमि के प्रति अपने दायित्वों का निर्वहन भी करते रहे। राजस्थानियों ने देवनानी का अभिनंदन किया। समारोह मैं डूंगरपुर, बांसवाड़ा, जयपुर, उदयपुर सहित राजस्थान के विभिन्न जिलों के विद्यार्थी, विभिन्न क्षेत्रों में काम करने वाले, व्यवसायी और आर्टिस्ट मौजूद थे। समारोह मे दो आर्टिस्ट ने मनमोहक संगीतमय प्रस्तुतियां दी।

राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी शनिवार को जर्मनी पहुंचे। जर्मनी की राजधानी बर्लिन पहुंचने पर देवनानी का ओवरसीज भारतीय संगठनों और प्रवासी भारतीयो ने गर्मजोशी से स्वागत किया।

साइबर ठगी करने वाली नेपाली गैंग के 4 बदमाश गिरफ्तार

जयपुर। साइबर पुलिस थाना ने साइबर ठगी करने वाली अंतरराष्ट्रीय (नेपाल) गैंग के चार साइबर ठगों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने आरोपियों के पास से 12 मोबाइल,एक लैपटॉप तीन बैंक चेक बुक जब्त की है। फिलहाल आरोपियों से पूछताछ की जा रही है।

पुलिस उपायुक्त (अपराध) कुन्दन कंवरिया ने बताया कि साइबर पुलिस थाना ने साइबर ठगी करने वाली अन्तराष्ट्रीय (नेपाल) गैंग के नेपाली निवासी लाल दोर्जे तामांग व सुजल तामांग व दिल्ली निवासी पवन जैन व अब्बु शाहमा को गिरफ्तार किया गया। पुलिस ने इनके कब्जे से 12 मोबाइल, 1 लैपटॉप, चेक बुक को बरामद की है। पुलिस जांच में सामने आया कि आरोपी लाल दोर्ज अपने अन्य साथियों के साथ मिलकर एक संगठित गिरोह बना रखा है। आरोपी ऑनलाईन ट्रेडिंग व गेमिंग फॉड की राशि प्राप्त करने के लिए कमीशन पर खाता लेकर चाइनीज लोगों को टेलीग्राम पर विभिन्न देशों में विभिन्न कंपनियों के ग्रूप्स बनाकर खाता उपलब्ध करवाने का कार्य करते हैं। जिसके बदले में होने वाले ट्रांजेक्शन राशि का दो से पांच प्रतिशत तक मुनाफा यूएसडीटी में लेता है। आरोपी ऑनलाइन ट्रेडिंग एवं गेमिंग के नाम पर ठगी करते हैं।आरपीएस अधिकारी (थानाधिकारी) सोनचंद वर्मा ने बताया कि अपने मुखबिर खास से सूचना मिली कि होटल संजय पैलेस पोलोविक्ट्री सिनेमा के सामने में कुछ संदिग्ध लोग ठहरे हुए हैं। जो ऑनलाइन फ्रॉड की राशि को हड़पने के लिए बैंक खाते किराये पर लेते है। उन बैंक खातों को चाइनीज गैंग को उपलब्ध कराते हैं ।जिसकी एवज में मोटी रकम हड़पते है। लाल दुर्ज द्वारा पूछताछ पर करोड़ो रूपयो के साइबर फ्रॉड में कमीशन के तौर पर 40-50 लाख रुपये कमाना बताया है।

पुलिस पूछताछ में सामने आया कि आरोपी लाल दो्जे तामांग चाईनीज लोगों से टेलीग्राम पर सम्पर्क कर 05 लाख रुपये जमा करवाकर 25 से 5 प्रतिशत कमीशन पर बैंक खाता बेचता है। खाताधारकों से 2 से 2.5 प्रतिशत में खाते खरीदकर चाइनीज गैंग को 4 से 5 प्रतिशत कमीशन में खातो को ऑनलाइन फ्रॉड के लिए उपलब्ध करवाता है। खाताधारकों के मोबाइल में अपने सहयोगियों से एपीके ऐप इंस्टॉल करवाता है। जिससे मोबाइल का एक्सेस इसके माध्यम से चाइनिज गैंग के पास पहुंच जाता है।

योगधर्म ही सनातन धर्म व युग धर्म है : स्वामी रामदेव

हमें योगयुक्त तथा नशा व रोगमुक्त हरियाणा बनाना है : नायब सिंह सैनी

कुरुक्षेत्र/जयपुर। स्वामी रामदेव महाराज के दिशानिर्देशन में 11वाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पतंजलि योगपीठ तथा हरियाणा योग आयोग, आयुष विभाग, हरियाणा के संयुक्त तत्वाधान में कुरुक्षेत्र में आयोजित किया गया। इस अवसर पर स्वामी रामदेव, आचार्य बालकृष्ण महाराज तथा हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने ब्रह्मसरोवर, कुरुक्षेत्र की ऐतिहासिक भूमि पर योग साधकों को योगाभ्यास कराया। इसी के साथ पतंजलि योग समिति के माध्यम से देश के समस्त 650 जिलों में कॉमन योग प्रोटोकॉल के तहत निःशुल्क योग का प्रशिक्षण दिया गया। कुरुक्षेत्र की पावन धरा पर 1 लाख से अधिक योग साधकों ने एक-साथ योगाभ्यास कर नया कीर्तिमान बनाया। स्वामी रामदेव ने उपस्थित योग साधकों को योग व स्वदेशी का संकल्प दिलाया। इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की थीम वन अर्थ, वन हेल्थ रही।

- **एंटीएजिंग, इम्युनिटी लोंगिविटी एवं डिजीज को कन्ट्रोल करने से लेकर उन्हें रिवर्स करने का सामर्थ्य योग में है : आचार्य बालकृष्ण**
- **आज दुनिया के 200 देशों के 200 करोड़ से ज्यादा लोग कर रहे हैं योग : स्वामी रामदेव**

स्वामी रामदेव ने कहा कि दुनिया में अब 200 करोड़ से ज्यादा लोग योग कर रहे हैं, योग अब युगधर्म बन गया है। उन्होंने कहा कि योग ही सनातन का सार है। योग अप्रतिम विद्या, योग हमारे संस्कारों, संस्कृति व प्रकृति में है। विरासत मूलक विकास का नारा प्रधानमंत्री मोदी ने दिया है। उन्होंने कहा कि देश में दवाओं के नाम पर 10 लाख करोड़ रुपए खर्च होते हैं। जब देश के करोड़ों लोग रोज योग करेंगे तो देश का हेल्थ बजट शून्य हो जाएगा। यदि प्रत्येक देशवासी योग करे तो देश को 10 लाख करोड़ रुपए की बचत हो सकती है।

स्वामी रामदेव ने कहा कि देश में समृद्धि स्वदेशी अपनाने से ही आ सकती है। ऑक्सफैम ग्लोबल यू.के. एवं अन्य स्त्रोतों के सर्वे के अनुसार, 1765 से 1900 के बीच विदेशी कंपनियों और आक्रांताओं ने भारत से 100 ट्रिलियन डॉलर से अधिक की लूट की और आज भी वह लूट निरंतर जारी है। वर्ष 1835 से चली आ रही मैकाले की शिक्षा पद्धित से देश को मुक्त करने के लिए पतंजलि गुरुकुलम् और आचार्यकुलम् जैसे संस्थान भारतीय शिक्षा बोर्ड के साथ श्रेष्ठ व्यक्तित्व, चरित्र और नेतृत्व वाले बच्चों का निर्माण कर रहे आज देश में पतंजलि योगपीठ के करोड़ों कार्यकर्ता योग सेवा कर रहे हैं। पतंजलि योग समिति के माध्यम से आज देश में 1 लाख से अधिक निःशुल्क योग कक्षाएँ संचालित हो रही हैं। हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने कहा कि योग को जन-जन तक पहुँचाने के लिए हरियाणा तथा केन्द्र सरकार पूर्ण प्रतिबद्ध है। हमारा उद्देश्य नशामुक्त व तनावमुक्त हरियाणा बनाना है।

स्वामी रामदेव, आचार्य बालकृष्ण महाराज तथा हरियाणा के मुख्यमंत्री नायब सिंह सैनी ने ब्रह्मसरोवर, कुरुक्षेत्र की ऐतिहासिक भूमि पर योग साधकों को योगाभ्यास कराया।

आचार्य बालकृष्ण ने कहा कि दैनिक जीवन में यदि आधा से एक घंटा का भी योग का क्रियात्मक अभ्यास कर लिया जाये तो जीवन को स्वस्थ, सुखी व आनन्दमय बनाया जा सकता है। प्रतिदिन के योगाभ्यास से एंटीएजिंग, इम्युनिटी लोंगिविटी एवं डिजीज को कन्ट्रोल करने से लेकर उन्हें रिवर्स करने का सामर्थ्य योग में है। योग पर हो रहे विभिन्न शोधों एवं वैश्विक स्तर पर वर्ल्ड के टॉपइम्पैक्ट के जनरल्स में योग रिसर्च के हजारों प्रमाण प्रकाशित हो चुके हैं तथा हमने भी सैकड़ों रिसर्च पेपर योग पर पतंजलि रिसर्च फाउन्डेशन की ओर से प्रकाशित करवाये हैं।

कार्यक्रम में हरियाणा के राज्यपाल बंगारू दत्तात्रेय, हरियाणा की मंत्री आरती राव, सांसद नवीन जिंदल, आयुष विभाग के महानिदेशक संजीव वर्मा, पतंजलि संस्थान की ओर से साध्वी देवप्रिया, भाई राकेश, योग आयोग के अध्यक्ष जयदीप हरियाणा राज्य समिति की ओर से ईश कुमार आर्य, बहन अमर आदि ने लगभग 400 गांवों से संपर्क करके हरियाणा प्रत्येक गांव व जिले की भागीदारी सुनिश्चित की। इस कार्यक्रम में ब्रह्म सरोवर कुरुक्षेत्र में एक लाख से अधिक तथा संपूर्ण हरियाणा के जिला स्तर व तहसील स्तर तक 11 लाख से अधिक लोगों ने ऑनलाइन भागीदारी की।

सांभर से हरिद्वार के लिए विद्याधर नगर आगार की नियमित बस सेवा शुरू

जयपुर, चौमूं, सामोद, राडावास और अजीतगढ़ होते हुए चलेगी बस

-कार्यालय संवाददाता-

जयपुर। राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम के विद्याधर नगर आगार द्वारा 22 जून 2025 से सांभर से हरिद्वार के लिए एक नई नियमित बस सेवा प्रारंभ की जा रही है। यह बस सांभर से हरिद्वार तक जोबनेर, कालवाड़, हाथोज, चौमूं पुलिया, रामपुरा डाबड़ी, चौमूं, सामोद, धवली, राडावास, चौकी का बड़, अजीतगढ़, त्रिवेणी, शाहपुरा व दिल्ली होते हुए संचालित की जाएगी।

- **यह सेवा विशेष रूप से धार्मिक यात्रियों और नियमित यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए शुरू की गई है। यह बस हरिद्वार के साथ-साथ जयपुर से अजीतगढ़ और हरिद्वार तक आने-जाने वालों के लिए भी सुगम साधन सिद्ध होगी।**

यह सेवा विशेष रूप से धार्मिक यात्रियों और नियमित यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए शुरू की गई है। यह बस हरिद्वार के साथ-साथ जयपुर से अजीतगढ़ और हरिद्वार तक आने-जाने वालों के लिए भी सुगम साधन सिद्ध होगी।

यह बस सांभर से शाम 4.20 बजे रवाना होगी, इसके बाद 5 बजकर 5 मिनट पर जोबनेर, 5.40 बजे कालवाड़, 5.55 बजे हाथोज, 6.15 बजे चौमूं पुलिया, 7 बजे रामपुरा डाबड़ी, 7.45 बजे चौमूं, 7.55 बजे सामोद, 8 बजे धवली, 8.10 बजे राडावास, 8.20 बजे चौकी का बड़, 8.30 बजे अजीतगढ़, रात्रि 1.30 बजे दिल्ली और प्रातः 6 बजे हरिद्वार पहुंचेगी।

इसी दिन दोपहर 3 बजे हरिद्वार से बस इसी मार्ग से सांभर के लिए लौटेगी।

यह बस दिल्ली से रात्रि 8 बजे, अजीतगढ़ से रात्रि 2 बजे रवाना होकर सांभर पहुंचेगी। इस बस में राजस्थान सरकार द्वारा मोक्ष यात्रा के तहत दो यात्री हरिद्वार तक के लिए निःशुल्क एवं महिला और वरिष्ठ जन यात्री के लिए किराए में 50 प्रतिशत की छूट भी मिलेगी।

इस बस सुविधा से चौमूं से लेकर अजीतगढ़ के मध्य उपस्थित सभी क्षेत्र के ग्रामीण इलाकों को यह एक सुनहरी यात्रा के लिए उपस्थिति रहेगी। जिसके तहत सामोद, म्हार, धवली, गुलाब बाड़ी, राडावास, हणुतिया ,नायन चौकी का बड, अमरसर और अजीतगढ़ के समीपवर्ती क्षेत्र को भी सुविधा मिलेगी।

यह बस अजीतगढ़ नज़दीकी क्षेत्र के लिए भी रात्रि में जयपुर जाने के लिए एकमात्र विकल्प रहेगी, क्योंकि अजीतगढ़ से जयपुर के लिए प्रथम बस प्रातः 6 बजे उपस्थित है।

विद्याधर नगर आगार, जयपुर के मुख्य प्रबंधक का कहना है कि यह सेवा न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है, बल्कि क्षेत्रीय यात्रियों के लिए एक आरामदायक, सुलभ और सुरक्षित परिवहन सुविधा भी प्रदान करेगी।

भीलवाड़ा में मानसून की पहली जोरदार बारिश से बस्तियों में पानी घुसा

शहर के कई अंडरब्रिज में पानी भर जाने के कारण कई वाहन फंस गए

भीलवाड़ा, (निसं)। भीलवाड़ा में मानसून की पहली जोरदार बारिश ने नगर निगम और प्रशानिक दावों की हकीकत भी सामने ला दी। एक और जहां सांगानेर के निकट नाले में बाइक बह गई तो वहीं दूसरी और शहर की कई कॉलोनियों में कचरे से अटी नालियों के कारण बरसाती पानी बस्तियों में जा घुसा। शहर के कई अंडरब्रिज में पानी भर जाने के कारण कई वाहन फंस गए। यही नहीं सिवरेज के द्वारा की गई खुदाई और लापरवाही के गड्ढों के वाहनों के फंस जाने की घटनाएं भी सामने आई है।

जानकारी के अनुसार शहर के मालोला रोड, गायत्री नगर क्षेत्र में सिवरेज कार्य ने लोगों को परेशानी में डाल दिया है। प्रशासन और निगम की लापरवाहीं का खामियाजा आमजन भुगतने को मजबूर है। भारी बारिश के बीच सड़के जलमग्न है तो दूसरी और सिवरेज के खोदे खड्डे हादसों का कारण बन रहे हैं। मलोला क्षेत्र में पहले से खराब पड़ी सड़क को सिवरेज विभाग की खुदाई ने पूरी तरह से खस्ताहाल कर दिया। तेज बारिश ने हालात और भी बद से बदतर कर दिए हैं। खुदाई के कारण सड़क पर बने गहरे गड्ढों में लगातार वाहन फंसते नजर आ रहे हैं।

बरसात होने से गड्ढों में कई जगह पर वाहन फंस गये।

गाड़ियां एक के बाद एक गड्ढों में फंसकर क्षतिग्रस्त हो रही हैं। इससे वाहन चालक और स्थानीय लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। गुस्साए क्षेत्रवासियों ने बारिश के बीच भी प्रदर्शन करते हुए प्रशासन और नगर निगम पर लापरवाही के आरोप लगाए। लोगों का कहना था कि न तो प्रशासन कोई सुध ले रहा है और न ही निगम कोई कार्रवाई कर रहा है। वाहन मालिकों को खुद बुलवाकर गड्ढों में फंसे वाहनों

■ भारी बारिश के बीच सड़कें जलमग्न है तो दूसरी और सिवरेज के खोदे खड्डे हादसों का कारण बन रहे हैं

को बाहर निकालने को मजबूर होना पड़ रहा है। प्रशासन और निगम की लापरवाहीं का खामियाजा आमजन भुगत रहा है, लेकिन कोई सुनने वाला नहीं है। वहीं दूसरी ओर मानसून की पहली जोरदार बारिश ने नगर निगम और प्रशानिक दावों की हकीकत भी सामने ला दी। एक और जहां सांगानेर के निकट नाले में बाइक बह गई तो वहीं दूसरी और शहर की कई कॉलोनियों में कचरे से अटी नालियों के कारण बरसाती पानी बस्तियों में जा घुसा। शहर के कई अंडरब्रिज में पानी भर जाने के कारण कई वाहन फंस गए। यही नहीं सिवरेज के द्वारा की गई खुदाई और लापरवाही के गड्ढों के वाहनों के फंस जाने की घटनाएं भी सामने आई है।

दहेज के लिए पत्नी की हत्या का आरोप, मामला दर्ज

हनुमानगढ़, (निसं)। यहां रावतसर में विवाहिता की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत के बाद गुपचुप दाह संस्कार करने पर पति के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया गया है।रावतसर में पति के साथ किराए के मकान में रहने वाली विवाहिता की संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। शादी को करीब 11 महीने ही हुए थे। ससुराल पक्ष के लोगों ने पीहर पक्ष को डरा-धमकाकर आनन-फानन में मृतका के शव का अंतिम संस्कार भी कर दिया। मृतका के पीहर पक्ष के लोगों ने ससुराल पक्ष पर दहेज के लिए हत्या करने का आरोप लगाते हुए रावतसर पुलिस थाने में मुकदमा दर्ज करवाया है।

पाली जिले के रोहट पुलिस थाना से प्राप्त जीरो नंबरी एफआईआर में लक्ष्मण सिंह (30) पुत्र मदन सिंह राजपुरोहित निवासी धर्मधारी पीएस रोहट जिला पाली ने बताया कि उसकी चचेरी बहन खुशबू पुत्री गंगासिंह निवासी धर्मधारी तहसील रोहट जिला पाली की शादी 11 जुलाई 2024 को भोमसिंह पुत्र नारायण सिंह निवासी गांव डोली राजगुरु जिला बालोतरा के साथ हुई थी। विवाह के समय खुशबू को सोने-चांदी के गहने व घर गृहस्थी का सामान दिया था, जो उसके ससुराल वालों को सौंपा था। विवाह के पश्चात खुशबू कुछ समय तक अपने ससुराल डोली में रही। तीन माह पूर्व खुशबू अपने पति भोमसिंह जो

■ पति ने बिना पुलिस को बताए अंतिम संस्कार कराया, 11 महीने पहले शादी हुई थी

रावतसर में अपने भाइयों के साथ मिठाई की दुकान चलाता है, वहां पर रहने के लिए गई, जहां पर पति के साथ किराए के मकान में रहती थी। वहां पर जाने के पश्चात खुशबू का पति व ससुराल वाले कम दहेज लाने की बात कहकर खुशबू को प्रताड़ित व तंग-परेशान करने लगे। आए दिन उसके साथ मारपीट करते। इसके बारे में दो-तीन बार खुशबू ने अपने पीहर में दूरभाष पर बताया। अब 16 जून को रावतसर में संदिग्ध अवस्था में खुशबू की मृत्यु हो गई। इसकी सूचना खुशबू के ससुराल वालों ने न तो स्थानीय पुलिस को दी और न ही स्थानीय व जिला अस्पताल में जांच करवाई। खुशबू का शव चुपचाप अपने गांव डोली राजगुरु जिला बालोतरा लेकर आ गए। 17 जून को खुशबू के ससुराल वालों ने अपने रिश्तेदार मुकेश को उनके पास गांव धर्मधारी भेजा।

मुकेश ने उन्हें बताया कि खुशबू की मौत हो चुकी है। शव का अंतिम संस्कार गांव डोली राजगुरु जिला बालोतरा में किया जाएगा। यह बात सुनकर उसके चाचा गंगासिंह सदमे में आ गए तथा बीमार हो गए। वे सभी मिलकर गांव डोली राजगुरु जिला बालोतरा गए, जहां पर खुशबू की लाश एम्बुलेंस में पड़ी थी, को देखा, तो पता चला कि खुशबू के शरीर पर जगह-जगह चोट के निशान थे। उसके चाचा धनसिंह तथा गंगासिंह ने खुशबू के ससुराल पक्ष के लोगों को कहा कि उनकी बेटी की आप लोगों ने दहेज की खातिर हत्या कर दी है।

इसकी जांच पुलिस से करवाई जानी जरूरी है। यह बात सुनते ही खुशबू के ससुराल वाले आग-बबूला हो गए। खुशबू के ससुराल वालों तथा वहां पर खड़े उनके रिश्तेदार थानसिंह ने उन्हें धमकी दी कि जो है वो यही है, यदि ज्यादा होशियारी करोगे तो तुम्हारी पुत्री निरमा जो पहले से ही इस घर में शादीशुदा है उसे घर से बाहर निकाल देंगे। इस कारण उसके चाचा गंगासिंह की तबीयत और खराब हो गई। खुशबू के ससुराल पक्ष के लोगों ने जबरदस्ती किसी प्रकार की जांच करवाए बिना ही अपने अपराधों को छुपाने के लिए जल्दबाजी में खुशबू के शव का अंतिम संस्कार कर दिया और उन्हें कहा कि तुम्हारे से जो हो कर लेना। उन्हें वहां से डरा-धमकाकर रवाना कर दिया। पुलिस ने मृतका के पति, सास-ससुर व देवर वगैरा के खिलाफ बीएनएस की धाराओं के तहत एफआईआर दर्ज की है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर बारिश की बूंदों में लोगों ने योग किया

राजसमंद, (निसं)। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर शहर सहित जिलेभर में कुल 3161 स्थानों पर 1 लाख 60 हजार 404 लोगों ने योग कार्यक्रमों में भाग लिया, जो योग के प्रति बढती जागरूकता और उत्साह को दर्शाता है। जिले के 206 ग्राम पंचायत स्तरों, 53 आयुष्मान आरोग्य मंदिरों, 12 धार्मिक पर्यटन स्थलों, विद्यालयों, आंगनबाड़ियों, महाविद्यालयों और विभिन्न विभागों एवं स्वयंसेवी संस्थाओं ने सामूहिक रूप से इस आयोजन को सफल बनाने में योगदान दिया। राजसमंद झील के नौचाकी पाल पर "एक पृथ्वी एक स्वास्थ्य के लिए योग" थीम के साथ जिला स्तरीय कार्यक्रम में 1500 से अधिक प्रतिभागियों ने एक साथ योगाभ्यास किया। अतिथियों द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ शुरू हुए कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के योग दिवस पर दिए गए उद्बोधन को सुना गया।

■ राजसमंद झील पर नावों में किया सामूहिक योग

नौचौकी पाल पर हुए मुख्य कार्यक्रम में योग विशेषज्ञ हिमांशु पालीवाल के मार्गदर्शन में हुए इस सत्र में भारतीय थल सेना के सब लेफ्टिनेंट अक्षयराज सिंह और डॉ. रामकन्या मेनारिया ने योग प्रशिक्षक के रूप में विभिन्न योगासन और प्राणायाम का

राजसमंद में नौचाकी पाल पर आयोजित जिला स्तरीय कार्यक्रम में जनप्रतिनिधि, अधिकारी और शहरवासियों ने योगाभ्यास किया।

अभ्यास करते हुए मंच साझा किया। राजसमंद झील में नौकायन करते हुए नौसेना के सब लेफ्टिनेंट सिद्धार्थ पालीवाल ने भी विभिन्न योगासनों का प्रदर्शन किया।

अंत में विधायक दीप्ति माहेश्वरी ने योग संकल्प का वाचन कराया, जिसमें सभी प्रतिभागियों ने अपने मन को संतुलित रखते हुए स्वास्थ्य संवर्धन के प्रचार के लिए प्रतिबद्ध रहने की शपथ ली। इस दौरान योग दिवस प्रभारी सचिव रोहित गुप्ता, विधायक दीप्ति माहेश्वरी, जिला प्रमुख रतनीदेवी जाट, उपजिला प्रमुख सोहनी देवी गुर्जर, भाजपा जिलाध्यक्ष जगदीश पालीवाल, पूर्व जिलाध्यक्ष मानसिंह बाहरठ, माधव चौधरी, जिला कलेक्टर बालमुकुंद असावा, एसपी मनीष त्रिपाठी, एडीएम नरेश बुनकर, एएसपी महेंद्र पारीक, सीईओ बृजमोहन बैरवा, एसीईओ डॉ. सुमन अजमेर, उपखंड अधिकारी बृजेश गुप्ता, प्रशिक्षु आरएसएस लतिका पालीवाल सहित गायत्री परिवार, आर्ट ऑफ लिविंग, विभिन्न सामाजिक संस्थाओं, पतंजलि योगपीठ और क्रीडा परिषद के प्रतिनिधियों सहित बडी संख्या में आमजन ने भाग लिया। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम का एक विशेष आकर्षण राजसमंद झील में नावों पर आयोजित योग सत्र रहा। भारतीय जल सेना के सब लेफ्टिनेंट सिद्धार्थ पालीवाल के नेतृत्व में मनोहरलाल, दिव्यांशु, आशुतोष, सौभाग्य, धनंजय, सानिध्य, डॉ गरिमा, डॉ जाह्नवी, गार्गी, सौभाग्य, तनिष्क और राष्ट्रीय बैडमिंटन खिलाडी मुकुंद माधव ने जल के मध्य योगाभ्यास कर एक अनूठा संदेश दिया। जिले के अन्य स्थानों पर भी योग दिवस पर विभिन्न सत्र आयोजित किए गए।

आढ़त का कारोबार बताकर फर्जी फर्म खोली, छह माह में 100 करोड़ के ट्रांजेक्शन

बीकानेर, (निसं)। आढ़त का कारोबार बताकर खोली गई फर्जी फर्म के बैंक खाते में महज 6 माह में करीब 100 करोड़ का ट्रांजेक्शन करने के आरोप बीकानेर के नापासर थाना क्षेत्र के गांव खारड़ा निवासी कृष्ण कुमार शर्मा को श्रीगंगानगर पुलिस ने गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया। 36 वर्षीय आरोपी को रविवार तक रिमांड पर लिया गया है। मामला कैपमोर एफएक्स एप के माध्यम से हुए हजारों करोड़ के घोटाले से जुड़ा हुआ है। आरोपी को देर रात को श्रीगंगानगर सदर पुलिस ने बीकानेर से गिरफ्तार किया था।

पुलिस की जांच में सामने आया कि यह फ्रॉड देश के 18 राज्यों में और रकम 10 हजार करोड़ तक हो सकती है। आरोपी बीकानेर निवासी कृष्ण शर्मा के खाते में 100 करोड़ आए है। ऐसे कई खाते जांच में हैं। श्रीगंगानगर सदर थाना प्रभारी सुभाषचंद्र ने बताया आरोपी से पूछताछ में कई अहम जानकारियां मिली हैं। जांच में सामने आया है कि

■ श्रीगंगानगर पुलिस ने मामले में आरोपी को गिरफ्तार कर कोर्ट में पेश किया, रिमांड पर भेजा

■ पुलिस जांच में सामने आया कि यह फ्रॉड 18 राज्यों में और रकम 10 हजार करोड़ तक हो सकती है

आरोपी ने करणी ट्रेडिंग कंपनी के नाम से बनी फर्जी फर्म के खाते से आगे कई फर्मों को पैसा ट्रांसफर किया था। ऐसी सभी फर्में अब पुलिस जांच के दायरे में है। उन्होंने बताया कि फर्जी फर्म बनाने के बाद आरोपी ने 2023-24 में करीब 6 माह में ही 99 करोड़ 65 लाख 47 हजार 938 रुपए की ट्रांजेक्शन की। यह रकम कैपमोर एफएक्स एप पर शेयर मार्केट में निवेश के नाम पर लोगों से ली गई रकम का हिस्सा थी।

पुलिस सूत्रों के अनुसार इस मामले में बीकानेर में कुछ और कार्रवाई भी हो सकती हैं। ऐसी फर्मों के खातों की जांच की जा रही हैं, जिनके पास करणी ट्रेडिंग कंपनी के अकाउंट से रकम ट्रांसफर हुई है। पुलिस टीम ने बीकानेर में डेरा डाला हुआ है। ऐसे में कई अन्य आरोपियों के नाम सामने आने की संभावना है।

पुलिस ने बताया कि मामला दर्ज होने के बाद शुरू किए गए अनुसंधान में करणी ट्रेडर्स अकाउंट की जानकारी सामने आई। यह बैंक खाता बीकानेर आढ़त के कारोबार की डिटेल देकर खुलवाया गया। करंट अकाउंट खोलते समय बैंक ने यह भी चेक नहीं किया कि जिस पते पर फर्म खोली जा रही है, वहां वास्तव में फर्म का ऑफिस है अथवा नहीं। पुलिस ने उस पते पर छापा मारा तो वहां इस फर्म के कभी भी होने के कोई सबूत नहीं मिले। आसपास के लोगों ने ऐसी किसी फर्म की जानकारी से मना किया। फिर प्रोपराइटर आरोपी के बारे में जानकारी जुटाकर उसके गांव छापेमारी की, लेकिन आरोपी फरार हो चुका था। काफी समय से पुलिस आरोपी की तलाश में थी, जिसे अब गिरफ्तार किया गया है।

श्रीगंगानगर एसपी गौरव यादव ने बताया कि 28 जनवरी को कर्नाटक निवासी काटप्पा बाबू चव्हाण ने पुलिस को बताया कि अजय आर्य और उसके साथियों ने कर्नाटक में कैपमोर एफएक्स कंपनी के नाम पर हजारों लोगों से करोड़ों रुपए की ठगी की है। आरोपी श्रीगंगानगर के हैं। पुलिस ने अजय आर्य के अंबिका सिटी-2 स्थित मकान पर छापा मारा। वहां से 10 लाख रुपए नकद, 8 एटीएम कार्ड, 3 सीपीयू, 6 मोबाइल फोन, 3 पैन कार्ड, करीब 85 लाख रुपए की लग्जरी कार और साइबर ठगी से जुड़े दस्तावेज बरामद किए। अजय के पिता लाजपत आर्य व भाई दीपक को गिरफ्तार किया गया।

मुंबई से बेटे ने वीडियो कॉल किया, फिर फांसी लगाई

जोधपुर, (कासं)। बलदेव नगर निवासी एक युवक ने कल मुंबई से अपने घर मां को वीडियो कॉल कर उनकी आंखों के सामने फंदा लगाकर अपनी जान दे दी। दिल को दहलाने वाली इस घटना के बाद यह वीडियो सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इसे देख कर हर कोई हैरत में है कि आखिर उसने ऐसा कैसे कर लिया जबकि वीडियो काल में मां लगातार उससे मिन्नतें कर रही है, पैसे की व्यवस्था करने की बात कह रही है, लेकिन युवक ने मां की एक नहीं सुनी और मां की आंखों के सामने तड़प-तड़प कर फंदे पर लटक कर अपनी जान दे दी। बताया जा रहा है कि युवक आर्थिक रुप से परेशान था। इसके चलते उसने ऐसा कदम उठाया। जानकारी के अनुसार मृतक का नाम मुजाहिद है। यह जोधपुर के मसूरिया बलदेवनगर गली नंबर दस का निवासी था। फिलहाल, यह मुंबई में रह रहा था। कल मुंबई से मां को वीडियो कॉल करके जान दे दी। घटना के बाद परिजन शव लेने के लिए मुंबई के लिए रवाना हो गए।

तस्करी मामले में एक गिरफ्तार : उदयपुर के पाटिया थाना पुलिस ने एनडीपीएस मामले में एक आरोपी को गिरफ्तार किया। एसपी योगेश गोयल के निर्देश पर अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक अंजना सुखवाल, पुलिस उप अधीक्षक राजीव राहर के सुपरविजन में पाटिया थानाधिकारी देवेन्द्रसिंह राव के नेतृत्व में गठित दल ने मादक पदार्थ तस्करी के मामले में एमडीएमए सपलाई करने के मामले में अमजद खान निवासी गोवर्धनपुरा हथुनिया प्रतापगढ़ को गिरफ्तार किया। एनडीपीएस एक्ट खेरवाड़ा मामले में वांछित था। इस मामले में पूर्व में अनुसंधान अधिकारी पाटिया थानाधिकारी देवेन्द्रसिंह राव ने मोहम्मद अफजल अली निवासी करावाड़ा को गिरफ्तार किया था जिसे अमजद ने 30 ग्राम एमडीएमए सप्लाई करना कबूल किया था।

बजरी भरे ट्रेलर व ट्रैक्टर-ट्रॉली जब्त

निवाई, (निसं)। बरोनी थाना पुलिस ने अवैध बजरी से भरे हुए एक ट्रेलर व ट्रैक्टर-ट्रॉली को जब्त कर एक चालक को गिरफ्तार किया है।

थानाधिकारी बृजेंद्रसिंह ने बताया कि पुलिस गश्त के दौरान पुलिस थाना के सामने नाकाबंदी पर एक टीम ने अवैध बजरी से भरे हुए एक ट्रैक्टर-ट्रॉली को जब्त किया है। ट्रैक्टर-ट्रॉली में करीब 2 टन बजरी भरी हुई थी। इसी प्रकार दूसरी टीम ने एक ट्रेलर को अवैध बजरी के साथ जब्त किया है। ट्रेलर में करीब 22 टन बजरी भरी हुई थी। पुलिस ने ट्रेलर चालक लेखराज माली निवासी पनवाड़ देवली को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने वाहन चालक वी मालिक के विरुद्ध एमएमडीआर एक्ट में मामला दर्ज कर जहां शुरू कर दी है।

सूने मकान में चोरी

राजसमंद। जिला मुख्यालय पर कांकरोली थाना क्षेत्र के रॉयल सिटी इलाके में बीती रात चोरों ने एक सूने मकान को निशाना बनाते हुए लाखों के आभूषण, एक लैपटॉप और अन्य कीमती सामान चुरा लिया। पीड़ित परिवार में कोई बीमार होने के कारण कमलेश जोशी अपने पैतृक मकान गए हुए थे और इसी दौरान चोरों ने वारदात को अंजाम दिया। शनिवार सुबह जब पीड़ित कमलेश जोशी अपने घर लौटे, तो उन्हें चोरी का पता चला। घर का सारा सामान बिखरा पड़ा था और कीमती चीजें गायब थीं। कमलेश जोशी ने तुरंत कांकरोली थाना पुलिस को सूचना दी, जिसके बाद पुलिस ने मुआयना किया।

जयपुर मे 19 संदिग्ध बांग्लादेशियों को पकड़ा

जयपुर। भांकरोटा और करणी विहार थाना पुलिस ने कार्रवाई करते हुए उन्नीस उन्नीस संदिग्ध बांग्लादेशियों को पकड़ा है। इसमें चार युवक, छह महिलाएं और नौ बच्चे शामिल है। पुलिस के अनसुार भांकरोटा थाना इलाके में वेस्टर्न हाइट्स के पास अवैध रुप से बांग्लादेशी रह रहे थे। वहीं करणी विहार थाना इलाके में मीनावाला में बांग्लादेशियों ने डेरा डाल रखा था। पकड़े गए बांग्लादेशियों से पूछताछ की जा रही है। उनके दस्तावेजों की जांच की जा रही है। दस्तावेजों की जांच के बाद गलत पाए जाने पर बाग्लादेशियों को डिपोर्ट किया जाएगा।

क्रिकेट मैचों पर सट्टा लगाने के आरोपियों को रिमांड पर भेजा

भीलवाड़ा, (निसं)। शहर की सदर थाना पुलिस ने ऑनलाइन वेबसाइट पर सट्टे की आईडी बनाकर खाईवाली करने के मामले में पकड़े गये आरोपियों को अदालत में पेश किया, जहां से उन्हें पुलिस रिमांड पर भेज दिया गया।

सदर थाना प्रभारी कैलाशचंद्र विश्नोई ने बताया कि दो युवकों के अलग-अलग स्थानों पर अपने मोबाइल फोन में ऑनलाइन वेबसाईट पर क्रिकेट मैचों पर सट्टा लगाने के लिये आईडी बनाकर खाईवाली करते घूमने की सूचना सायबर सैल व डीएसटी से सदर थाना पुलिस को मिली। इस पर पुलिस टीम ने हरणीकलां निवासी विनोद चौधरी (30) पुत्र बद्रीलाल जाट को पकड़ा और उसके मोबाइल फोन का विश्लेषण करते हुये पाया कि मोबाइल फोन में किक्रेट मैचों पर ऑनलाइन वेबसाईट पर आईडी बनाकर करीब 65 लाख रुपये की सट्टे की खाईवाली की गई। पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर आरोपित विनोद को गिरफ्तार कर 23 जून तक पुलिस रिमांड पर लिया था। वहीं एक अन्य कार्रवाई के तहत हनुमान मार्ग आजाद नगर निवासी गोपाल दास धिरवानी उर्फ गोपी सिंधी

सदर थाना पुलिस ने आरोपियों को अदालत में पेश किया।

(35) पुत्र प्रेमचंन्द धिरवानी सिधी को गिरफ्तार किया गया। गोपाल से पूछताछ कर उसके मोबाइल का विश्लेषण किया तो फोन में क्रिकेट मैचों पर ऑनलाइन वेबसाईट पर आईडी बनाकर करीब 25 लाख रुपये की सट्टे की खाईवाली करते हुये पाये जाने पर प्रकरण दर्ज किया गया।

थाना प्रभारी विश्नोई ने बताया कि पकड़े गये आरोपित विनोद चौधरी से अनुसंधान कर अपराध में संलिप्त अन्य आरोपी भदादा मोहल्ला निवासी मनीष (49) पुत्र श्यामलाल भदादा, आसजी का बाग, बड़ला चौराहा निवासी दीपक भदादा (45) पुत्र सत्यनारायण भदादा, हलेड़ निवासी भगवती लाल जाट (35) पुत्र बलदेव जाट को गिरफ्तार किया था। थाना प्रभारी ने बताया कि आरोपी दीपक, मनीष व भगवतीलाल को अदालत में पेश कर पूछताछ के लिए रिमांड पर लिया गया है। इसके अलावा इसी मामले में चार अन्य नामचीन लोगों की पुलिस को तलाश है, जिनकी गिरफ्तारी के लिए पुलिस की तीन टीमें बनाई गई है, जो संभावित स्थानों पर दबिशें देकर अन्य की गिरफ्तारी के प्रयास कर रही है।

विद्युत जन समस्याओं का त्वरित समाधान करना पहली प्राथमिकता रहे : ऊर्जा मंत्री

ऊर्जा विभाग (स्वतंत्र प्रभार) राज्य मंत्री हीरालाल नागर एक दिवसीय दौरे पर भीलवाड़ा पहुंचे

भीलवाड़ा, (निसं)। ऊर्जा विभाग (स्वतंत्र प्रभार) राज्य मंत्री हीरालाल नागर शनिवार को एक दिवसीय दौरे पर भीलवाड़ा पहुंचे। इस दौरान उन्होंने अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड (एवीवीएनएल) के अधीक्षण अभियंता कार्यालय में अधिकारियों के साथ विभागीय समीक्षा बैठक की। बैठक में जिले की विद्युत आपूर्ति से जुड़ी व्यवस्थाओं, उपभोक्ताओं की समस्याओं, राजस्व वसूली एवं ट्रांसफॉर्मर की उपलब्धता सहित विभिन्न महत्त्वपूर्ण विषयों पर चर्चा की गई।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए नागर ने अधिकारियों को निर्देश दिए कि जिले में निर्बाध एवं गुणवत्तापूर्ण विद्युत आपूर्ति सुनिश्चित की जाए, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ विद्युत फाल्ट या ट्रिपिंग की शिकायतें अधिक आती हैं। उन्होंने कहा कि गर्मी के मौसम में विद्युत मांग बढ़ जाती है,

■ मंत्री हीरालाल नागर ने एवीवीएनएल के अधीक्षण अभियंता कार्यालय में अधिकारियों के साथ विभागीय समीक्षा बैठक की

ऐसे में अधिकारियों को पूर्व से तैयारी रखनी चाहिए ताकि किसी प्रकार की आपात स्थिति में तुरंत समाधान किया जा सके। राज्यमंत्री ने यह भी कहा कि उपभोक्ताओं की शिकायतों के समाधान में किसी भी प्रकार की लापरवाही सहन नहीं की जाएगी। उन्होंने प्रत्येक स्तर पर त्वरित रेस्पॉन्स तंत्र विकसित करने के निर्देश दिए, ताकि उपभोक्ताओं को समय पर राहत मिल सके। ट्रांसफॉर्मर जलने, ओवरलोड की स्थिति तथा बार-बार बिजली जाने की समस्याओं को प्राथमिकता से निपटाने के निर्देश भी दिए गए।

बैठक में मंत्री नागर ने उपभोक्ता शिकायत की स्थिति, कृषि कनेक्शन जारी करने की प्रगति, आरडीएसएस की भौतिक व वित्तीय प्रगति, बजट घोषणाओं के कार्यों की वर्तमान स्थिति इत्यादि की समीक्षा की। उन्होंने निर्देश दिए कि राज्य सरकार द्वारा की गई बजट घोषणा के कार्यों को तय समय पर व गुणवत्ता से पूर्ण करें, विद्युत से संबंधित दुर्घटनाओं में कमी लाने के लिए लाइनों की नियमित अंतराल में मेंटेनेंस हो। नागर ने समीक्षा के दौरान विद्युत चोरी की घटनाओं पर चिंता जताते हुए कहा कि विभाग को इस दिशा में सख्ती से कार्य करना होगा।

ऊर्जा मंत्री ने इस दौरान बीएमएस कार्यालय के उद्घाटन व सम्मान समारोह कार्यक्रम में भी शामिल हुए। साथ ही आमजन की समस्याएं सुनकर त्वरित निस्तारण भी किया। बैठक में सांसद दामोदर अग्रवाल, शहर विधायक अशोक कोठारी, मांडल विधायक उदयलाल भडाणा, जहाजपुर विधायक गोपीचंद मीणा, सहाड़ा विधायक लादूलाल पितलिया, जनप्रतिनिधि प्रशांत मेवाड़ा, राजस्थान राज्य विद्युत प्रसारण निगम लिमिटेड के प्रबंध निदेशक नथमल डिडेल, प्रबंध निदेशक एवीवीएनएल केपी वर्मा, तकनीकी निदेशक एवीवीएनएल एमसी बाल्दी, महापोर राकेश पाठक, विशिष्ट सहायक मंत्री कालूराम मीणा, अतिरिक्त जिला कलेक्टर ओमप्रकाश मेहरा, अधीक्षण अभियंता भीलवाड़ा वृत्त वीरेंद्र कुमार संचेती, अधिशाषी अभियंता, सहायक अभियंता सहित विभिन्न तकनीकी एवं प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित रहे। सभी अधिकारियों ने अपने-अपने कार्यक्षेत्र की प्रगति रिपोर्ट एवं समस्याओं से ऊर्जा मंत्री को अवगत कराया।

खेल जगत

क्रिकेट मैच में श्रीलंका के लिए टॉप स्कोरर ओपनर पथुम निसांका ने 256 गेंदों में 187 रन की पारी खेली, जिसमें 23 चौके और 1 सिक्स जड़ा।

श्रीलंकाई बल्लेबाज पथुम के अलावा कामिंडू मेंडिस ने 87 और चांदीमल ने 54 रन बनाये।

आज का खिलाड़ी

ऋषभ पंत ने इंग्लैंड के खिलाफ हेडिंग्ले में धमाकेदार शतक जड़कर एक बार फिर रिकॉर्ड बुक में अपना नाम दर्ज करा लिया है। एशिया के बाहर एक ही टेस्ट पारी में तीन भारतीय बल्लेबाजों द्वारा शतक लगाने का यह चौथा मौका है। पंत ने शोएब बशीर की गेंद पर एक हाथ से छक्का लगाकर अपने ट्रेडमार्क अंदाज में नाबाद शतक बनाया, इससे पहले युवा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल और कप्तान शुभमन गिल ने शानदार शतक जड़े थे। तीनों के शतकों ने विदेश में भारतीय टेस्ट क्रिकेट के लिए एक दुर्लभ और विशिष्ट उपलब्धि दर्ज की।

क्या आप जानते हैं ?... भारत और इंग्लैंड के बीच टेस्ट अगस्त 2021 में हुआ था, अब इंग्लैंड ने एक पारी और 76 रनों से बड़ी जीत दर्ज की थी।

कैंडलविक क्रिकेट अकादमी जीती

जयपुर, 21जून। अंडर-16 अरावली कप में यति क्रिकेट अकादमी ने पहले बल्लेबाजी करते हुए 28 ओवर में 116 रन 10 विकेट के नुकसान पर ऑल आउट हो गई। हसनैन ने 32 और वरुण ने 23 रनों का योगदान दिया! कैंडलविक क्रिकेट अकादमी की ओर से हिमांक जलानी और मानव गुप्ता ने 3 -3 विकेट लिए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी कैंडलविक क्रिकेट अकादमी ने 31 ओवर में 119 रन 7 विकेट के नुकसान पर बनाकर जीत हासिल कर ली। फलक ने 37 और दक्ष पारीक ने 30 रनों का योगदान दिया। यति क्रिकेट अकादमी ओर से अभिषेक वर्मा ने तीन और रामदेव ने दो विकेट लिए। मैन ऑफ द मैच हिमांक जलानी को चुना गया।

देवांश ने राष्ट्रीय प्रतियोगिता में जीता कांस्य पदक

जयपुर, 21 जून। देहरादून उत्तराखंड में आयोजित हुई राष्ट्रीय ताइक्वांडो प्रतियोगिता में राजस्थान के देवांश राज चौधरी ने अंडर 65 भार वर्ग में कांस्य पदक प्राप्त किया, साथ-साथ ही नेशनल कैंप के लिए क्वालीफाई किया जोकि पंजाब की एलपीयू यूनिवर्सिटी में होगा। यहां पर चयनित खिलाड़ी केडीट एशियन चैंपियनशिप में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। देवांश राज चौधरी पिछले 3 वर्षों से लगातार ताइक्वांडो का अभ्यास कर रहे हैं। देवांश राजस्थान जयपुर की द्रोणाचार्य स्पोर्ट्स अकादमी में अभ्यास करते हैं साथ ही द्रोणाचार्य स्पोर्ट्स अकादमी के निदेशक रमेश सिंह ने इस उपलब्धि पर देवांश एवं उसके कोच कुलदीप योगी को बधाई दी। अकादमी के निदेशक रमेश सिंह ने बताया कि देवांश बहुत ही होनहार खिलाड़ी है। निरंतर अकादमी में ताइक्वांडो का अभ्यास करता है। देवांश ने अपनी उपलब्धियों का श्रेय अपने माता-पिता को दिया। उन्होंने ताइक्वांडो में उनका सपोर्ट किया और आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया।

ओली पोप का 9वां शतक

बुमराह ने रूट को 10वीं बार पैवेलियन भेजा, तीसरा विकेट लिया, इंग्लैंड 200 पार

लीड्स, 21 जून। भारत तेंदुलकर-एंडरसन ट्रॉफी के पहले टेस्ट की पहली पारी में 471 रन पर ऑलआउट हो गया है। इंग्लैंड ने पहली पारी में दो विकेट पर 206 रन बना लिए हैं। ओली पोप और हैरी ब्रूक नाबाद हैं। पोप शतक बना चुके हैं। जो रूट 28, बेन डकेट 62 और जैक क्रॉली 4 रन बनाकर आउट हुए। तीनों को जसप्रीत बुमराह ने आउट किया।

हेडिंग्ले क्रिकेट ग्राउंड में चल रहे मुकाबले के दूसरे दिन शनिवार को भारतीय टीम ने 359/3 के स्कोर से खेलना शुरू किया और आखिरी 7 विकेट 112 रन बनाने में गंवाए। कप्तान शुभमन गिल ने 147, ऋषभ पंत ने 134 और यशस्वी जायसवाल ने 101 रन की शतकीय पारियां खेलीं। केएल राहुल ने 42 रन का योगदान दिया। 23 साल बाद ऐसा हुआ है, जब इस मैदान पर तीन भारतीय बैटर्स ने एक पारी में शतक लगाए हैं। इससे पहले, सचिन तेंदुलकर, राहुल द्रविड़ और सौरव गांगुली ने 2003 में शतक लगाया था। इंग्लैंड की ओर से कप्तान बेन स्टोक्स और जोश टंग ने 4-4 विकेट झटके। ब्रायडन कार्स और शोएब बशीर को एक-एक विकेट मिला। ओली पोप ने 47वें ओवर में शतक पूरा किया। उन्होंने लगातार दूसरे टेस्ट शतक लगाया है। यह पोप का 9वां शतक है। 46वें ओवर में इंग्लैंड ने 200 रन का आंकड़ा पार कर लिया है।

ओलिंपिक मेडलिस्ट नीरज चोपड़ा ने पेरिस डायमंड लीग ने बाजी मारी। पहले ही राउंड में 88.16 मीटर का थ्रो फेंककर जीत दर्ज की। इससे पहले उन्होंने 90.23 मीटर थ्रो किया था और दूसरे स्थान पर थे। वहीं पेरिस डायमंड लीग में जर्मनी के जूलियन वेबर 87.88 मीटर के बेस्ट थ्रो के साथ दूसरे नंबर पर रहे।

श्रीलंका-बांग्लादेश पहला टेस्ट ड्रॉ

शांतो का नाबाद शतक, श्रीलंकाई ऑलराउंडर मैथ्यूज ने करियर का आखिरी टेस्ट खेला

नई दिल्ली, 21 जून। श्रीलंका और बांग्लादेश के बीच पहला टेस्ट ड्रॉ हो गया है। बांग्लादेश ने शनिवार को पांचवें दिन दूसरी पारी 285/6 के स्कोर पर डिक्लेयर कर दी। श्रीलंका को जीत के लिए 296 रन बनाने थे। जब मैच ड्रॉ हुआ, तब श्रीलंका का स्कोर 72/4 था।

गॉल टेस्ट में बांग्लादेश ने टॉस जीतकर पहले बैटिंग का फैसला किया। टीम ने पहली पारी में 495 रन बनाए। जवाब में श्रीलंका की टीम पहली पारी 485 पर ऑलआउट हुई। पांचवें दिन बारिश की वजह से मैच कई बार रुका।

श्रीलंकाई ऑलराउंडर एंजेलो मैथ्यूज ने टेस्ट क्रिकेट से संन्यास ले लिया, उनका यह आखिरी टेस्ट मैच था। सीरीज का दूसरा मुकाबला 25 जून के कोलंबो में खेला जाएगा।

बांग्लादेश की दूसरी पारी- शांतो ने दूसरी पारी में नाबाद 125 रन बनाए पांचवें दिन बांग्लादेश ने दूसरी पारी में 177/3 के स्कोर से आगे खेलना शुरू किया। इसके बाद टीम ने 108 रन जोड़े और लंच के बाद 285/6 के स्कोर पर पारी घोषित कर दी। दूसरी पारी में भी नजमुल हुसैन शांतो ने नाबाद 125 रनों की पारी खेली। उन्होंने पहली पारी में भी 148 रन बनाए थे। उन्हें प्लेयर ऑफ द मैच चुना गया। उनके अलावा शादमान इस्लाम ने 76 रन बनाए।

पंत शतकों की हैट्रिक लगाने वाले विशिष्ट क्लब में हुये शामिल

लीड्स, 21 जून। ऋषभ पंत ने इंग्लैंड के खिलाफ हेडिंग्ले में धमाकेदार शतक जड़कर एक बार फिर रिकॉर्ड बुक में अपना नाम दर्ज करा लिया है। एशिया के बाहर एक ही टेस्ट पारी में तीन भारतीय बल्लेबाजों द्वारा शतक लगाने का यह चौथा मौका है। पंत ने शोएब बशीर की गेंद पर एक हाथ से छक्का लगाकर अपने ट्रेडमार्क अंदाज में नाबाद शतक बनाया, इससे पहले युवा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल और कप्तान शुभमन गिल ने शानदार शतक जड़े थे। तीनों के शतकों ने विदेश में भारतीय टेस्ट क्रिकेट के लिए एक दुर्लभ और विशिष्ट उपलब्धि दर्ज की। एशिया के बाहर एक ही टेस्ट पारी में तीन भारतीय बल्लेबाजों द्वारा शतक लगाने का यह चौथा मौका है। इससे पहले 1986 में सुनील गावस्कर, श्रीकांत और मोहिंदर अमरनाथ ने सिडनी में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ यह उपलब्धि हासिल की थी। 2002 में राहुल द्रविड़, सचिन तेंदुलकर और सौरव गांगुली ने हेडिंग्ले में इंग्लैंड के खिलाफ ऐसा किया था।

शतक के साथ दौरे की शुरुआत करना यादगार क्षण : जायसवाल

लीड्स, 21 जून। भारत के युवा सलामी बल्लेबाज यशस्वी जायसवाल ने इंग्लैंड में अपने पहले टेस्ट शतक को भारतीय क्रिकेट में एक नए युग का हिस्सा बताया और हेडिंग्ले में यादगार प्रदर्शन के लिए गौतम गंभीर के नेतृत्व में टीम के माहौल, नेतृत्व और तैयारी को श्रेय दिया। हेडिंग्ले में पहले टेस्ट के पहले दिन इंग्लैंड में पदार्पण शतक लगाने वाले जायसवाल ने कहा कि इस तरह से दौरे की शुरुआत करना एक विशेष क्षण था। उन्होने कप्तान शुभमन गिल के साथ सौहार्द की प्रशंसा की, जिन्होंने भी शतक बनाया। दिन के खेल की समाप्ति पर जायसवाल ने कहा, हम अपना सर्वश्रेष्ठ देने, कड़ी मेहनत करने और देश के लिए प्रदर्शन करने की कोशिश कर रहे हैं।

टीम का माहौल शानदार रहा है। हमें अपना स्वाभाविक खेल खेलने की आज़ादी दी गई है और इससे वाकई मदद मिली है। अपनी तैयारी के बारे में जायसवाल ने बताया कि गौतम गंभीर के मार्गदर्शन में बेंगलुरु में इंडिया ए के लिए खेलना बहुत महत्वपूर्ण था। उन्होंने कहा, हमारे पास कुछ गहन सत्र और बहुत सारी तकनीकी चर्चायें थीं। गौतम सर बहुत सहायक थे। मुझे कड़ी मेहनत करने में मज़ा आया और इससे मुझे यहाँ आने का आत्मविश्वास मिला। पारी के दौरान ऐंठन का अनुभव करने के बावजूद, जायसवाल ने कहा कि वह स्थिति को संभालने और गेंदबाजी चुनौतियों के अनुकूल होने पर केंद्रित रहे। उन्होंने कहा, खेल के दौरान ऐसे क्षण भी आये जब मुझे धीमा होना पड़ा, फ़ील्ड प्लेसमेंट का आकलन करना पड़ा और उसके अनुसार खेलना पड़ा। टीम की ज़रूरतों के हिसाब से बल्लेबाज़ी करना महत्वपूर्ण था। ऑस्ट्रेलिया और इंग्लैंड दोनों में शतक बनाने पर विचार करते हुए, बाएं हाथ के बल्लेबाज ने कहा मैं जहां भी जाता हूँ और जब भी खेलता हूँ, मेरा लक्ष्य हमेशा बड़ा स्कोर बनाना होता है। मुझे शतक बनाने में मज़ा आता है और मुझे वह एहसास बहुत पसंद है। बेशक, कुछ पल बहुत खास होते हैं। इंग्लैंड में डेब्यू शतक, खासकर जब हमारे कप्तान शुभमन ने भी शतक बनाया।

यह इसे और भी यादगार बना देता है। किसी भी चीज़ का पहला प्रदर्शन हमेशा खास होता है और भारतीय क्रिकेट के लिए ऐसे मंच पर ऐसा करना कुछ ऐसा है जिसे मैं हमेशा याद रखूँगा। उन्होंने कहा हम सत्र दर सत्र खेलना चाहते थे, ढीली गेंदों को दंडित करना चाहते थे और स्कोरबोर्ड को आगे बढ़ाना चाहते थे। हमने वास्तव में एक साथ बल्लेबाजी का आनंद लिया। जायसवाल ने कहा, मैंने बस खुद को सर्वश्रेष्ठ मौका देने की कोशिश की। मैंने अपने खेल और मानसिकता पर ध्यान केंद्रित किया। प्रारूप से ज़्यादा तैयारी मायने रखती थी। हमें खेल का लुत्फ़ उठाने और खुलकर खेलने के लिए कहा गया है।

सुमित गोदारा अपने दोहरे शतक के करीब, शोभित मिश्रा व आयुष अमेरिया के अर्द्धशतक

जयपुर, 21 जून। आरसीए एडहॉक कमेटी सदस्य विमल शर्मा ने बताया बीसीसीआई के आगामी घरेलू क्रिकेट सत्र 2025-26 की पूर्व तैयारियों की लिए आरसीए एडहॉक कमेटी संयोजक व विधायक जयदीप बिहाणी के निर्देशानुसार राजस्थान क्रिकेट संघ द्वारा बीसीसीआई सीनियर रणजी ट्रॉफी क्रिकेट प्रतियोगिता में भाग लेने वाली राजस्थान सीनियर टीम के संभावितों के चयन हेतु आरसीए के तत्वाधान में खेली जा रही राज्य स्तरीय सीनियर कॉल्विन शील्ड क्रिकेट प्रतियोगिता के जयपुर में खेले जा रहे मल्टी डेज सेमीफाइनल मैच के तीसरे दिन तक दोनों टीमों की

जयपुर में जारी बारिश के कारण पहली पारी पूर्ण नहीं होने के वजह से दोनों सेमी फाइनल मैच को रिजर्व डे (कल दिनांक 22 जून) तक के लिए बढ़ाया गया। विमल शर्मा के अनुसार 11 वे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर राज्य के युवा खिलाडियों में योग के महत्व को समझाने व उनकी शारीरिक व मानसिक मजबूती के लिए राजस्थान क्रिकेट संघ से सम्बंधित जिला क्रिकेट संघ केन्द्रो पर आज योग दिवस कार्यक्रम आयोजित किये गए। जयपुर में आरसीए के तत्वाधान में आयोजित की जा रही राज्य स्तरीय सीनियर कॉल्विन शील्ड प्रतियोगिता के सेमी फाइनल मैच के पूर्व के एल सैनी स्टेडियम व जयपुरिया ग्राउंड पर सभी टीमों के खिलाडियों , मैच ऑफिशल्स ने योग दिवस मनाया।

गिल ने की कोहली और गावस्कर की बराबरी

यशस्वी ने इंग्लैंड में पहली सेंचुरी लगाई

नई दिल्ली, 21 जून। तेंदुलकर-एंडरसन ट्रॉफी के तहत भारत और इंग्लैंड के बीच पहले टेस्ट के पहले दिन भारत ने 3 विकेट खोकर 359 रन बना लिए हैं। लीड्स में शुभमन गिल बतौर कप्तान पहले मैच में शतक लगाने वाले 5वें भारतीय बने। ओपनर यशस्वी जायसवाल ने इंग्लैंड में अपना पहला शतक लगाया। अहमदाबाद प्लेन क्रैश में जान गंवाने वाले लोगों को श्रद्धांजलि देने के लिए प्लेयर्स काली पट्टी बांधकर खेलने उतरे।यशस्वी जायसवाल इंग्लैंड में पहली पारी में शतक बनाने वाले 5वें भारतीय बने। वे 101 रन बनाकर आउट हुए। जायसवाल को कप्तान बेन स्टोक्स ने बोल्ड किया।भारतीय ओपनर्स ने 39 साल के बाद लीड्स के हेडिंग्ले स्टेडियम में 50 रन से ज्यादा की ओपनिंग साझेदारी की। यशस्वी जायसवाल और केएल राहुल ने 91 रन जोड़े।शुभमन गिल कप्तान बनने के बाद पहले मैच में शतक लगाने वाले 5वें भारतीय बने हैं। उनसे पहले विजय हजारे, सुनील गावस्कर, दिलीप वेंगसरकर और विराट कोहली यह कारनामा कर चुके हैं।काली पट्टी बांधकर खेलने उतरे प्लेयर्स भारत-इंग्लैंड टीम के खिलाड़ियों, सपोर्ट स्टाफ और दर्शकों ने मैच शुरू होने से पहले 2 मिनट का मौन रखा। साथ ही सभी प्लेयर्स काली पट्टी बांधकर भी खेलने उतरे। 12 जून को अहमदाबाद के प्लेन हादसे में जान गंवाने वाले लोगों को साई सुदर्शन 20 जून को टेस्ट डेब्यू करने वाले चौथे प्लेयर बने। वे भारत के लिए टेस्ट क्रिकेट खेलने वाले 317वें खिलाड़ी हैं। हालांकि, सुदर्शन अपने डेब्यू पर खाता भी नहीं खोल सके। राहुल द्रविड़, सौरव गांगुली और विराट कोहली ने इस तारीख को डेब्यू किया था। खास बात यह है कि सभी ने 100 से ज्यादा टेस्ट मैच खेले हैं।श्रद्धांजलि देने के लिए ऐसा किया गया।

वोंद्रोसोव बर्लिन ओपन के फाइनल में

बर्लिन, 21 जून। छठी वरीयता प्राप्त चेक खिलाड़ी मार्केटा वोंद्रौसोवा ने बर्लिन ओपन टेनिस टूर्नामेंट के महिला एकल के सेमीफाइनल में शीर्ष वरीयता प्राप्त बेलारुस की एरिना सबालेंका को 6-2,6-4 से हरा कर फाइनल में प्रवेश किया।

OFFICE OF THE EXECUTIVE ENGINEER
PWD DIVISION BASERI

File No. 390-97 Date: 12.06.2025

Notice Inviting Bid

NIB code PWD2526A1295 and
UBN is: PWD2526WSRC04469, PWD2526WSRC04470

Bids For NIT No. 01/2025-26 Misc. Work of PWD Division Dholpur of subject matter(s) of Procurement are Invited from interested bidders date 13.06.2025 11.00 AM to Date 23.06.2025 upto 12.00 Noon. Other particulars of the id may be visited on the procurement portel (http://eproc.rajasthan.gov.in, http://spps.raj.nic.in) of the state; and PWD departmental website. The approximate value of the procurement is Rs. 80.00 Lacs

(Sagar Parashar)
Executive Engineer
PWD Division Baseri

DIPR/C/8276/2025

राजस्थान राज्य जूनियर बॉयज फुटबॉल चैम्पियनशिप 2025

अधिराज नारायण मिश्रा जयपुर टीम के कप्तान बने, अक्षज सोनी उपकप्तान बने

जयपुर, 21 जून। राजस्थान फुटबाल संघ के तत्वाधान और जिला फुटबाल संघ सीकर द्वारा आयोजित होने जा रही राजस्थान राज्य जूनियर बॉयज फुटबॉल चैंपियनशिप 2025 में भाग लेने वाली जयपुर जिला की फुटबॉल टीम आज सीकर के लिए रवाना हुई। जयपुर जिला की 18 सदस्य टीम के कप्तान अधिराज नारायण मिश्रा को और उप कप्तान अक्षज सोनी को बनाया गया है। आज चौगान स्टेडियम में जयपुर जिला फुटबॉल संचालन समिति के सदस्य अब्दुल जब्बार, हितेश शर्मा और डॉ दिलीप सिंह चुंडावत ने जयपुर टीम की घोषणा की और टीम के सदस्यों को टीम किट प्रदान किया।

अब्दुल जब्बार ने बताया कि जयपुर जिला फुटबॉल टीम का चयन 15 जून को आयोजित ट्रायल और उसके बाद आयोजित पांच दिवसीय कैंप के आधार पर किया गया। ट्रायल में जयपुर जिले के 287 खिलाड़ियों ने भाग लिया जिसमें से अंतिम 18 सदस्य टीम का चयन किया गया है।

पांच दिवसीय चयन और ट्रेनिंग कैंप पूर्व राष्ट्रीय खिलाड़ी और वर्तमान में चौगान स्टेडियम के फुटबॉल कोच हितेश शर्मा के मार्गदर्शन में अखिल भारतीय फुटबॉल महासंघ से मान्यता प्राप्त "सी"लाइसेंस कोच संजय लांबा की देखरेख में आयोजित किया गया। मुख्य कोच हितेश शर्मा के अनुसार जयपुर टीम संतुलित और उत्साहित है और उन्हें उम्मीदें कि वह टूनमिंट में बेहतर प्रदर्शन करेगी।

यह प्रतियोगिता नॉकआउट आधार पर खेली जा रही है और प्रतियोगिता का फाइनल 24 जून को खेला जाएगा। जयपुर टीम प्रतियोगिता में अपना प्रथम मैच जोधपुर से 22 जून को दोपहर 3 बजे खेलेगी। अब्दुल जब्बार ने बताया कि इस राज्य स्तरीय फुटबॉल प्रतियोगिता के माध्यम से आगामी राष्ट्रीय प्रतियोगिता के लिए राजस्थान टीम के खिलाड़ियों का चयन किया जाएगा। टीम इस प्रकार है-

आरव फौजदार, अबीर सिंह, लव सिंह, अवीयुक्त नायर, अथर्व अनिल कुमार, विहान विराज शेखावत, अधीक्षित सकलानी, अधिराज नारायण मिश्रा (कप्तान), अतिवीर ढोंखा,आरुष गोयल, मनोविराज सिंह शेखावत, लक्ष्य चौधरी, युवराज ठाकुर, मानवीक घई, वीरेन सरकार, अक्षज सोनी (उप कप्तान), अजीत यादव, यानिस कपूर, टीम के कोच संजय लांबा और मैनेजर विकास यादव है।

OFFICE OF THE DY. CONSERVATOR OF FOREST , WILDLIFE, JAISALMER

No:F( )Store / DCFWL /2025/4672 Date : 20.06.2025

E -NOTICE INVITING TENDER

Bids for RCC Straight post, Chain link fence and Galvanized Barbed wire as per below ENIB Number under Wildlife Division Jaisalmer are invited from interested bidders 20.06.2025 to 30.06.2025 Other Particulars of the bid may be visited on the procurement portal https://eproc.rajasthan.gov.in of the state.

NIB Code	UBN No.	Tender ID
FOR2526A0599	FOR2526GLOB00705	2025_FORES_481360_1
FOR2526A0560	FOR2526GLOB00706	2025_FORES_481391_1
FOR2526A0561	FOR2526GLOB00707	2025_FORES_481424_1

Dy.Conservator of Forest
Wildlife Jaisalmer

RIICO
GROW WITH RAJASTHAN

RISING™ RAJASTHAN
REPLETE • RESPONSIBLE • READY

प्रत्यक्ष आवंटन योजना - 2025

राइज़िंग राजस्थान में MoU करने वाले निवेशकों के लिए भूखण्ड के आरक्षित मूल्य पर

औद्योगिक भूखण्डों का डायरेक्ट अलॉटमेंट
तृतीय चरण

नियोजित लॉजिस्टिक भूखण्डों का आवंटन आरक्षित मूल्य पर

आवेदन की अन्तिम तिथि बढ़ी

ऑनलाइन पोर्टल पर दिनांक 04.07.2025 (सायं 6 बजे तक) आवेदन आमंत्रित किये जा रहे हैं।

ई-लॉटरी 09 जुलाई, 2025

97 औद्योगिक क्षेत्र | 6,854 कुल औद्योगिक भूखण्ड | 6,085 अनारक्षित भूखण्ड | 39 लॉजिस्टिक भूखण्ड

विभिन्न श्रेणियों / वर्गों के लिए आरक्षित भूखण्ड

237 अनुसूचित जाति/जनजाति | 206 महिला वर्ग | 117 भूतपूर्व सैनिक | 147 बेंचमार्क दिव्यांगता | 62 सशस्त्र बलों/अर्ध सैनिक बलों के मृतक के आश्रित

आवंटन की प्रक्रिया

एक भूखण्ड पर एक ही आवेदक होने पर सीधा आवंटन तथा एक से अधिक आवेदक होने पर ई-लॉटरी के माध्यम से आवंटन

EMD - भूखण्ड की कुल देय प्रीमियम राशि की 5 प्रतिशत राशि आवेदन के साथ ही ऑनलाइन जमा।

पात्रता - निवेशक जिन्होंने 30/04/2025 तक राइजिंग राजस्थान में राज्य सरकार के साथ एमओयू किये हैं वे सभी इस स्कीम में भूखण्ड के लिए पात्र हैं।

आवेदन हेतु स्कैन करें

भूखण्ड की राशि का भुगतान

25% भुगतान के बाद, शेष 75% भुगतान 11 किश्तों में 8.5% ब्याज के साथ या
120 दिनों के भीतर ब्याज रहित भुगतान
या
RIICO की टर्म लोन स्कीम के तहत भूमि की लागत का 75% तक का ऋण
5 साल की पुनर्भुगतान अवधि एवं 8.5% ब्याज के साथ

औद्योगिक क्षेत्रों में नियोजित लॉजिस्टिक भूखण्डों के आवंटन से संबंधित पॉलिसी riico.rajasthan.gov.in पर देखें।

इस योजना के तहत भूखण्ड देखने या आवेदन करने के लिए https://riico.rajasthan.gov.in पर दिए गए Direct Land Allotment लिंक पर क्लिक करें अथवा SSO Portal पर login के बाद RIICO के आइकन पर क्लिक करके Land Allotment पर जाएं और Direct Land Allotment Policy - 2025 (for RR MoU Holders) पर क्लिक करें।

राजस्थान स्टेट इंडस्ट्रियल डवलपमेंट एंड इन्वेस्टमेंट कॉर्पोरेशन लिमिटेड
उद्योग भवन, तिलक मार्ग, सी-स्कीम, जयपुर 302005

हैल्पलाइन नंबर : 0141 4593250, 4593237 | वाट्सएप : +91 90013 06515 | ई-मेल : riico@riico.co.in
riico.rajasthan.gov.in • riicogis.rajasthan.gov.in/riicogiscitizen

राज.संवाद/सी/25/4671

जोधपुर में बरसाती नाले में कार बही, तीन की मौत

पानी का बहाव इतना तेज था कि कार सवारों को बचने का अवसर नहीं मिला

जोधपुर, 21 जून (कासं)। जोधपुर में शनिवार को बरसात के दौरान नाले में पानी के तेज बहाव में कार बह गई। कार सवार तीन जनों की मौत हो गई। पानी का बहाव इतना तेज था कि कार सवारों को बचने का अवसर तक नहीं मिला। सूचना पर पुलिस ने मौके पर पहुंचकर कार से शव बाहर निकाले।

पुलिस ने बताया कि प्रताप नगर, सूरसागर रोड पर स्थित डऊकिया हॉस्पिटल के पीछे शांतिनाथ नगर में रहने वाले हरिप्रकाश भंडारी अपने (माहेश्वरी) बेटे के दादा ससुर संपत लाहोटी व दादी सास उर्मिला देवी लाहोटी तथा एक अन्य रिश्तेदार महिला सूरज मानधना के साथ दईजर क्षेत्र स्थित राधारानी मंदिर दर्शन करने जा रहे थे। लाहोटी दंपती अपने दोहिते के जन्मदिन पर सूरत से जोधपुर आए हुए थे।

■ **दईजर क्षेत्र में ओटीसी के निकट आटिया नाला पुलिया की रपट पर पानी का बहाव तेज था। वहाँ मौजूद ग्रामीणों ने कहा भी था कि पानी का बहाव तेज है, थोड़ी देर बाद निकल जाना, पर, कार वालों ने उनकी बात पर ध्यान नहीं दिया और कार आगे बढ़ा दी।**

दईजर क्षेत्र में ओटीसी के निकट आटिया नाला पुलिया की रपट पर पानी बह रहा था। पानी तेज बहाव से बह रहा था। मौके पर मौजूद ग्रामीणों ने कहा भी था कि पानी का बहाव तेज है, थोड़ी देर बाद निकल जाना। मगर उन्होंने ग्रामीणों की बात पर ध्यान नही दिया और कार आगे बढ़ा दी। और देखते ही देखते यह हादसा हो गया। इस हादसे में प्लाइवुड कारोबारी हरीप्रकाश भंडारी (58) और रिश्तेदार महिला उर्मिलादेवी लाहोटी (72) की मौत हो गई, और संपत लाहोटी तेज बहाव में बह गए। स्थानीय ग्रामीणों ने बुजुर्ग महिला सूरज मानधना (70) को बचा लिया। संपत लाहोटी का शव बाद में मिल गया।

सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और राहत कार्य शुरू किया। सूचना पर एसडीआरएफ और गोताखोर मालवीय बंधुओं की टीमें भी मौके पर पहुंची और बचाव कार्य में जुट गई। प्रारंभ में बारिश के कारण नाले में तेज बहाव होने से बचाव कार्य में कठिनाई आई। बाद में शाम को संपत लाहोटी का शव भी मिल गया। जिस जगह पर हादसा हुआ वो सड़क जोधपुर से ओसियां की तरफ जाती है। यही पर दईजर के समीप आटिया नाला है। हादसे के बाद यहां पानी जमा हो गया था। इससे संभवतया कार चालक पुलिया और सड़क का अंदाजा नहीं लगा पाया। इसी दौरान यह हादसा हो गया। एमजीएच मोर्चरी के बाहर एकत्रित हुए माहेश्वरी समाज के लोगों से पता चला कि हरिप्रकाश भंडारी ने शनिवार सुबह सिवांची गेट स्थित महेश स्कूल परिसर में महेश शिक्षण संस्थान के सामूहिक योगाभ्यास कार्यक्रम में भी हिस्सा लिया था। इसके बाद वे वापस घर पहुंचे और रिश्तेदारों के साथ एकादशी पर दईजर क्षेत्र में गोशाला और राधा-रानी मंदिर दर्शन करने निकले थे। भंडारी का जालोरी गेट पर प्लाईवुड का शोरुम है।

देश में करोना से अब तक 121 की मौत

नयी दिल्ली, 20 जून। देश में पिछले कुछ दिनों से करोना संक्रमण के सक्रिय मामलों में कमी दर्ज की गयी है और शनिवार को इस वायरस से उबरने वालों की कुल संख्या 19453 पहुंच गयी जबकि कुल सक्रिय मामलों का आंकड़ा घटकर 5012 रह गया।

पिछले 24 घंटों के दौरान करोना संक्रमण से राजस्थान के एक और मरीज की मौत होने के साथ देश में मृतकों का आंकड़ा बढ़ कर 121 हो गया। गौरतलब है कि 22 मई को देश में करोना के सिर्फ़ 257 मामले सक्रिय थे। केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्रालय की ओर से आज जारी आंकड़ों के अनुसार पिछले 24 घंटों के दौरान करोना संक्रमण के मामलों में 596 की कमी दर्ज की गयी। दूसरी ओर इस वायरस के संक्रमण से 1197 मरीज स्वस्थ्य हुए हैं। इस जान लेवा वायरस के संक्रमण एक और मरीजों की मौत होने से मृतकों का आंकड़ा 121 पहुंच गया। स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों के अनुसार संक्रमण के मामलों में दक्षिण भारत का केरल राज्य सबसे अधिक प्रभावित हुआ है।

ईरान से 827 भारतीय सुरक्षित स्वदेश लौटे

भारत सरकार ने ईरान में फंसे नेपाल व श्रीलंका के नागरिकों को भी निकालने का फैसला किया

नयी दिल्ली, 21 जून। ईरान और इज़रायल के बीच बढ़ते सैन्य टकराव के बीच भारत सरकार की ओर से शुरू किए गए ऑपरेशन सिंधु के तहत अब तक 827 भारतीय नागरिकों को ईरान से सुरक्षित स्वदेश लाया गया है। यह जानकारी विदेश मंत्रालय ने शनिवार को दी। विदेश मंत्रालय ने ऑपरेशन की प्रगति को साझा करते हुए बताया कि शुक्रवार देर रात और शनिवार तड़के कई विशेष उड़ानों से भारतीय नागरिकों को नई दिल्ली लाया गया। इनमें विद्यार्थियों, धार्मिक यात्रियों और अन्य भारतीय नागरिक शामिल रहे।

विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने बताया कि 20 जून की रात 11:30 बजे एक चार्टर्ड फ्लाइट से 290 भारतीय नागरिक नई दिल्ली पहुंचे। यह उड़ान ईरान से रवाना हुई थी। इसके बाद 21 जून की सुबह 3 बजे एक और फ्लाइट अश्गाबात, तुर्कमेनिस्तान से नई दिल्ली पहुंची, जिसमें ईरान से निकाले गए 227 भारतीय नागरिक सवार थे। 21 जून की शाम 4.30 बजे ईरान के मशहद से उड़ान भरने वाली एक अन्य फ्लाइट भी 310 भारतीय नागरिकों को लेकर दिल्ली पहुंची। इस तरह अब तक 827 नागरिकों को सफलतापूर्वक वापस लाया जा चुका है।

■ **विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने भारतीयों की सुरक्षित वापसी के लिए ईरान सरकार को धन्यवाद दिया।**

प्रवक्ता रणधीर जायसवाल ने ईरान सरकार को निकासी प्रक्रिया में सहयोग के लिए धन्यवाद देते हुए कहा, भारत, ईरान सरकार के सहयोग के लिए आभारी है, जिन्होंने इस पूरे अभियान में सुविधा उपलब्ध कराई।

गौरतलब है कि इज़रायल और ईरान के बीच छिड़े युद्ध के बाद ईरान से अपने नागरिकों को सुरक्षित निकालने के लिए भारत ने ऑपरेशन आपरेशन सिन्धु शुरू किया है।

भारत ने नेपाल और श्रीलंका की सरकारों के अनुरोध पर, आपरेशन सिंधु के तहत ईरान में फंसे भारतीयों के अलावा नेपाली एवं श्रीलंकाई नागरिकों को भी निकालने का फैसला किया है।

तेहरान स्थित भारतीय दूतावास ने सोशल मीडिया के माध्यम से यह जानकारी दी कि भारतीय नागरिकों के साथ साथ नेपाल और श्रीलंका के नागरिकों के पंजीकरण शुरू कर दिये हैं।

नेपाल की विदेश मंत्री डॉ आरज़ू राणा देउबा ने एक्स पर पोस्ट के माध्यम से भारत एवं विदेश मंत्री एस जयशंकर के प्रति आभार व्यक्त किया है। उन्होंने लिखा,ईरान से नेपाली नागरिकों को निकालने में मदद करने में भारत की त्वरित सहायता के लिए धन्यवाद डॉ जयशंकर। भारत का सहयोग नेपाल-भारत संबंधों की ताकत को प्रतिबिंबित करता है।

पाकिस्तान ने नोबल पुरस्कार के लिए ट्रंप को नॉमिनेट किया

पाक सरकार ने अधिकृत बयान जारी कर कहा कि ट्रंप ने भारत -पाक के बीच बड़े युद्ध को रुकवाया है

इस्लामाबाद, 21 जून। पड़ोसी देश पाकिस्तान ने अमरीकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रम्प को 2026 के नोबल पीस प्राइज़ के लिए नॉमिनेट किया है। पाकिस्तान सरकार ने आधिकारिक बयान जारी कर इस बात की पुष्टि की है। बयान के अनुसार भारत पाक युद्ध के दौरान ट्रम्प ने दोनों देशों में मध्यस्थता कर एक बड़े युद्ध को टालने में मदद की है। पिछले काफी समय से इस बात के कयास लगाए जा रहे थे कि पाकिस्तान ट्रम्प को नॉमिनेट करने वाला है। जिसके बाद अब आखिरकार पाकिस्तान सरकार ने एक्स पर पोस्ट शेयर कर इसकी पुष्टि कर दी है।

■ **पाक सरकार ने एक्स पर पोस्ट शेयर कर यह जानकारी दी।**

■ **इधर ट्रंप ने सोशल मीडिया पर लिखा, ''मैं चाहे जो करुं मुझे नोबेल शांति पुरस्कार नहीं मिलेगा।''**

पाकिस्तानी सरकार ने एक्स पर पोस्ट शेयर करते हुए इस नामांकन की जानकारी दी है। उन्होंने लिखा, भारत-पाक युद्ध के दौरान ट्रम्प के निर्णायक कूटनीतिक हस्तक्षेप और महत्वपूर्ण नेतृत्व को मान्यता देते हुए पाकिस्तान सरकार ने उन्हें 2026 के नोबल शांति पुरस्कार के लिए औपचारिक रूप से नामित करने का फैसला लिया है।

अमेरिकी राष्ट्रपति ट्रम्प ने दावा किया है कि उन्होंने भारत-पाकिस्तान के बीच युद्ध टालने, रूस-यूक्रेन और ईरान-इजराइल जैसे विवादों को सुलझाने में अहम भूमिका निभाई, लेकिन उन्हें नोबल पीस प्राइज़ नहीं मिलेगा।

ट्रम्प ने शुक्रवार को 'ट्रुथ सोशल' पर पोस्ट करते हुए लिखा था, मैं जो भी कर लूं, नोबल शांति पुरस्कार नहीं मिलेगा। मैंने विदेश मंत्री मार्क रुबियो के साथ मिलकर कांगो-रवांडा युद्ध को रोकने के लिए शांति समझौता कराया है। यह दशकों से चल रहा खूनी संघर्ष था।

ईरानी सेना के ड्रोन प्रमुख अमीनपुर जौदकी मारे गए?

यरुशलम, 21 जून। इज़रायली सशस्त्र बलों (आईडीएफ) ने इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (आईआरजीसी) के ड्रोन प्रमुख अमीनपुर जौदकी और ईरानी कुद्स फोर्स के फिलिस्तीन कोर कमांडर सईद इज़ादी के मारे जाने का दावा किया है।

इज़रायल के रक्षामंत्री इजरायल काट्ज ने शनिवार को यह जानकारी दी। कट्ज ने बताया कि इज़ादी की मौत मध्य तेहरान में एक अपार्टमेंट पर हमले में हुई। वह सात अक्टूबर के हमले से पहले हमास को वित्तपोषित करने और हथियार देने के लिए जिम्मेदार थे। उन्होंने इस ऑपरेशन को इज़राइली खुफिया एजेंसी और वायु सेना के लिए एक बड़ी उपलब्धि बतायी। उन्होंने कहा,इज़राइल का लंबा हाथ उसके सभी दुश्मनों तक पहुँच जाएगा। इसके अलावा इज़राइली वायु सेना ने आईआरजीसी वायु सेना के दूसरे मानव रहित हवाई वाहन(यूएवी) ब्रिगेड के कमांडर जौदकी को भी मार गिराया।

■ **इज़रायल की सेना ने यह दावा किया है पर अभी ईरान ने इसकी पुष्टि नहीं की है**

आईडीएफ ने एक बयान में कहा,अपनी भूमिका के तहत जौदकी ने दक्षिण-पश्चिमी ईरान के अहवाज़ क्षेत्र से इजरायली क्षेत्र के खिलाफ सैकड़ों ड्रोन हमलों को अंजाम दिया।

बयान में कहा गया, आईआरजीसी वायु सेना के यूएवी मुख्यालय के कमांडर ताहिर पौर के 13 जून 2025 को इजरायली हमले में मारे जाने के बाद जौदकी ने मुख्यालय के संचालन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

सोनम रघुवंशी 13 दिन की न्यायिक हिरासत में

■ **शिलांग कोर्ट ने सोनम के साथ उसके कथित प्रेमी राज कुशवाह को भी राजा रघुवंशी केस में 13 दिन की हिरासत में भेजा है**

■ **मेघालय पुलिस ने बताया कि जब सोनम का उसके कथित प्रेमी राज कुशवाह से आमना -सामना कराया गया तो सोनम ने अपने पति राजा रघुवंशी की हत्या का जुर्म कबूल लिया।**

इंदौर, 21 जून। राजा रघुवंशी मर्डर केस में शनिवार को शिलांग कोर्ट ने सोनम रघुवंशी और राज कुशवाहा को 13 दिन की न्यायिक हिरासत में भेज दिया है। राजा रघुवंशी की हत्या के मामले में सोनम और उसका प्रेमी राज ही मुख्य आरोपी है। इन दोनों को न्यायिक हिरासत में भेजने का मतलब है कि पुलिस ने अब इनकी कस्टडी की मांग नहीं की है। इस सनसनीखेज हत्या के मामले में गिरफ्तार तीन और आरोपी आकाश, विशाल और आनंद को पहले ही न्यायिक हिरासत में भेजा जा चुका है।

मालूम हो कि राजा रघुवंशी हत्याकांड में गिरफ्तार किए गए पांचों आरोपियों की पुलिस रिमांड पूरी होने के बाद सभी को गुरुवार को कोर्ट में पेश किया गया था। इस दौरान पुलिस ने कोर्ट से आरोपियों की रिमांड बढ़ाने की मांग की। इसके बाद, कोर्ट ने सोनम और राज की रिमांड दो दिन के लिए बढ़ा दी।

वहीं, अन्य तीन आरोपियों को न्यायिक हिरासत में भेजने के आदेश दिए। कोर्ट में पेशी से पहले सोनम ने पति राजा रघुवंशी की मौत में अपनी भूमिका को स्वीकार कर लिया था।

मेघालय पुलिस ने जब उसके प्रेमी राज कुशवाह से उसका आमना-सामना कराकर पूछताछ की, तो उसने अपना जुर्म कबूल कर लिया। राजा रघुवंशी हत्याकांड में भाड़े के तीनों शूटर्स के बाद अब सोनम और राज को न्यायिक हिरासत में भेजने का मतलब है कि पुलिस को इन आरोपियों से अभी जितनी पूछताछ करनी थी, वो लगभग पूरी हो चुकी है। अब पुलिस मामले में चार्जशीट बनाने की कवायद में जुटेगी।

क्या वाकई में ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वैश्विक साख को नुकसान पहुँचा है।

पर्यवेक्षकों ने पिछले कुछ महीनों में हुई कई रणनीतिक गलतियों की ओर इशारा किया है, जिनमें अमेरिका ओर इज़रायल की ओर भारत का बढ़ता झुकाव शामिल है, जिसे पश्चिम एशिया की जटिल राजनीति में प्रतिकूल माना जा रहा है। मध्य-पूर्व में रहे एक पूर्व राजदूत ने कहा, ''वॉशिंगटन और तेल अवीव के बहुत करीब जाकर भारत ने इस क्षेत्र के अपने कई पारंपरिक सहयोगियों का विश्वास खो दिया है। यह नीति प्रतीकात्मकता ज्यादा और रणनीतिक कम लगती है, जो अमेरिकी हितों को तो साध रही है, पर भारत की दीर्घकालिक भू-राजनीतिक स्थिति को नज़रअंदाज कर रही है।''

विशेषज्ञों का मानना है कि भारत द्वारा अमेरिका के पक्ष में लिए गए निर्णय, खासकर पश्चिम एशिया में, एक ऐसी सोच को दर्शाते हैं जो तात्कालिक राजनयिक प्रभाव पर केन्द्रित है, न कि दीर्घकालिक दृष्टिकोण पर। सेवानिवृत्त विदेश सेवा अधिकारी ने कहा, ''नीति कमजोर और असंगत प्रतीत होती है तथा इसमें दीर्घकालीन सोच का अभाव है। एक ऐसे क्षेत्र में, जहाँ कभी भारत को एक गैर-पक्षपाती और सम्मानित आवाज के रूप में देखा जाता है था। वहाँ आज हम वॉशिंगटन की राह पर चलने वाले द्वितीयक खिलाड़ी रहे हैं।''

ईरान-इज़रायल तनाव के जवाब में भारत की चुप्पी और पहल की कमी, विशेष रूप से हताहत नागरिकों की बढ़ती संख्या और क्षेत्रीय अस्थिरता के बीच, ने उसकी नैतिक और कूटनीतिक छवि को और नुकसान पहुँचाया है। पहले के समय में, नई दिल्ली को वैश्विक संघर्षों पर अपने सैद्धांतिक रूख और बाहरी दबावों के बावजूद, शांति व कूटनीति की वकालत करते रहने के लिए जाना जाता था। वह विरासत अब मुरझाती दिख रही है।

प्रधानमंत्री मोदी की हालिया कैनडा यात्रा, जहाँ उन्होंने जी7 शिखर सम्मेलन में भाग लिया, भी आलोचना का विषय बनी। कूटनीतिक हलकों में माना जा रहा है कि इस यात्रा से भारत को, विशेष रूप से ऊर्जा सुरक्षा और संघर्ष समाधान के मामलों में, कोई ठोस लाभ नहीं मिला। इसी बीच, अमेरिका के पूर्व राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप द्वारा दक्षिण एशिया के मामलों में मध्यस्थता का बार-बार किये जाने वाला दुराग्रह भी भारत के रणनीतिक हलकों में नाराज़गी का कारण बना हुआ है, जिसे कुछ लोग क्षेत्रीय नेतृत्व में भारत की भूमिका की उपेक्षा करने की कोशिश मान रहे हैं।

जैसे-जैसे ईरान-इराक संघर्ष गहराता जा रहा है, भारत की नीतिगत पंगुता तथा कमज़ोरी, उसे ऊर्जा, तथा व्यापारिक हितों के साथ-साथ, अंतर्राष्ट्रीय मंच पर उसकी स्वतंत्र, संप्रभु आवाज की छवि को भी काफी नुकसान पहुँचा सकता है।

ग्राम विकास ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

अनियमितता के आरोप में गत 24 अप्रैल को विकास अधिकारी ने अपीलार्थी के खिलाफ काम की लागत राशि की रिकवरी निकाल दी। इसे चुनौती देते हुए कहा गया की रिकवरी आदेश जारी करने से पहले न तो अपीलार्थी को नोटिस दिया और ना ही उसे सुनवाई का मौका ही मिला। यह प्राकृतिक न्याय के प्रावधानों की अवहेलना है।

अपील में आगे कहा गया कि गांव में विकास कार्य 12 साल पहले करवाए गए थे, जिनकी यूसी और सीसी भी जमा करवा दी थी। निर्माण कार्य के लिए करीब 10 लाख रुपए मंजूर किए थे, लेकिन काम केवल 5 लाख रुपए में हुआ और इतनी ही राशि का भुगतान किया गया था। जबकि रिकवरी राशि की गणना 10 लाख रुपए के आधार पर निकाली गई है। ऐसे में रिकवरी आदेश को रद्द किया जाए।

मामले की सुनवाई करते हुए अधिकरण ने रिकवरी आदेश पर रोक लगाते हुए संबंधित अधिकारियों से जवाब तलब किया है।

'यूपी में सपा के साथ मिलकर विधानसभा चुनाव लड़ेगी कांग्रेस'

उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय ने यह भी कहा कि पंचायत चुनाव कांग्रेस अपने बल पर लड़ेगी

इटावा, 21 जून। उत्तर प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष अजय राय ने कहा है कि कांग्रेस पार्टी 2026 का पंचायत का चुनाव उत्तर प्रदेश में अपने बलबूते पर लड़ेगी लेकिन 2027 विधानसभा का चुनाव समाजवादी पार्टी व कांग्रेस मिलकर लड़ेंगी और उत्तर प्रदेश में सरकार बनाने का भी काम करेगी।

इटावा जिले के बसरेहर में कांग्रेस पार्टी के सम्मेलन को संबोधित करने के बाद कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष अजय राय पत्रकारों से बात करते हुए कहा कि मथुरा कॉरिडोर के नाम पर मथुरा की आत्मा को योगी सरकार नष्ट करने में जुटी हुई है, बेशक मथुरा से भाजपा की संसद मथुरा कॉरिडोर की तारीफ कर रही हो लेकिन उनको कुंज गलियों की ऐतिहासिकता के बारे में कुछ भी नहीं पता है। कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष ने इटावा के बसरेहर ब्लॉक में कार्यकर्ताओं के बीच पहुंचकर पार्टी की नीतियों और रणनीति को लेकर बड़ा संदेश दिया। उन्होंने कहा कि कांग्रेस का कार्यकर्ता गांव-गांव जा करके मेहनत कर रहा हे और जनता से जुड़ रहा है। राय ने कहा कि पंचायत चुनाव कांग्रेस पार्टी पूरी ताकत से मैदान में उतरेगी और जो प्रत्याशी जीतकर आएंगे, उन्हें 2027 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस का टिकट दिया जाएगा।

■ **अजय राय ने कहा कि कांग्रेस संगठन चुनावों को लेकर बेहद गंभीर है। उन्होंने दावा किया कांग्रेस के सदस्यता अभियान को भारी समर्थन मिल रहा है।**

उन्होंने कहा कि कांग्रेस पार्टी बेशक पंचायत का चुनाव अपने बल बूते पर लड़े लेकिन 2027 का चुनाव समाजवादी पार्टी के साथ मिलकर ही चुनाव लड़ेगी और उत्तर प्रदेश में सरकार बनाने का काम करेंगे।

राय कहा कि यह चुनाव पूरी तरह से कार्यकर्ताओं का है और कांग्रेस का संगठन इसे बहुत गंभीरता से ले रहा है।

उन्होंने दावा किया कि कांग्रेस से बड़ी संख्या में लोग जुड़ रहे हैं और सदस्यता अभियान को भारी समर्थन मिल रहा है।

उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी पर तीखा हमला बोलते हुए कहा कि मोदी ने बनारस में कॉरिडोर बनाकर धार्मिक आस्था के नाम पर कारोबार खडा कर दिया, मॉल बना दिया और अब वृंदावन को भी उसी दिशा में ले जा रहे हैं। उन्होंने चेताया कि मथुरा, वृंदावन की ऐतिहासिक कुंज गलियां अगर नष्ट हो गईं तो वहां की पहचान मिट जाएगी।

मथुरा की सांसद हेमा मालिनी पर भी निशाना साधते हुए कहा कि वह कभी कुंज गलियों गई ही नहीं हैं, इसलिए उन्हें वहां की सच्चाई का कोई ज्ञान नहीं है। उन्होंने कहा कि वृंदावन की आत्मा को नष्ट किया जा रहा है और हेमा मालिनी इस बार चुनाव में नौ-दो ग्यारह हो जाएंगी। कौशांबी में हुई घटना का जिक्र करते हुए राय ने कहा कि वहां पीड़ित पक्ष को डराया-धमकाया गया। उन्हें धमकी दी गई कि अगर उन्होंने कांग्रेस नेताओं से संपर्क किया तो उनके बेटों को जेल भेज दिया जाएगा।

पुलिस बदले की ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

रखा था। दोनों नेताओं को हिरासत में लेते देख कुछ छात्र कैंपस में हंगामा करने लगे। हालांकि पुलिस की गाड़ी के पहुंचने के बाद मामला शांत हो गया।

घटना के बाद विधायक अभिमन्यु पूनिया, मुकेश भाकर, राम निवास गावाड़िया, पूर्व विधायक इंद्राज गुर्जर, अनिल चौपड़ा शनिवार दोपहर पुलिस कमिश्नरेट पहुंचे। यहां कमिश्नर बीजू जॉर्ज जोसफ से मिलकर कार्रवाई को गलत बताया। उधर डीसीपी ईस्ट ने कहा कि अभिमन्यु पूनिया को पुलिस ने हिरासत में नहीं लिया है। वो निर्मल चौधरी के साथ खुद ही गाड़ी में जबरन घुस गए। पुलिस उपायुक्त जयपुर पूर्व तेजस्विनी गौतम ने बताया कि निर्मल चौधरी के खिलाफ साल 2022 में राजकार्य में बाधा डालने का मुकदमा दर्ज था। इसमें अपराध प्रमाणित पाए जाने पर उनके खिलाफ पुलिस को एक्शन लेना था, आज पुलिस ने उन्हें डिटेन कर लिया है। कुछ देर में उनके खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। विधायक अभिमन्यु पूनिया को पुलिस लेकर नहीं आई है। वह खुद निर्मल को बचाने के कारण गाड़ी में बैठ गए थे। गांधी नगर थाने से विधायक अपने आवास पर चले गए थे। विधायक अभिमन्यु पूनिया ने कहा कि ''राजस्थान यूनिवर्सिटी के एग्ज़ाम हॉल से छात्र नेता निर्मल चौधरी और मुझे पुलिस वालों ने ऐसे पकड़ा जैसे हम अपराधी हों। मुझे छोड़ दिया, निर्मल अभी भी पुलिस हिरासत में हैं। सिविल वर्दी में आए पुलिस वालों का बर्ताव गुंडागर्दी वाला था। वर्ष 2022 के मामले में गिरफ्तारी की क्या जरूरत थी? कल सरकार के साथ बातचीत में यह तय हुआ था कि डॉ. राकेश विश्नोई को न्याय दिलाने के आंदोलन में रास्ता रोकने सहित किसी मामले में कोई केस दर्ज नहीं किया जाएगा। बातचीत के 12 घंटे बाद ही मुझे और निर्मल चौधरी को गिरफ्तार कर लिया गया। हम पुलिस कमिश्नर से मिलेंगे। इस तरह का बर्ताव गलत है। यह साफ तौर पर वादाखिलाफी है।'' अभिमन्यु पूनिया ने कहा कि छात्र पर इस तरह से पुलिस की कार्रवाई गलत है। गलत तरीके से निर्मल को गिरफ्तार किया गया है। पहले के मामले में इस तरह का एक्शन लेना सही नहीं, वो भी तब जब छात्र परीक्षा देने गया हुआ हो। पुलिस के एक्शन से क्लास में भी हड़कंप मच गया था।

चुनाव ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

आयोग के लिए मतदाताओं की निजता की रक्षा करना और मतदान की गोपनीयता बनाये रखना कानूनी बाध्यता है और आयोग इसके लिए प्रतिबद्ध है। इसलिए मतदान केंद्र की वीडिया फुटेज किसी व्यक्ति, उम्मीदवार या गैर सरकारी संगठन और तीसरे पक्ष को मतदाताओं की स्पष्ट सहमति के बिना नहीं दी जा सकती है।

अमेरिका में जनभावना ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उनके काफी संदेह है, विशेषकर मध्य पूर्व में, जहां सैन्य हस्तक्षेप के परिणाम अक्सर अस्थिर और अनिश्चित रहे हैं। वर्ष 2021 में अफगानिस्तान से आनन-फानन में अमेरिकी सैन्य वापसी इस सोच का एक निर्णायक मोड़ बन गया, जिससे यह धारणा मजबूत हुई कि अमेरिकी हस्तक्षेप अक्सर लंबे और उद्देश्यहीन संघर्षों में बदल जाता है।

इस सर्वेक्षण का विश्लेषण दोनों दलों की हिचकिचाहट को दर्शाता है। परंपरागत रूप से अधिक आक्रामक माने जाने वाले रिपब्लिकन भी अब इस क्षेत्र में एक और युद्ध को लेकर हिचकिचाहट जता रहे हैं, विशेषकर ईरान जैसे देश के खिलाफ, जिसके पास असममित सैन्य क्षमताएं और पूरे मध्य पूर्व में फैले प्रॉक्सी आतंकी संगठन हैं। डेमोक्रेट्स और निर्दलीयों में तो यह विरोध और भी प्रबल है, जहाँ मानवीय नुकसान, वित्तीय बोझ और क्षेत्रीय या वैश्विक युद्ध की आशंका प्रमुख कारण हैं। इस व्यापक विरोध के पीछे कई कारण हैं। पहला, अमेरिकी जनता का फोकस इस समय घरेलू मुद्दों, जैसे आर्थिक अनिश्चितता, स्वास्थ्य सेवा, मुद्रास्फीति और सीमा सुरक्षा पर है, जिन्हें वे किसी विदेशी युद्ध की तुलना में अधिक प्राथमिकता देते हैं। दूसरा, अमेरिकी लोगों की जान की कीमत पर इज़रायल की रक्षा करने की सार्वजनिक इच्छा बहुत कम है, खासकर जब इज़रायल के पास स्वयं की अत्याधुनिक सैन्य और वायु-रक्षा क्षमताएं मौजूद हैं।

इसके अलावा, सैन्य हस्तक्षेप की प्रभावशीलता को लेकर भी बढ़ रही शंका है। ईरान के व्यापक प्रॉक्सी नेटवर्क, जैसे लेबनान में हिज़्बुल्ला, इराक में शिया मिलिशिया, और यमन में हाउथी विद्रोही, का मतलब है कि किसी भी अमेरिकी कार्रवाई से यह संघर्ष कई मोर्चों वाला युद्ध बन सकता है। बहुत से अमेरिकी आशंका जताते हैं कि इससे अमेरिका एक और लंबे युद्ध में फंस सकता है, जिसे जितना नामुमकिन है, जैसा कि वियतनाम या 9/11 के बाद हुआ।

जनमत में यह बदलाव पीढ़ियों के बीच अंतर को भी दर्शाता है। विशेष रूप से जनरेशन ज़ैड और इक्कीसवीं सदी में जन्मे योग युद्ध, विरोधी रुख के सबसे बड़े प्रतिनिधि हैं। वे अक्सर सैन्य, औद्योगिक तंत्र की आलोचना करते हैं और कूटनीति तथा संघर्ष की रोकथाम को प्राथमिकता देते हैं। इनके विचार सोशल मीडिया से ज्यादा प्रभावित है, जिनमें कई प्रकार के कथानक चलते हैं, जैसे अमेरिकन विदेश नीति की आलोचना और युद्ध से पीड़ित लोगों के प्रति सहानुभूति।

हालाँकि अमेरिका ने इज़रायल की सुरक्षा के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई है और अपने नौसैनिक बेड़े को इस क्षेत्र में तैनात किया है, लेकिन उसने अब तक सीधे सैन्य दखल से परहेज़ किया है। वॉशिंगटन ने इसके बजाय कूटनीतिक स्तर पर तनाव कम करने पर ध्यान केंद्रित किया है, ईरान को रोकने के लिए सहयोगियों के साथ काम करते हुए, इज़रायल पर संयम बरतने का दबाव डाला है। यह ताजा सर्वेक्षण केवल एक विशिष्ट संघर्ष के प्रति विरोध नहीं दर्शाता, बल्कि यह संकेत देता है कि अमेरिकी जनता अब वैश्विक सैन्य मामलों में अपने देश की भूमिका को नए सिरे से देख रही है। संदेश स्पष्ट है: युद्ध से ऊब चुकी और घरेलू पुनर्निर्माण पर केंद्रित अमेरिकी जनता अब मध्य पूर्व में एक लम्बे सैन्य संघर्ष में फंसने की बजाय शांति चाहती है।

मुख्यमंत्री भजनलाल...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

उन्होंने कहा कि सीमा सुरक्षा बल के जांबाज़ हर तरह की परिस्थितियों में अडिग रहकर दिन-रात हमारी सीमाओं की रक्षा में तत्पर रहते हैं। सीमाओं की सुरक्षा के साथ ही कानून व्यवस्था, अपराध की रोकथाम, सामाजिक समरसता बनाए रखने और आपदा प्रबंधन में बीएसएफ के जांबाज़ हर मोर्चे पर मुस्तैदी से डटे रहते हैं। मुख्यमंत्री ने मां तनोट राय मंदिर परिसर में सीमा सुरक्षा बल के जवानों के साथ संवाद भी किया। उन्होंने बीएसएफ के जवानों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हमारे वीर जवानों ने ऑपरेशन सिंदूर के माध्यम से दुश्मन के छक्के छुड़ाकर हम सबको गौरवान्वित किया है। बीएसएफ और सेना ने ऑपरेशन सिंदूर में दुनिया के सामने बहादुरी का एक अद्वितीय उदाहरण पेश किया है। इस अवसर पर विधायक छोटू सिंह भाटी, संभागीय आयुक्त डॉ. प्रतिभा सिंह, जोधपुर रेंज आई.जी. विकास कुमार, सीमा सुरक्षा बल राजस्थान फ्रंटियर के महानिरीक्षक एम.एल.गर्ग, उप महानिरीक्षक सेक्टर नॉर्थ वाई.एस.राठौड़, पूर्व विधायक शैतानसिंह राठौड़, समाजसेवी नखतसिंह भाटी, कंवराजसिंह चौहान सहित विभिन्न जनप्रतिनिधि, अधिकारी एवं बीएसएफ के जवान उपस्थित थे।

नीरज चोपड़ा ने ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इससे पहले नीरज ने मई में दोहा डायमंड लीग में 90.23 मीटर का थ्रो कर न केवल अपने करियर की सर्वश्रेष्ठ दूरी फेंकी थी, बल्कि भारतीय राष्ट्रीय रिकॉर्ड भी तोड़ा था। हालांकि उस प्रतियोगिता में जूलियन वेबर ने 91.06 मीटर का व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ थ्रो कर उन्हें दूसरे स्थान पर धकेल दिया था।

'ईरान, भारत का पुराना ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

इज़रायली-फिलिस्तीनी शांति प्रयासों को बड़ा झटका लगा।

इस पृष्ठभूमि में, यह आश्चर्य की बात नहीं है कि नेतन्याहू वार्ता पर टकराव को तरजीह देंगे। लेकिन जो बात सबसे ज्यादा अफ़सोसजनक है, वह है अमेरिकी राष्ट्रपति डॉनल्ड ट्रंप का व्यवहार, उन्होंने कभी अमेरिका के अनेकों युद्धों में लिप्त होने और सैन्य-औद्योगिक गठजोड़ की आलोचना की थी। पर अब वही इस विनाशकारी राह पर चलते दिख रहे हैं। वे खुद कई बार यह स्वीकार कर चुके हैं कि इराक के पास सामूहिक विनाश के हथियार होने के झूठे दावों के कारण एक विनाशकारी युद्ध शुरू हुआ, जिससे पूरा क्षेत्र अस्थिर हो गया।

सोनिया गांधी ने कहा कि इसलिए 17 जून को ट्रंप द्वारा अपनी ही खुफिया प्रमुख की रिपोर्ट को नकारते हुए यह दावा करना कि ईरान ''परमाणु हथियार प्राप्त करने के बहुत करीब'' है, अत्यंत निराशाजनक है। दुनिया को ऐसे नेतृत्व की आवश्यकता है जो तथ्यों पर आधारित हो, कूटनीति से प्रेरित हो, न कि ताकत और झूठ पर चले।

सोनिया ने कहा, क्षेत्र के जटिल इतिहास को देखते हुए, परमाणु-सशस्त्र ईरान को लेकर इज़रायल की सुरक्षा चिंताओं को पूरी तरह खारिज नहीं किया जा सकता। लेकिन, दोहरी नीतियों की कोई जगह नहीं हो सकती। इज़रायल स्वयं एक परमाणु हथियार संपन्न देश है और उसका अपने पड़ोसियों के खिलाफ आक्रामक सैन्य कार्यवाहियों का लंबा इतिहास रहा है।

सोनिया गांधी ने कहा कि इसके विपरीत ईरान परमाणु अप्रसार संधि (एनपीटी) का हस्ताक्षरकर्ता है और 2015 में हुए संयुक्त समग्र कार्य योजना के तहत उसने यूरेनियम संवर्धन पर सख्त सीमाएं स्वीकार की थीं, बदले में उसे प्रतिबंधों में राहत मिली थी। इस समझौते को संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के पाँच स्थायी सदस्य, जर्मनी और यूरोपीय संघ का समर्थन प्राप्त था, और अंतरराष्ट्रीय पर्यवेक्षकों ने इसकी पुष्टि भी की थी, जब तक कि अमेरिका ने 2018 में इसे एकतरफा रूप से छोड़ नहीं दिया। उस निर्णय ने वर्षों की मेहनत से बनी कूटनीतिक प्रक्रिया को नष्ट कर दिया और क्षेत्र की नाज़ुक स्थिरता पर एक बार फिर संकट खड़ा कर दिया। भारत ने भी इस कूटनीतिक विघटन का असर सहा। ईरान पर दोबारा लगाए गए प्रतिबंधों ने भारत की रणनीतिक और आर्थिक परियोजनाओं को गंभीर रूप से प्रभावित किया है, जिनमें इन्टरनैशनल नॉर्थ साउथ ट्रांसपोर्ट कॉरिडोर और चाबहार बंदरगाह का विकास शामिल है, जो मध्य एशिया से संपर्क और अफगानिस्तान तक सीधी पहुँच का बड़ा अवसर प्रदान करते हैं।

ईरान भारत का एक पुराना और भरोसेमंद मित्र रहा है, जो हमारे साथ गहरे सभ्यतागत संबंधों से बंधा है। ईरान ने हमेशा भारत का साथ दिया है, विशेष रूप से जम्मू-कश्मीर के मुद्दे पर। वर्ष 1994 में, ईरान ने संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार आयोग में भारत के खिलाफ प्रस्ताव को रोकने में मदद की थी। वास्तव में, ईरानी इस्लामी गणराज्य, अपने पूर्ववर्ती शाही शासन की तुलना में, जो 1965 और 1971 के युद्धों में पाकिस्तान की ओर झुका हुआ था, भारत के प्रति अधिक सहयोगी रहा है।

इसी बीच, भारत और इज़राइल ने भी हाल के दशकों में रणनीतिक संबंध विकसित किए हैं। इस अनोखी स्थिति में भारत की नैतिक जिम्मेदारी और कूटनीतिक क्षमता दोनों हैं कि वह शांति और तनाव-निवारण के लिए पुल का काम करे। यह केवल एक सैद्धांतिक बात नहीं है, लाखों भारतीय नागरिक पश्चिम एशिया में रहते और काम करते हैं, जिससे इस क्षेत्र में शांति भारत के लिए एक महत्वपूर्ण राष्ट्रीय हित का मसला बन जाता है।

राष्ट्रदूत (एचयूएफ) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा राष्ट्रदूत प्रेस, जी1/63 इंडस्ट्रीयल एरिया फेस प्रथम, जालौर, (राज.) से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादक-राजेश शर्मा, आर.एन.आई. नं. RAJHIN/2006/17286 जयपुर कार्यालय: सुधर्मा एम.आई.रोड, जयपुर। फोन: 2372634, 4103333-34, फैक्स : 0141-2373513, कोटा कार्यालय : पलायथा हाऊस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोन: 2386031, 2386032,फैक्स:0744-2386033, बीकानेर कार्यालय : कुम्भाना हाऊस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोन: 2200660, फैक्स 0151-2527371, उदयपुर कार्यालय: आयड मैन रोड आयड, उदयपुर। फोन: 2413092, फैक्स : 0294-2410146, अजमेर कार्यालय: राष्ट्रदूत भवन, चुंगी नाका के पास, अजमेर। फोन: 2627612, फैक्स:0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोन226422,226423, फैक्स: 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोन: 230200, 230400, फैक्स: 07469-230600 चूरू कार्यालय : एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोन : 256906, 256907, फैक्स: 01562-256908